॥ श्रीः ॥

यतोधर्मस्ततोजयः

ज्योतिषचमत्कारकी—

भूमिका

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणेनमः

अहा हा! ज्योतिष कैसी अद्भुत विद्या है कि जिसके प्रभाव से ऋषि मुनि लोग तीनो कालों की बातों को जानते थे और उनसे संसारकी कोई भी बात छिपी नहीं रहती थी। महात्मा वाल्मीकिजीने श्रीरामचन्द्रजी के जन्मसे भी पहिले रामायण लिखडाला था। महात्मा गर्ग ऋषिने भगवान् श्रीकृष्णजी के जन्म लेतेही बतला दिया था कि यह साक्षात् भगवान् हैं और कंसको मारेंगे कौन ऐसा नास्तिक होगा कि जो हिन्दू होकर इन ऋषि मुनियों के इस ज्योतिष को झूठा कहै? मैं कोई नमाजी समाजी नहीं हूं, सनातनधर्मका मानने वाला वैष्णव (हरिभक्त) हूं। ज्योतिष के आचार्य भृगु, पाराशर, गर्ग आदिऋषीश्वरों के चरणों की धूलि का एक कणभी मेरे शिर में लगजाता तो मेरेजन्म जन्मान्तर का उद्धार होजाता। मैंने किसी लोभ या बड़ाई की इच्छा से यह काम नहीं किया, उसी हरिकी इच्छा हुई कि हिन्दुस्तान

में देव तुल्य भूत भविष्य के जानने वाले ऋषीश्वर जन्म लेवें और विद्या फैलावें । उसी हरिकी इच्छासे सब विद्याओं का लोप होगया और अन्धकार छागया। यहांतो हम अपने घमण्ड में रहे कि हम विद्या के समुद्र हैं, उधर से यवन लोगों ने आकर अपना भ्रमजाल फैलाया । सोना चाँदी आप लेगये, यवन ज्योतिष हमैं देगये । उस अन्धकार में हमने पीतल को सोना समझा और विषको अमृत समझा । सारी पृथ्वी कहती है कि हम महामूर्ख हैं, पर हम समझे हुवे हैं कि हिन्दुस्तान विद्या की खानहै । हमारीसी बुद्धि और लोगोंको कहां से मिलेगी। हां अंग्रेजों का भाग्य भला है, भाग्य से राज कररहे हैं, पर बुद्धि तो हमारे ही पास है। "रस्सी जलगई पर ऐंठ न गई" भोजन विना नित्य एकादशी होरही है, पर फिरभी यह न मानेंगे कि हमारी बुद्धिका खोट है, बुद्धिका क्या दोष है, भाग्य बुरा है । लो आपही की जीत रही, आपही का कहना सच्चा । अब हिन्दुस्तान का भाग्य अच्छा होने लगा है, हरि इच्छा हुई कि अब अन्धकारका नाशहो और हमलोग भी नपुंसकोंके समान दैव दैव ही न करा करें, कुछ उद्यम भी करें । उसी हरिने जिसकी इच्छा से यह सबकुछ हुवा मेरेमन में यह प्रेरणा की कि यवनों ने जो कुछ भ्रमजाल फैलाया है, उसकी भली भांति खोज करके एक पुस्तक लिखो, जिससे हमारे देशका उपकारहो । मेरी क्या शक्ति थी कि जो पुस्तक लिखता, पर हरिकी इच्छा ।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥

हरि चाहै तो गूंगे कथा सुनावैं, लंगड़े लूले पहाड़ पर चढैं। ऋषि मुनियों के सत्य ज्योतिष के विपरीत तो मैं एक शब्द नहीं लिखूंगा यह नास्तिकता मुझसे न हो सकेगी। हां यवनों ने जो २ बातैं ऋषियों के नामसे चलाईहैं, आपको दरसा दूंगा, यह आपका अधिकार रहा, आप मानैं या न मानैं। एकबार इस पुस्तक को मन लगाकर पूरी पढलीजिये, फिर चाहो जो करो। मेरेज्योतिष के विचारसे आपके बुरेदिन पूरे होगये खोटे दिन आपके शत्रुओंके आयेयादिआप यह न मानें वा यह कहना आपको बुरा लगै तो न सही, मेरा ऐसा कहने में क्या बिगड़ता है॥

ज्योतिष दो प्रकार काहै, एक सत्य ज्योतिष, दूसरा यवन ज्योतिष। इस पुस्तक में जो १ बातैं ज्योतिषकी सच्ची हैं, उनका भी वर्णन होगा और जो यवनों ने मिलाई हैं, वेभी दिखलादी जावेंगी। इस पुस्तक के प्रकाशित होतेही सत्य ज्योतिष पर पाखण्ड का पर्दा पड़ा हुआहै,वह उठजायगा और ज्योतिष का सच्चा स्वरूप हिन्दुस्थानियों सेभी छिपा न रहेगा। जो इस पुस्तक को ध्यान देकर पढैगा, हरिउसके खोटे दिन शीघ्र हरेगा, बल, वीर्य और पौरुष उसका बढेगा। हजार कन्यादान का उसको फल होगा। दुःख दारिद्रय का नाश होगा। यह पुस्तक सनातन धर्म फैलाने के लियेहै नास्तिकता का नाश और आस्तिकता का मार्ग दिखलाने के लियेहै। कृपाकरके एकवार पूरी पढ़ लीजिये फिर अपने ही मन की कीजिये। इस पुस्तक से मेरा निजका कोई लाभनहीं केवल परमार्थ समझ कर मैं इसे लिखता हूं और हरि के अर्पण करताहूं।

इस पुस्तक के अन्त में महामहोपाध्याय श्रीमान् पण्डित सुधाकर द्विवेदीजी महाराज की चिट्ठी है उसे भी मन लगाकर पढ़ियेगा । आप हमारे देश के भूषण हैं और इस समय सारे भारतवर्ष के ज्योतिष की गद्दी आप ही की है और आपका पञ्चाङ्ग विख्यात है । मैं तो कोई भी वस्तु नहीं, यदि आप सुधाकर द्विवेदी जी महाराज से और बापूदेव शास्त्रीजी से भी अपनी बुद्धि को अधिक समझते हों तो कृपाकरके अपनी अमूल्य बुद्धि को घरसे बाहर न निकलने दीजियेगा, कहीं कपूर के समान उड़ न जाय । तब तो अनर्थ होजायगा ॥

ओम् नमोभगवतेबासुदेवाय ॥

॥ श्रीः ॥

ज्योतिषचमत्कार

पहिला अध्याय

विवाह की समता.

मैं ऐसे विषय में कुछ लिखना चाहता हूं, जिसका नाम सुनते ही यूरोप के लोग हंस पड़ें। परन्तु यह एक ऐसा विषय है, जोकि हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों के सुख दुःख का कारण है। आकाश के तारों में केवल हिन्दू लोगों का ही विश्वास न था, मुसलमान, चीनी और यूरोपवासी भी यही समझे हुवे थे कि ये तारे मनुष्योंके भाग्य और दौर्भाग्य के कारण हैं। यूरोपसे यह विश्वास उड़ गया क्योंकि वहां वालों ने ज्योतिष की पूरी खोजकी और इसे निष्फल जानकर छोड़ दिया, परन्तु हिन्दुओं ने यह बड़ी भारी भूल की कि सब विषयों को धर्मशास्त्र में घुसेड़ दिया, आयुर्वेद, धनुर्वेद, कामशास्त्र, ज्योतिःशास्त्र इत्यादि। ऐसी कोई भी विद्या नहीं है जो किसी न किसी वेद अथवा शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध न हो। फलित ज्योतिष को यूरोप से धक्के खाकर हिन्दुस्तान की शरण लेनी पड़ी और जबतक यह धर्मशास्त्र के नाम से माना जायगा, हिन्दुस्तान से हठ नहीं सकता।

इस पुस्तक में केवल यवनज्योतिष का ही वर्णन नहीं है, किन्तु इसमें यह भी दिखाया गया है कि कौन २ कारणों से और किस २ दशामें मनुष्य की बुद्धि बढती

है वा क्षीण होजाती है, यह विषय तो अवश्य पढने योग्यहै

इतिहास जानने वाले लिखते हैं कि हिन्दू लोग और यूरोप देशवासी पहिले पहिल मध्यएशिया में साथ ही रहतेथे, अबतक यूरोप की भाषा संस्कृत से कुछ २ मिलती है। हम लोग पूर्व की ओर चलें वे पश्चिम को चले। दोनों की सभ्यता प्रतिदिन बढनेलगी। हिन्दुस्तान के आर्यों ने यहांतक उन्नति की कि यूरोप के लोग भौंचक रहगये। ठीक है सब ही पदार्थ गर्मदेश में शीघ्र ही पकजाते हैं। नवीं और दसवीं सदी में यह उन्नति एकाएक रुकगई और बुद्धि क्षीण होनेलगी। इसका कारण हम पीछे बतलावेंगे। अब तो हमारे यूरोपदेशीय भाइयों की उन्नति के दिन आये, इनकी सभ्यता की तो अब सीमा ही न रही, ये लोग अब इतने परिश्रमी, उद्योगी और आलस्य रहित हैं, जितने कि हम लोग आलस्य और निद्रा से भरेहुवे और पौरुष हीनहैं और दैवही दैव कहाकरते हैं। डेढ़सौ वर्ष अंग्रेजोंके राज्य को होगया, पर तौभी हमारा वही ढंग है, जो पहिले से था। न्यूजीलैंड के मेओरी लोग बदलगये। जापानियों की उन्नति को सुनकर सारी पृथ्वी चकित सी होगई है। इसमें कोईभी सन्देह नहीं कि यह सब बदलाव यूरोपीय शिक्षाही के कारण हुवा। इस यूरोपीय शिक्षा की शक्ति हमारे लिये कहांगई ?

ऐसा जान पड़ता है कि हमलोग कभी बदलही नहीं सकते, हजारों वर्ष मुसलमानोंका राज्य, रहा, तलवार भी हमारी गर्दनोंपर चलती रही, अंग्रेज आदि इन्होंने भी बड़े २ यत्न किये, तौभी हमारी वही अटल दशा

बनी हुई है। ऐसा विचित्र देश कोईभी नहीं जहांके लोग इतने बदलावों परभी अपनी पुरानी ही चालपर रहेहों, इसका कोई भेद अवश्य होगा और हमें उसकी खोज करनी चाहिये।

यूरोप में मनुष्यों के दो समूहहैं, बड़े और छोटे अथवा धनी और निर्धन। छोटे लोगोंके पास जब कुछभी धन होनेलगा या रूपवती वा बुद्धिमती लड़की हुई तो धनी लोग चटपट विवाह करके उनका धन रूप बुद्धि, बल और पौरुष खींच लेतेहैं और जो धनी क्षीण होते आये तो छोटे लोगोंमें जा मिले। इस प्रकार बड़े लोग नित्य उन्नति करते रहे और छोटे लोगोंके धन, रूप, बल, बीर्यका लाभ उठाते रहे। वहां दोही जाति हैं, बड़े और छोटे लोग। सब यही चाहते हैं, कि हम बड़े कहलायेजांय। जन्मभर सब लोग यही यत्न करते हैं कि हम बड़ेलोगों में गिनेजांय, छोटे न होने पावें। वहां का विवाह स्वयम्बर है, जो मनुष्य बढ़सकै तो चाहे लखपतिकी लड़कीसे विवाह करले। सौ रुपये वाले हजार रुपये वालेकी ओर देखते हैं, हजार वाले लखपतिकी लड़की से विवाह करना चाहते हैं, लखपति करोड़पति की ओर देखता है। इसी देखा देखी से सब लोग सुधरते जाते हैं और सारा देश उन्नति करता जाता है। हिरसा हिरसी से जो उन्नति होती है, वह पृथ्वी भर में किसी दूसरी रीति से नहीं होसकती। डारविन साहबने यह सिद्धकर दिया है कि क्या मनुष्योंमें और क्या जीव जन्तुओं में परस्पर श्रेष्ठ होनेकी चेष्टा बनी रहती है। जो सबसे योग्य होते हैं, वेही बचते हैं और निकम्मे २ नाश को प्राप्त होते हैं। पृथ्वीमें बलवान् और

योग्यही जीतता है, दुर्बल योंही गलजाता है, कुछदिन जीता रहा तो क्या हुवा इस नियम का पूरा २ लाभ यूरोपीय उठारहे हैं।

इस प्रकार बहुतेरे लोग अपने उद्यमसे बड़ेही धन-वान् होगये और स्वार्थी होनेलगे। धनका स्वभाव ही है कि स्वार्थी बनादेता है। धनीको और लोगों का प्रेम बहुत कम होताहै।हमारे दूरदर्शी ऋषीश्वरोंने इस बुराई को मिटानेकी बहुत चेष्टाकी। पुराणों में लिखा है कि ऋषीश्वरोंने राजकन्याओंके साथ विवाह किया। कर्दम ऋषिका देवहूति राजकन्यासे विवाह हुवा। सौभरि, विश्रवा,जमदग्नि,च्यवन इत्यादि बहुतेरे निर्धन तपस्वि-योंका विवाह राजकन्याओंसे हुवा। राजाययातिकी स्त्री देवयानी ब्राह्मण कन्याथी। रामायणमें लिखाहै कि श्रवण-ऋषि की स्त्री शूद्रजाति की थी। इसप्रकार ऐश्वर्य और दारिद्र्य आपस में बंटता रहा। परन्तु स्वार्थ तो और ही वस्तु है, यह नियम बहुत न चलसका। धनी लोग निर्धनों से सम्बन्ध करने में सङ्कोच (खिचावट) करने लगे, धनी तो यही समझता है कि निर्धन उसकी सेवा के लिये जन्म लेता है और निर्धनका यही कर्तव्य है कि धनी की सेवा करै चाहै धनी उसका कितना ही अनादर क्यों न करै। हमारे विद्वानों ने यह दशा देखकर सोचा कि कोई ऐसा यत्न कीजिये जिस से धनी निर्धन का आपसमें भाईचारा रहे,धनी निर्धन का अपमान न करै, रूपवान् कुरूप से घिन न करै। सब लोग बराबर रहैं, कोई बहुत धनवान् न होने पावै। स्वार्थ का नाश हो और सब साथ ही उन्नति करैं। बहुत शीघ्र चलनेवाला मन्द चलनेवाले के लिये रुकजाय और दोनों साथ चलैं।

यह कैसे होसक्ताथा? यही उपाय निकला कि विवाह में साम्य अर्थात् समता करलीजावै, लखपति की लड़की दरिद्र ब्याहसके और दरिद्र की लड़की लखपति के चली-जाय, जिस में धनी निर्धन का अपमान न करै, रूपवान् कुरूपा से न घिनावै। अहा हा !! क्या ही अद्भुत बुद्धि का यह खेल था। इसी बुद्धि का प्रताप है कि हमारे हिन्दुस्तान में आजतक धन से कोई बड़ा छोटा नहीं गिनाजाता। भतीजा लखपति भी होजाय तो भोजन के समय अपने निर्धन चचों से नीचे ही बैठेगा, और भी ब्याह काजों के समय मनुष्य धन के अनुसार ऊपर नहीं बैठते। जेठा ऊपर बैठता है, छोटा नीचे। यह मर्यादा अबतक हमारे हिन्दुस्तान में चली आती है, किसी और देश में यह मर्यादा नहीं है।

धनी से निर्धन और रूपवान् से कुरूप की समता किसप्रकार करसक्ते थे? उन्हीं दिनों यहां यवन ज्योतिष चला था। २७ नक्षत्र और १२ राशि हैं, कोई किसी नक्षत्र में जन्मा कोई किसी में। इसप्रकार मनुष्यमण्डली २७ प्रकार की हुई, अथवा १२ प्रकार की हुई। इन २७ समूहों में ज्योतिषियों ने यह लिखदिया कि इस समूह का विवाह इस समूहवाले से न होगा, बस यही साम्य है।

पर लोग इस आज्ञा को क्यों मानें, इसलिये ज्योतिषियोंने फिर यहलिखा कि जो इस आज्ञा के विपरीत ब्याह करै वह मरजाय वा उसके घरमें और कोई मरजाय। मैं हरिवंशकी अथवा गङ्गाजलीकी शपथ खाकर कहता हूं कि यह बात ठीक निकली, वे लोग अथवा उनके घरके और कोई लोग अवश्य ही मरगये, पर ज्यो-

तिषियोंने एक बात गुप्त रक्खी। अर्थात् जिन्होंने इस नियम के अनुसार भी विवाह किया, वेभी मरगये। ज्योतिष में यह तो कहीं भी नहीं लिखा है कि नाडीवेध या षडाष्टक में जो विवाह करै वह इतने समय के भीतर मरजाय। केवल यही लिखा है कि वह मरजायगा, वह एक दिन में मरे चाहे सौवर्ष पीछे मरे, पर मरैगा वह अवश्य ही। इसप्रकार यह नियम पुष्ट होगया।

हम लोगों की आपस में समता और बड़े छोटे की मर्यादा इसी नियम से बनी है। यह हमारा ही देश है कि दरिद्र होनेमें कोई लाज नहीं। कैसा ही दरिद्र क्यों न हो अकड़के चलेगा और अपने कृतसम्बन्ध धनी की लड़की की जन्मपत्री मांगलावेगा। विलायतमें तो निर्धनता से घिन होती है और निर्धन लोग मुंह दिखाने में लजाते हैं। १४–१९ वर्ष की अवस्था तक हिन्दू अपने को ऐसा स्वतन्त्र समझता है, मानो अमेरिका के स्वतन्त्र देश में जन्म लिया है। यह वही स्वतन्त्रता है, जिसको देखकर सिकन्दर मोहित होगया। जब वह पुरू राजाको जीतकर बांधचुका तो उससे पूछा कि मैं तेरेसाथ कैसे मिलूं तो हमारे राजाने उत्तर दिया कि जैसे महाराज महाराजाओं से मिलते हैं। ८०० वर्ष मुसलमानों का राज्य रहा और हम दबेरहे, फिर भी हमैं यह साहस हुआ कि लार्डकर्जनके विपरीत अनुमति प्रकाश की।

इस समता से बड़ा ही आनन्द मिला, रुपये कमाने की चिन्ता दूर गई। जब चिन्ता न रही तो उद्यम का नाश हुवा। उद्यम गया तो बल वीर्य और साहस भी

न रहा। उद्यम करने से क्या लाभ होता है? तुम्हारा भाग्य अच्छा होगा तो लखपति की बेटी से साम्य होजायगा। बैठेबिठाये मौज उडाओगे। भाग्यहीन हुवे तो खेती करोगे, बैल मरेंगे, सूखा पडेगा। जोआलसी हुवे वे तो रातदिन दैव दैव कहते रहे, जो उद्यमी थे वे रातदिन ज्योतिषियों की खोज में दौड़ते रहे और उनके घर जन्मपत्रों से भर दिये।

अमेरिका देश में कलम करते २. एक कल्मी नारंगी पैदा कीगईहै जिसमें एक भी बीज नहीं। इसी प्रकार स्त्री पुरुष में जो परस्पर प्रेम होताहै, उस स्वाभाविक प्रेम का नाश होगया। यों तो जिससे विवाह होगया, उससे कुछ न कुछ प्रेम हो ही जाता है, पर जो प्रेम दुष्यन्त और शकुन्तला को विवाह से पहिले हुवा, उस प्रकार के स्वाभाविक प्रेमका तो नाश ही होगया। इस से भी एक बडा लाभ हुवा। विलायत में इसी प्रेम के-कारण कितनी भले घरों की लड़कियां जोगन होगई हैं और कितने लडकों ने अपने प्राण देदिये हैं वा घर से निकल गये हैं, हमतो इससे बचे। सब ही प्रकार हम लोगों को सन्तोष बढा और सन्तोष ही आनन्द है।

धन्यरे बुद्धिमानो! कैसी अद्भुत बुद्धि आपकी थी। जिस समता के लिये यूरोपीय लोग अब बीसवीं सदी में तरसते हैं, आपने हमें छठी और सातवीं सदी में दिखादी और आपकी बुद्धि से बडा ही सन्तोष और आनन्द हमने पाया। परन्तु यह आनन्द वैसा ही निकला जैसा अफयून और भंग खाने से होता है। हमारे आपस में फूट होती रही और नित्य नये २ समाज वा

जाति वा अल्ल बनती रहीं । हरएक अल्ल वाला समझता है कि जो कुछ है, मेरी ही अल्ल है । इसे ब्रह्माजी ने विशेष रीति से बनाया और लोग तो कमीने हैं । इसप्रकार ढाई घरिये, नौघरिये, चौसेनी , बारहसेनी आदि हजारों टुकडे बनगये और बनते जाते हैं । कहां तो सब लोगों की समता और बराबरी के लियेसाम्य बनाया गया अब उल्टा फल होरहाहै कि दिन प्रतिदिन समूहों के टुकड़े होते जाते हैं और नई २ अल्ल बनती जाती हैं ॥

अब बड़ी घोर विपत्तिका समय पहुँचाहै, बहुतेरे लोगों में तो लड़की का व्याह होना महाकठिन कार्य होगयाहै, लडके ही नहीं मिलते, साम्य तो किनारे रहा, आपही ज्योतिष का नाश हुवा । घोर कष्ट और आपत्ति का सामना पडरहा है,आपकी लडकियों का वलिदान होरहाहै, पर आप उनके आंसू नहीं पोंछ सकते । आप इसको विचार करके देखें कि क्या दशा हो रही है ?

समता को फैलाने के लिये साम्य चलायागया पर यहां उल्टी विषमता फैल रही है यहांतक कि लड़की के लिये १-३ जन्मपत्रियां भी कठिनता से मिलती हैं, यदि उनसे साम्य न हुवा तो बस फिर मौतहै । इसी विपत्ति को देखकर मैंने ज्योतिष की खोज की है और मैं आशा करता हूं कि जिनके घर लड़की हैं, वे इस पुस्तक को एकवार अवश्य पढेंगे, नहीं तो लड़की का शाप उन्हें लगेगा ॥

दूसरा अध्याय।

वंशका निर्वंश।

विवाह कैसे होता है ? लड़के और लड़कियों की जन्मपत्री धरी रहती हैं, विवाह के समय ये पत्रियां मिलाई जाती हैं, जैसा कि हम आगे वर्णन करेंगे, जिनकी पत्री मिलगई उन्हींका ब्याह होसक्ता है। ब्याह क्या हुआ एक प्रकारकी चिट्टी (पुर्जी) डाली गई। कोई कोमलाङ्गी सुरूपा लड़की किसी काले भूतके नाम आगई, लड़की और उसके मा बाप अपने भाग्य की निन्दा करने लगे, पर दुलहा पण्डितजी की बड़ाई करने लगा और सबलोग उसे बड़भागी कहनेलगे। कोई कुरूपा किसी स्वरूपवान् लड़के के नाम आई और थोड़े दिनों में उसके मा बाप चिन्तासे मरगये कि हमारे लालको क्याहोगया, किसी बातमें उसकामन नहींलगता इस लड़की के ग्रह खोटे होंगे, चलो कोई अच्छी लड़की ढूंढलैं, जिससे हमारे लालजू प्रसन्न रहैं। इन दोलड़कियों में सौतियाडाहहुआ और उनमें से एकजादूगरकी खोज में गई। आजकल बीसवीं सदी में जादूके बापका क्या चलता है, अफीम खाकर सोरही, दूसरे दिन गांव वालोंने जाना कि अतिसारसे मरगई।

एक भले मानस ने बड़े प्रेमसे अपनी लड़की पाली, उसे अंग्रेजी जूते और कपड़े पहनाये और उसको पढ़ाने के लिये पण्डित रक्खे। जब उसके ब्याह का समय आया, पहिले तो लड़के न मिले, जो कोईमिले तो ज्यो-

तिषीजीने कहदिया कि विधि नहीं मिलती । तबतो उसकी आंखें खुलीं कि मुझे अपनी लड़कीके ब्याहका कुछभी अधिकार नहीं । किसी बुद्धिहीन गधेसे भी विधि मिलजाय तो वहीं ब्याह करना पड़े । तबतो ये घबडा उठे और अपने एक मित्रसे कहने लगे कि मेरी लडकी मरजाती तो कैसा अच्छा होता, यह कथा नहीं है, सच्ची बात है, कहोतो मैं उस भलेमानसका नाम बताऊँ॥

हाय अँधेर!! जिस प्यारी लड़कीको हम बड़े लाडसे पालें और प्राणसमझें आज हम उसीका मरना चाहते हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी भूत या बनमानस के साथ ब्याह होने से लड़की का मरना भला। बस आप जान सकते हैं कि हमलोग क्या उन्नति करेंगे, जब हमारे हृदय में ऐसे शूल चुभे हुवे हैं, तोहमें धनसेक्या प्रसन्नताहै? और उद्यमसेक्याफलहै?

आप यह कहेंगे कि सबलोग तो यवनज्योतिष नहीं मानते। यह ठीकहै, पर विलायत के बड़े २ विद्वानों ने यह सिद्ध कियाहै कि नीच लोग बढ़ते जाते हैं। आज जो छोटे कहलातेहैं समय के हेर फेर से वेही बढजातेहैं, शूद्र क्षत्रिय होतेजातेहैं, बहुतेरे हीन वर्णके ब्राह्मण बनगयेहैं। जो कोई बढ़गया और भला मानस कहलाने लगा तो ज्योतिष उसको माननापड़ा जो घटगया और नीचजातिमें जामिला, उसके बाप दादोंने ज्योतिष मान रक्खाथा इस लिये ज्योतिष का प्रभाव सब लोगोंपर कुछ न कुछ चला आताहै। ईश्वरने विवाह वह वस्तु बनाईहै जिससे मनुष्य की पूरी उन्नति हो और उसको अपने सब गुण और पुरु-षार्थ दिखानेका अवसर मिले। इसी विवाह के कारण

यूरोपीय लोग इस उन्नति को पहुँचेहैं और हमारे राजा हैं। इसीके कारण हमारी यह गतिहै और हमें उन्नति का कोईभी अवसर नहीं मिलता। हिन्दूलोग चाहे अपने उद्यमसे लखपति होजायं पर उनकी यह सामर्थ नहीं कि भली स्त्री वा लडकी के लिये भला वर लेआवैं। यह सब कुण्डली की विधि पर है, आपका कोई अधिकार नहीं। बस उन्होंने समझ लिया कि अपने उद्योग से कुछभी नहीं होता, जो करते हैं, ग्रह करते हैं। समझ लो कि पौरुषहीन होनेका बीज बोया गयाहै, जो ध्यान मा बापों का होता है, वही उनके बालकों काभी होता है। इसी रीति से पुश्तहा पुश्ततक दैव दैव कहते गये। लोगोंने उद्यमको निष्फल समझा और भाग्य और किस्मत को पूजने लगे।

मैं यह नहीं कहता कि यूरोप की विवाह रीति सर्वथा निर्दोषहै वा उन लोगों में कोई दुःखी नहीं है। उन लोगों का व्याह उन्हीं की भूलसे बिगडता है उन्हें यहतो सन्तोष है कि देखभाल तो करली थी, भूल हो गई, पर हिन्दुओंको तो आंख खोलनेका भी अवसर नहीं मिला जो कुछ अपने नाम चिट्ठी (पुर्जी) में आया, उसी में सन्तोष करना पडा। किसी २ के नाम अच्छी पुर्जी भी आई, पर पुर्जी के भरोसे कौन जाति धनाढ्य हुई और किसने उन्नति की। यूरोप के लोग बडी बडी कठिन बातों को सोचते रहे, इससे उनकी बुद्धि बढगई, हमलोग इसी कृत्रिम आनन्द में रहे और हमारी बुद्धि को काई लगगई, हममें और यूरोप के लोगों में इतना ही भेद है।

धनी और निर्धन की समता करादेना बड़ी भारी बात

थी, इससे हमलोग बड़े भोले और सीधे होगये। पर यह भोलापन कबतक चल सकता था। ज्योतिषी लोगों ने यह न जाना कि हिन्दुस्तान में मुसलमान और अंग्रेज़ भी आवेंगे। यदि ये लोग हिन्दुस्तान को न जीतते तो हमारा भोला और सीधापन न जाने कबतक चलता। परन्तु अंग्रेज़ों के आनेसे हमारी आंखें खुलगईं और पर्दा पलट गया। हम देखते हैं कि हममें उनके बराबर बल पौरुष नहीं है और हम उनकी बराबरी नहीं कर सकते, हम उनसे, बहुत पीछे रहगये। तब यह जान पड़ा कि हमारी उन्नति रुकगई है और ज्योतिष के प्रताप से हमने जो आनन्द किये वे गांजा और चरस पीने से भी होसके थे मनुष्य जन्मभर भोला नहीं रहेगा। अब समय आपहुंचा कि हम इस बात की खोज करें कि हम क्यों पीछे रहगये और हमारी उन्नति कैसे रुकी? जब यवनज्योतिष चला था तब हिन्दुस्तान की दशा और थी। हमी हम थे, किसी प्रकार की चिन्ता न थी। इस लिये उन दिनों विशेष हानि नहीं हुई। अब हमें अंग्रेजो के साथ चलना है पीछे रह जायेंगे तो वे ठट्ठाकरेंगे।

यूरोपीय विद्वानों का मत है कि स्वतंत्र जीव बहुत बढते हैं और बन्धन में पडे हुवे घटते जाते हैं और एक दिन उनका लोप होजाता है। जो लोग मूर्खताके बन्धन में पड़े हुवे हैं, वे दिन प्रति दिन घटते जाते हैं, मथुरा के चौबे लोगों को देखो। अब यह थोडे ही रहगये हैं और इनका व्याह ऐसा कठिन होगया है कि जो लडकी देता है, पहिले ही लेख पढ करालेता है कि बदले में अपने कुटुम्बकी कोई लड़की देनी पडेगी। बिना बदले के व्याह

ही नहीं होता। बडी कठिनता से कोई लडकी मिली और यदि उस का जन्मपत्र मिलाने लगे तो व्याह हो चुका, जन्मभर कुंवारा रहना पडा। इसलिये इन्होंने ज्योतिष को यमुनाजी में डुबोदिया, न डुबाते तो वंश का निर्वंश होता। मैथिल ब्राह्मण अर्थात् ओझा लोगों ने भी ज्योतिष को अलग करादिया, ज्योतिष देखकर चलते तो कभीके निर्वंश होजाते। शरहीन खत्रियोंमें अब मौसेरे भाई बहनों का विवाह होजाता है, चलो निर्वंश होने से तो यही अच्छा हुवा, ज्योतिष देखैं तो जन्मभर कुंवारे रहैं।

इस छोटीसी पुस्तक में कहांतक लोगों के नाम लिखे जांय, मैंने अपनी आंखों से यह देखा है कि, कितने ही घराने निर्वंश होगये हैं और होतेजाते हैं। हमारे आगरा अवध के राज्य में सन् १८९१ की मनुष्यगणना में ४७१९८८२ ब्राह्मण थे, सन् १९०१ में केवल४७०६३३२ रहे। इन दस वर्षों में कितने ही हीनवर्णवाले भी ब्राह्मण बने होंगे तौभी कमी रही। सन् १९०१ की मनुष्यगणना (मर्दुमशुमारी) की पुस्तक के ६३ पत्र में लिखा है:-

"हिन्दुओं की संख्या प्रति दस हज़ार मनुष्य १८८१ ई० में ८६२७ थी, १८९१ में ८६०९ हुई और १९०१ ई० ८९१२ रही। मुसल्मान १८८१ में १३४३ थे, १८९१ में १३५३ हुवे और १९०१ में १४१२ हुवे। मुसल्मान हिन्दुओंकी अपेक्षा शीघ्रही बढ़ते हैं। १८९१ की रिपोर्ट में लिखाहै कि मुसल्मान अधिक जन्म लेतेहैं और दीर्घायु होते हैं। मुसल्मानोंके लडकोंकी और बूढ़ोंकी संख्या बहुत अधिक है, इससे यही सिद्धहुवा। और यह सिद्ध

नहीं होता कि हिन्दू मुसल्मान होते जातेहैं ।

बंगालकी १८९१ ई० की रिपोर्ट में भी हिन्दुओं के घटने का कुछ वर्णन है । आगरा व अवधके राज्य में १९०१ तक महामारी कमथी, अब हिन्दुओंकी संख्या औरभी घटगी । इसी कारण यूरोपके लोग कहतेहैं कि पूर्वके लोग मररहे हैंऔर पीछे इनका लोप होजायगा। इन दसवर्षोंमें ब्राह्मण और घटे। हिन्दू प्रति सैकडा पौन(.७७)बढे अर्थात्१ से कम।मुसल्मान ८प्रति सैकडा,जर्मनीके लोग १६ प्रति सैकडा बढे ।

यह देखागया है कि दरिद्रतामें अधिक सन्तान होते हैं, धनवान् के कम होतेहैं । हिन्दुस्तान में जन्मतो बहुत लेते हैं, पर मरजाते हैं, यूरोप में मरते कम हैं, जन्मभी कम लेते हैं, अन्तमें वेही लोग बढ़तेहैं । यूरोप में जबतक भलीभांति कमानेवाला न होजाय,कोईभी ब्याह नहीं करता, क्योंकि दारिद्रय में सन्तान होनेसे दोनोंको कष्ट होताहै और दरिद्र सन्तति अधमरी जैसी किसी काम की नहीं होती । इन्हीके होनेसे अकाल दुर्भिक्ष इत्यादि विपत्ति होती हैं। जोमनुष्य लडके बालोंको भलीभांति खिला पिला और पढ़ा नहीं सकता, उसे विवाह कदापि न करना चाहिये। दरिद्र सन्तति से न होना अच्छा ।

पर हिन्दूलोग तो सन्तति के लिये मरे जाते हैं, हमारे भागवत में लिखा है कि प्रह्लादभक्तजी ने ईश्वर से कहाकि आप सर्वशक्तिमान् हैं,सबलोगों को मुक्ति देदो। ईश्वरने कहा, प्रह्लाद ! मुक्ति कोईभी नहीं चाहता । प्रह्लाद गये और एक शूकरी देखी जो १२ बच्चोंके साथ विष्ठामें लोटतीथी । प्रह्लादने उससे कहा कि

स्वर्ग को चल, उसने कहा यह सुख और आनन्द स्वर्गमें कहां। पोतेका मुंह देखलूं तो स्वर्ग यहीं होजाय, चाहे पोता भूखसे मरे। यदि यूरोपके लोगभी ऐसाही सोचते तो पृथ्वीमें हमारे लिये अङ्गुल भरभी स्थान न रहता। फिरभी हिन्दू घटरहे हैं और अपनी चाल को न सुधारेंगे तो इनके लोप होनेमें कोईभी संदेह नहींहै।

अब दिन प्रतिदिन सैकड़ों लोग जाति बाहर होरहे हैं, नई २ जाति बन रहीं हैं। ज्योतिष के अनुसार लड़की का ब्याह लड़कपन में होना चाहिये। ६ पुश्त तक नातेदारी में ब्याह नहीं होसकते। बहुतेरे लोगों में कृतसम्बन्ध इतने कम रहगये हैं कि एक लड़की के लिये ३ वा ४ वर बड़ी कठिनता से मिलते हैं, ज्योतिषी कह देते हैं कि इनकी विधि नहीं मिलती पर लड़की का ब्याह तो अवश्य होना है, कोई ६० वर्ष का बूढा ज्योतिषीजीकी मूठ गरम कर सकै तो लड़की उसी के सिर मारदी जाय। ज्यों ज्यों लड़की बड़ी होती जाती है, वह शत्रुरूप समझी जातीहै, जो कुल को कलङ्क लगावेगी। उसके ग्रहों को दोष लगाया जाता है कि किसी से विधि नहीं खाते और वह मरजावै तो अहोभाग्य। मैंने बहुतसी लड़कियां देखी हैं जिनको नमक नहीं दियाजाताथा औरखानेको कमामिलताथा, जिस में वे रजस्वला न होनेपावैं। बहुत लड़कों के इसी कारण दो तीन ब्याह होते हैं। जब भारी विपत्ति पड़ेगी तो ये लोग लड़कियोंको कुंवारी ही रक्खेंगे, जैसे कान्यकुब्ज ब्राह्मण रखते हैं। उनमें ४०। ५०। ६० वर्षकी भी कुंवारी लड़कियां होती हैं। इस समय तो यह दशा है कि जब

किसीकी स्त्री बीमार हुई तो उस मनुष्यकी जन्मपत्री मांगकर अपनी लड़कीकी पत्रीसे बिधि मिलाने लगजाते हैं और कितनी लड़कियों को पूरा खाना नहीं मिलता, जिससे कोई यह न कहै कि इतनी सयानी लड़की कुंवारी क्यों धरी है । लड़कीको ब्याहना नहीं कहते, फेंकना कहते हैं । जब यही दशा रही तो इनलोगों के लोप होने में क्यादेरी है ? ज्योतिष क्या होगया, गङ्गदत्त सांप होगया । एक मेंडक गङ्गदत्त नाम सांप को बुला लेगया कि सुख पूर्वक सोऊंगा, शत्रुओं का डर न रहेगा । शत्रुओंका डर तो अवश्य गया, पर जब और मेंडक न रहे तो गङ्गदत्त उसीको निगल गया, धनी निर्धन की समता करने और सबको आनन्द और सन्तोष में मग्न करनेको तो यवनज्योतिष आया, पर यह तो समूल नाश किये देता है, वंशका निर्वंश होता दीखता है । कैसी लज्जाकी बात है कि इस अद्भुत ज्योतिषकी आप खोज न करैं कि यह क्या शास्त्र है और कहां से आया ॥

तीसरा अध्याय।

भाग्य।

भाग्यहीन खेती करै, बैल मरै सूखा पड़े।

पहिले दो अध्यायों में मैंने यह वर्णन किया है कि यवनज्योतिष ही हिंदुस्तान निवासियों की मूर्खता का मूल है, इसी से हमलोग दैव दैव कहाकरते हैं, पौरुष को नहीं मानते। यह ज्योतिष क्या वस्तु है? यदि यह कोई सच्ची विद्या है तो क्यों इसका पूरा २ आदर नहीं होता। यदि यह केवल ठगपना है तो क्यों सैकड़ों वर्षों से हिन्दुस्तान में प्रचलित है। ठगपना तो बहुत वर्षों तक नहीं रहसकता, क्योंकि झूठ के पैर नहीं होते। हिन्दुस्तान में विद्या की दिनप्रतिदिन उन्नति होरही है। हम लोगों की सभ्यता बहुत ही पुरानी है और यह सम्भव नहीं है कि हम लोग योंही ठगेजांय। प्रतिवर्ष हज़ारों बी. ए. ऐम. ऐ. पास होते जाते हैं, प्रोफेसर बोस साहब का नाम यूरोप में विख्यात है, और भी बहुतेरे भारतनिवासी न्याय, मिमांसा, गणित इत्यादि विद्याओं के आचार्य होगये हैं। इस दशा में भी ज्योतिष ही हम लोगों के घरों के सब कामों में मानाजाता है।

यह ज्योतिष क्या है? मैंने किसी अंग्रेजी समाचार-पत्र में पढाथा कि जो लोग मई के महीने में पैदा होते हैं, वे लम्बे और दीर्घायु होते हैं। इसी प्रकार सब महीनों का फल लिखा हुवा था। यह फल विलायत के विद्वानों ने हजारों मनुष्यों को जो कि भिन्न २ महीनों में पैदा हुये, देखकर लिखा होगा।

महीनोंके बदले यदि दो १ घंटों में जो मनुष्य पैदा हों, उनकी दशाओंको देखकर यदि कोई पुस्तक लिखीजावै तो यही यवनज्योतिष है।

धन्य! उन लोगोंकी बुद्धि को जिन्होंने इतनी भारी खोज की, खोज करना बड़ी प्रशंसा की बात है, यदि उस खोज को धर्म में न मिलादेते तो कुछभी हानि न होने पाती, इस खोज का कारण लक्ष्मी की चञ्चलवृत्ति है। कोई कहते हैं कि लक्ष्मी अन्धी है, बैठे बिठाये किसी के नाम घुडदौड की बाज़ी में पांचलाख रुपये आजाते हैं। कोई पढ़ैं फ़ारसी और बेचैं तेल। पृथ्वी में सब लोग औरों को अपने से अधिक भाग्यवान् समझते हैं, पर आप अपने को औरों से अधिक योग्य समझते हैं। देवदत्त कहता है कि यज्ञदत्त तो गधा है, पर भाग्यशाली है, देखो उसकी कैसी प्रशंसा होरही है, न काम जाने, न करै, प्रतिवर्ष उसकी वृद्धि होती जाती है। यज्ञदत्त कहता है कि देवदत्त तो बड़ा कुरूप है, उसे ऐसी सुन्दर स्त्री कैसे मिली होगी। आप ही आप आइने में मुंह देख कर मूंछे चढाने लगता है, भाई संसार योंही चलता है। यदि सब मनुष्य अपने से औरों को अधिक योग्य समझने लगैं और अपने को औरों से अधिक भाग्यवान् समझनेलगैं तो संसार एक दिन न चले।

बहुत लोग तो ऐसे भाग्यशाली होते हैं कि मिट्टी में हाथ मारैं तो सोना निकले। ऐसे भी मनुष्य हैं जो खेत जोतने लगैं तो बैल मरे और सूखापडे। ऐसे दरिद्रों की तो लोग छूत समझने लगते हैं। जैसे हैजे और महामारी के कीड़े होते हैं, ऐसे ही दरिद्र के भी कीड़े होते होंगे,

जो छूते ही चिपटजावें। सचहै "दारिद्र्यदोषो गुणराशि-नाशी" अर्थात् एक दरिद्रतादोष सब गुण समूहों को नाश करदेता है।

यूरोप के लोग इसे अन्धी लक्ष्मी कहते हैं। हमारे पुराणों में लिखा है कि विष्णु की दो स्त्रियां हैं, लक्ष्मी और सरस्वती। इन में सौतियाडाह है। जो सरस्वती का प्रिय हो, लक्ष्मी उसे बहुत प्यार नहीं करती। इस लिये गुणवान् बहुधा धनी नहीं होता। जब विभीषण रोगी हुवा तो राक्षसलोग रामेश्वरमन्दिर से किसी ब्राह्मण को लेगये। उसने विभीषण को अच्छा किया। विभीषण ने प्रसन्न होकर कहा कि इसको अमूल्य धन देदो। लङ्का तो सोने की थी, वहां अमूल्य धन लोहा निकला। पांचसेर लोहा पण्डितजी के पल्ले बांध दियागया। जब ब्राह्मणी के सामने इन्होंने अपनी कमाई रक्खी तो दोनों ने अपने सिरों में हाथ रक्खे और चुप होरहे।

मुसल्मान इसे किस्मत कहते हैं, परन्तु वेभी इसका ठीक कारण नहीं बतला सकते कि क्यों ईश्वर किसी को भाग्यवान् बनाता है और किसीको भाग्यहीन? इसमें ईश्वरकी न्यायशीलता में बट्टालगता है। परन्तु हिन्दू लोग कहते हैं कि भाग्य और दुर्भाग्य पहिले जन्मके कर्मफल से होता है। जो जैसा बोवेगा वैसा ही पावेगा। मनुष्य के जन्म के समय जो ग्रहोंकी दशा होती है, उसके पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार होती है, इस पुस्तक में यह विचार किया जायगा कि ग्रहों की स्थिति पूर्वजन्मके कर्मोंकी सूचक होसक्तीहै या नहीं? यदि नहीं होती तो इतने वर्षोंतक यह भ्रमजाल कैसे चलगया॥

चौथा अध्याय।

गणित और फलितज्योतिषकी उत्पत्ति।

बड़ेही आश्चर्यकी बात है कि पश्चिमीय (यूरोप)और पूर्वीय (हिन्दुस्तान) के आर्योंने पारस पत्थर और फलित ज्योतिषकी बहुतही खोज की। सौना तो न बन सका, परन्तु रसायनविद्या (कैमिस्ट्री) हाथ आगई। इसी प्रकार तारोंकी गति और मनुष्यके भाग्य और दुर्भाग्य का विचार करते २ गणित ज्योतिष की खोज हुई। चीनके इतिहास से जानपड़ता है कि वहांके लोगोंने गणित और फलित विद्याओं को सीखने के लिये बहुत कुछ उद्योग किया। चीनमें आकाश मण्डल को २८ भागों में बांटा है, जिसे राशिचक्र कहते हैं। यह उन्होंने महाराजा याओ के समय सीखलिया था, जिन्होंने ईसूमसीह से २३१७ वर्ष पहिले राज्य किया था। उसी समय से चीनियों का वर्ष ३६५ दिन ६ घंटे का होता है। एक और महाराज चीन में हुये, जिन्होंने गणित की सब पुस्तकें जलादीं।

संस्कृत में गणित का सब से पुराना ग्रन्थ ज्योतिष है, जिसे लगेढ ने बनाया। इस में आकाशमण्डल को २७ नक्षत्रों में बांटा है। यही पुस्तक षष्ठाङ्ग अर्थात् वेद का छठा अङ्ग कहलाती है। फिर नारदीय और गर्गसंहिता बनी हैं। कर्नसाहिब अनुमान करते हैं कि ये संहिता ईसूमसीह से १० वर्ष पहिले बनी होंगी।

बहुतेरे यूरोपीय विद्वानों का यह मत है कि ये नक्षत्र हिन्दुओंने चीनवालोंसे या यूनानियोंसे लिये होंगे, क्योंकि चीनका वर्ष चारहजार वर्षोंसे अखण्ड चला

आताहै। हिन्दुओं को तो तीन २ बर्षमें अधिकमास(मलमास) जोड घटाकर बहुत कुछ गडबड करनी पडती है। मेरी समझमें यह तो कोईभी ठीक प्रमाण नहीं है। नक्षत्रोंके नाम और अर्थसे यह जानपडताहै कि ये संस्कृतही में बने होंगे और भाषाओं से नहीं लियेगये। और भाषाओंमें इनके लिये ठीक २ शब्द भी नहीं मिलते। चीनके २८ भागोंमें केवल १७ नक्षत्र मिलते हैं। इससे यहतो प्रत्यक्ष है कि हिन्दुओंने नक्षत्रों को अपनी ही खोजसे पाया।

हिन्दुओंके पञ्चाङ्ग में घटबढ लगी रहतीहै, इससे यह कभी सिद्ध नहीं होसकता कि उन्होंने अपने गणित को और लोगों से लिया होगा। हिन्दू पञ्चाङ्ग केवल देवकार्य (तेवहार) इत्यादि के लिये ही बनता है; चान्द्रमान को सौरमार से मिलाने में घट बढ़ अवश्य ही होगी। हिन्दुओंने अपने आदिग्रन्थों में चान्द्रमान ही लिया है। पुराने ग्रन्थों में फलित का कहीं भी वर्णन नहीं है, हां नक्षत्रों के नाम वेद और ब्राह्मण में हैं। राशियों के नाम रामायण और महाभारत में भी हैं। गणितज्योतिष ही आदि ज्योतिष है। पीछे से इन्हीं २७ नक्षत्रों में से किसी को शुभ और किन्हीं को अशुभ माननेलगे, पर इस से कोई फल नहीं मिला।

पश्चिम के लोग भी इस बीच गणित की बड़ी खोज में लगे हुवे थे। सन् ३०ई० में मिस्र देश में टालमीसाहब अद्भुत गणितज्योतिषी हुवे। यूनान में अरस्तू, हिपार्कस इत्यादि हुवे। रूम में पिथागोरस हुवे, जो हिन्दुस्तान में भी आये। सन् ईसवी से ११० वर्ष पहिले सिल्यूकस

यूनानी ने चन्द्रगुप्त राजा को अपनी लड़की दी और दहेज में काबुल नदी की ओर का राज्य दिया । ६० वर्ष पीछे वहां यूनानी वैकट्रिया का राज्य स्थापित हुवा । एक समय इनका बल इतना बढ़गया कि सारा अफ़गानिस्तान इन्हीं का होगया । पेशावर और कश्मीर में इन यूनानियों के अभी तक बहुत चिन्ह मिलते हैं । उस समय की अशर्फ़ियां मैंने देखी हैं । इन यूनानियों ने गणितज्योतिषकी बड़ी उन्नति की । सूर्यसिद्धान्त रोमकसिद्धान्त, वासिष्ठ सिद्धान्त, पौलिसासिद्धान्त, और पैतामससिद्धान्त इसी समयके बनेहुवे हैं । रोमक सिद्धान्त रूमवालोंकी विद्यासे निकला है । पौलिस सिद्धान्त सिकन्दर पौलिस यूनानीआचार्यके नामसे चला है । कर्नसाहिबका अनुमानहै कि ये पञ्चसिद्धान्त सन् २९० ई०के बनेहुवे हैं । इसमें कुछ संदेह नहीं है कि इन सिद्धान्तोंमें यूनानीगणित का बहुत कुछ अंशहै । इस समयके किसी ग्रन्थमेंभी फलितका नाम मात्र तक नहीं है । यूरोप और एशियाके सबलोग यह तो निश्चय किये हुवेथे कि तारेही मनुष्यके भाग्य और दुर्भाग्यके हेतु हैं । परन्तु जबतक तारोंकी गति ठीक न जानपड़े, फलितज्योतिष कैसे बनसकै ? पृथ्वीके सब सभ्यलोग तारोंकी गति खोजनेलगे । हिन्दुस्तानके वैकाट्रियाराज्य में सारी पृथ्वीके विद्वान् इकट्ठा होतेथे और तर्क किया करतेथे । हिन्दुओंने गणितकी बड़ीभारी उन्नतिकी । विलायतके हरशलसाहिबके गणितके अनुसार जो ग्रहों की गति भगण इत्यादि निकलते हैं, सूर्यसिद्धान्तसे बहुत कुछ मिलते हैं ।

पीछेसे आर्यभट्टने आर्यसिद्धान्त और वराहमिहिरने पञ्चसिद्धान्तिका और ब्रह्मसिद्धान्त रचे। ब्रह्मगुप्तने ब्रह्मसिद्धान्त लिखा जो सन् ६२८ ई० में पूराहुवा। भट्टोत्पलने वराहमिहिरके ग्रन्थोंकी टीका लिखी। गणेशने ग्रहलाघव बनाया और भास्कराचार्यने ११५० ई० में सिद्धान्तशिरोमणि बनाया। बस हमारे गणितकी इतिश्रीहुई, वैसेतो कुछ और भी ग्रन्थहैं, पर मुख्य येहीहैं।

गणितका आदर तभीहो जब राजा गणित जाने। बिलायतमें तो गणितज्योतिष जहाज चलानेके काम आताहै। यहां कोई भी अर्थ इससे नहीं निकलसकता। पुराने राजा गणितको जानतेथे, जब यहांके राजा क्षीण होते चले आये और गणितको न समझसके तबतो गणितवालोंको सूझनेलगी कि फलितविद्या सीखनी चाहिये।

फलित का नाम पहिले पहिल चीन और कलडिया देश के इतिहास में है। उन लोगों से मिस्रवालों ने इसे लिया और मिस्र से यूनानियों ने इसे सीखा और इस विद्या की खोज की। जब ये लोग बैकटिया राज्य में आये तो भोले भाले हिन्दू इस विद्या पर मोहित होगये। वराहमिहिर जो सन् ५०६ ई० में अवन्तिका देश के कपित्थ ग्राम में उत्पन्न हुवा, आदित्यदास नाम ब्राह्मण का लडका था। गणितज्योतिष पढ़कर और यूनानियों का यश सुनकर वह पश्चिम को गया। उस समय काबुल में हिन्दुओं का राज्य था, इसे कम्बोजदेश कहते थे। कभी तुर्की राजा होजाता था, कभी हिन्दू। जब चीन का प्रसिद्धयात्री ह्वानशाङ्ग ६३०-६४५ ई० में हिन्दुस्तान में आया, तो उसने काबुल में हिन्दू राजा

देखा और अपनी पुस्तक में इसका बर्णन लिखा। दसवीं सदी के अन्त में सिबुक्तगीन ने हिन्दूराजा को जीत लिया और तब से अफ़ग़ानिस्तान में मुसल्मानों का राज्य बनारहा। काबुल फलितज्योतिष के लिये प्रसिद्ध रहा और अबतक वहां फलितवाले बहुतायत से हैं। वैकटिया के यूनानी वैकटियाराज्य के नाश होने पर भी वहां जाया करते थे। वराहमिहिर ने काबुल में जाकर फलित सीखा और अवन्तिका आकर बृहज्जातक और लघुजातक रचे। बृहज्जातक से बड़ा और कोई जातक नहीं। कहा है-"जातकेषु बृहदेवजातकः"। इसके २८ वें अध्याय के ७ वें श्लोक में वराहमिहिर लिखते हैं:-

"पृथु विचरितमन्यैः शास्त्रमेतत्समस्तं
तदनुलघु मयेदं तत्प्रदेशार्थमेव"।

भट्टोत्पल इसकी टीका करते हैं कि "एतत् समस्तं सकलं शास्त्रं अन्यैः यवनेश्वरादिभिः पृथु विचरितम्" अर्थात् यह फलित यवनेश्वरों ने विस्तारपूर्वक लिखा है, वराहमिहरजी ने उसी को संक्षेपरीतिसे लिखा है॥

यहतो स्पष्टहै कि बृहज्जातकसे पुराना और कोई जातक नहीं, होता तो वराहजी उन ग्रन्थकर्त्ताओंका नाम लिखते। वराहजी से पीछे जो ग्रन्थकर्त्ता हुवे हैं, उन्हों ने अपने ग्रन्थों में "वराहमिहरादयः" स्पष्ट लिखदिया है। वराहमिहरजी को फलित का पिता (जन्मदाता) कहना चाहिये। इस में तो सन्देह नहीं कि दो चार बातें पहिले भी फलित की यवनों के मुंह से सुनी हुई प्रचलितथीं परन्तु फलित की पूरी खोज वराहजीने की और जातक का आदि ग्रन्थ लिखा। इस के पीछे शुक, मणित्थ, वादरायण, जै-

मिनि इत्यादि हुवे। नीलकण्ठजी ने फ़ारसी में ताजक बनाया और षट्पञ्चाशिका, पारसीविलास, यवनजातक, रमलशास्त्र, केरलसारावली और केशवी भड्डुली की पुस्तकें लिखीगईं।

मुझे वराहजी का लिखाहुवा एक पुराना ग्रन्थ मिलगयाहै, इसे वराहसंहिता कहतेहैं। इसी में कुछ जोड़कर उन्होंने बृहत्संहिता लिखीहै, इस पुस्तक के १०० अध्याय हैं। इसपुस्तकसे उससमयके लोगोंकी दशा भली भांति जानी जासकती है। कई अध्यायोंमें घोड़े, कुत्ते, मनुष्य, स्त्री, हीरा, मोती आदिकी परीक्षा हैं। एक अध्यायमें शकुन और अपशकुन लिखे हैं और वराहजी कहतेहैं कि हमने ये गार्गीशिखिचार पाराशर देवल आदिसे लियेहैं "गार्गीयं शिखिचारं पाराशरमसितदेवलकं च" बृहज्जातक में वराहजी केवल "अन्यैः" लिखते हैं। इससे स्पष्ट है कि कोई फलितजातक किसी हिन्दू आचार्यका बनाया हुवा उससमय तक नहीं था। यवनेश्वरोंका नाम संस्कृत श्लोकोंमें नहीं आसकताथा, इसलिये "अन्यैः" लिखादिया, भट्टोत्पलकी टीका से भी यही स्पष्ट है।

पहिले पहिल फलित का अनुमान ग्रहणों से हुआ। इस पुस्तक में लिखा है कि यदि सावन के महीने में ग्रहण हो तो काश्मीर, चीन, यवन इत्यादिकों का नाश होता है 'काश्मीरान् सपुलिन्दचीनयवनान्" और भी ग्रहणों का फल "काम्बोजचीनयवनान्" इत्यादि श्लोकों में है। चीन और यवनों के साथ ही साथ कईबार आने से मेरा यह अनुमान है कि फलित चीन ही से चला।

चीन के ज्योतिषी यह कहा करते थे कि हम जब चाहें, ग्रहण लगादें । अथवा आनेवाले ग्रहण को रोकदें । ऐसे ही कुमाऊं में ओलिये लोग हैं, जो कहा करते हैं कि हम में ओले बरसादेने अथवा रोकदेने की शक्ति है । जब कभी ग्रहण न लगा या ओले न बरसे तो वे कहदेते हैं कि हमने अपनी बुद्धि की शक्ति से रोकदिया । चीन और यवनों के नाम बार बार साथ आने से यह जान पडता है कि इसप्रकार का फलित चीन और यूनान से ही चला । जो विद्या जहां से चलती है बहुधा उसी देश का उस में वर्णन होता है । सावन के ग्रहण के पीछे इन देशों में कोई बडी विपत्ति आई होगी तो उसे देखकर यह फलित बना ।

एक और अध्याय में भूकम्प का फल (अर्थात् भूकम्प के होने से किसका भला और किसका बुरा होगा) लिखा है । एक अलग अध्याय इन्द्रधनुष के फलों के वर्णन में है । इन्द्रधनुष दिखलाई पड़ने से कौन २ लोगों को शुभ और किस२ को अशुभ है, इत्यादि । फलितविद्या यही है । अब तो एक बालक भी यह जानने लगगया है कि इन्द्रधनुष एक सामान्य वस्तु है, जो सूर्यकी किरणों की बादलों में परछाईं पडने से उत्पन्न होता है; और इस से किसी का भला वा बुरा नहीं होता । जब मनुष्य की बुद्धि बढ़गई तो इन्द्रधनुष छोड़कर ग्रहों से शुभ अशुभ का अनुमान करने लगे ।

फलितकी सब पुस्तकों में इन यवनों का बडा आदर कियागया है । यवनेश्वर, यवनाचार्य इत्यादि लिखा है " यवनाचार्यैः कथितम् , यवनेन कथितं महात्मना, या-

वनैः सम्प्रदिष्टाः, तथाह वृद्धयवनः ।" इत्यादि मैंने वृद्धयवनकी पुस्तक देखी है। इसके श्लोक किसी सामान्य मनुष्य के रचेहुवे से दीखते हैं । ये यवनाचार्य काबुल में हिन्दुओं के राज्य में रहते थे ।

ये यवन कौन थे?, मेरी समझमें इसमें कोई भी सन्देह नहीं होसक्ता कि ये बैकट्रिया राज्यके यूनानी थे। संस्कृतमें यूनानी भाषाको यवनानी कहते हैं। पतञ्जलिऋषिने अपनी पुस्तक में बैकट्रियाके राजा मीनाकण्ठकी जीतका वर्णन लिखा है कि यवनराजाने साकेतपुरी को घेरलिया। गर्गसंहिता में भी इन्हींका स्पष्ट वर्णन है । अशोकराजाके तेरहवें आज्ञापत्र में स्पष्ट खुदा हुवाहै कि अन्तिओखस यवनों का राजा था । इसमें कोई भी सन्देह नहीं है कि हिन्दुओंके फलित के गुरु येही यवन अर्थात् यूनानी थे। पीछे के ग्रन्थोंमें यवन सब पश्चिम से आनेवाले म्लेच्छों का नाम रक्खागया ।

इन यवनों के बहुत शब्द फलित में अबतकहैं । जैसे अनफा, सुनफा, इकबाल, इत्थसाल, बेशी, वोशी, काहिल, योग इत्यादि । फलित का ग्रन्थ ताजक फारसी से निकला है। फलितको छोडकर संस्कृत की कोई भी ऐसी विद्या नहीं है, जिसमें दूसरी भाषा के ऐसे कचेशब्द मिले हुवे हों। ऐसा जान पडता है कि अनफा, वोशी इत्यादि शब्द चीनी भाषासे यूनानीमें मिलगये हों और तब संस्कृत में आये हों, ऐसी बहुतेरी कथायें हैं कि जब कोई ज्योतिषी किसी दूसरे ज्योतिषी से परास्त होगये तो वे काबुल में यवनाचार्यके पास ज्योतिष पढने गये ।

अरब और फारस वाले भी इस बीच चुपचाप न थे। फारस में अलबूनजर के राज्य में सन् ७७६ से ८८९ ई० तक फलित में ही सब राजकाज और धर्म कर्म होते रहे। अरब का गणितज्योतिषी महम्मद विनजीवरसीरिया का राजकुमार जो ८५० ई० में हुवा और इब्नजूनिस जो १[illegible]०० सन् ई० में हुवा, बड़े विख्यात हैं। तैमूरलंग का पोता अलीबेग बड़ा नामी ज्योतिषी हुवा है, जिसने यूरोप में भी नाम पाया।

पाँचवां अध्याय।

यवनज्योतिष का प्रचार।

ज्योतिष की चर्चा अब यूरोप में फैली, आजतक लोग यही समझे हुवे थे कि पृथ्वी बीच में स्थिर है और सब ग्रह उसके चारोंओर घूमते हैं। कोपर्निकस साहब ने यूरोप में यह सिद्ध करादिया कि सूर्य बीच में है, और सब ग्रह और पृथ्वी उसकी परिक्रमा करते हैं। जब पृथ्वी को भी और ग्रहों के साथ नाचना पड़ा तो पृथ्वी भी और ग्रहोंके बराबर होगई और उनकी शक्तिका कुछभी प्रभाव न रहा। इसी बातपर यूरोप से फलित उठगया परन्तु इसका भ्रम बहुत दिनोंतक बनारहा। सन् १६३८ ई० में जब फ्रान्स का राजा लूई १६ वां उत्पन्न हुवा तो एक ज्योतिषी कुण्डली बनाने को पर्देकी ओट में बिठला दिया गया। नेपोलियन बोनापार्ट फलित को बहुत मानताथा और एक पुस्तकभी इसने बनाई। मिल्टन और शेक्शपियरकी पुस्तकों में भी फलित का कुछ विषय है। परन्तु ऐसे बुद्धिमानों के देशमें फलित कबतक ठहर सकता था, भागकर हिन्दुस्तान की शरण आया। हमारे भी जो आचार्य पृथ्वीको और ग्रहों के समान सूर्यकी परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह मानते रहे, वे फलित को झूठा समझते रहे। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, बापूदेव शास्त्री और महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी फलित को नहीं मानते। परन्तु लठमार पण्डितों से किसका क्या वश चलता है। वे यही कहते हैं और कहेंगे कि पृथ्वी स्थिर है और तारे उस के चारों ओर घूमते हैं।

जब यूनानी लोग काबुल छोडकर चलेगये तो पारस देशके लोग बहुतसे उन के चेले होगये। मेरे पास एक पुस्तक पारसीविलास है, जिसमें ऐसे श्लोक हैं:-

"यदा मर्ज़्ख़ाने भवेत् आफ़तावो ज़लीलैः ग़नी ख़ूबरूहम्ज वाचः"

फारसी और उर्दूकी भी पुस्तकें फलितकी हैं, जैसे:-

"मालखाने मुश्तरी। क़ब्ज़ करले मेदिनी। हफ्तखाने राहुवाशद"

भड्डुलीके उत्पन्न होने से भी फलितकी अच्छी उन्नति हुई। इन्होंने हिन्दी की पुस्तक शकुनावली लिखी है, जैसे:-

शुक्रवार की बादली, रही सनीचर छाय।
डंक कहै सुन भड्डली, बिन बरसे नहिंजाय॥
चैत में बरसे अष्टमी, जेठ में बरसे मूल।
डंक कहै सुन भड्डली, सावन बरसे धूल॥

भड्डुली की उत्पत्ति की बहुतसी कथायें हैं। ऐसा कहते हैं कि कोई ज्योतिषी काबुल में फलित पढते थे। उन्होंने विचार किया कि किसी मुहूर्त्त में गर्भाधान देने से बडा पण्डित पुत्र उत्पन्न होता है, वे घर को चले, रात को एक धोबन के घर रहे। धोबन ने पूछा कि पण्डितजी क्या सोच में पड़े हो, उन्होंने कहा कि हमारा मुहूर्त्त टलाजाता है। धोबन ने हाथ जोडे और कहा कि ऐसा पुत्र मुझे देदो। पण्डितजी राजी होगये। फिर वे घर गये और जब उनकी स्त्री के पुत्र होने को हुवा तो उन्होंने एक गैंद दाई को देदी और कहा कि बच्चा

होते ही गैंद को फेंकदेना, जिस में ठीक समय हाथ आजाय और कुण्डली बनै। जब पण्डितजीने कुण्डली बनाई तो जानपड़ा कि जारपुत्र है। पण्डितजी देश छोड़कर भागगये। बहुत वर्षों के पीछे ये लडका और इसका बडाभाई जो धोवन से हुवा था, आपस में मिले और पढनेलगे। दोनों बड़े ही बुद्धिमान् थे, इन्होंने कहा चलो अपने बाप को ढूंढलावैं। चलते चलते एक नगर में पहुंचे। वहां बडी भीड होरही थी। एक ज्योतिषी ने कहा कि वहां आकाश से मछली बरसेंगी। इन लडकों ने कहा कि वहां नहीं बरसेंगी और ही स्थान बतलादिया। इन्हीं लड़कोंका कहना सचहुवा। पण्डितजी बडे लज्जित हुवे और लडकों से पूंछनेलगे। लडकों ने कहा कि तुम्हारा गणित ठीक है, तुमने इसका विचार नहीं किया कि हवा से मछली कितनी दूर हटजायेंगी जैसा कि छोटे लडके के बापने उसके पैदा होने के समय गैंद फेंकदेना तो कहा, पर यह विचार नहीं किया कि गैंद फेंकने में कितना समय लगजायगा। पण्डितजी बडे प्रसन्न हुवे और घर लौटकर लडकों को पढ़ानेलगे, एक का नाम डंक और दूसरे का नाम भड्डुली हुवा।

कोई २ कहते हैं कि ये पण्डितजी वराहमिहिर थे। जब किसी फलित वालेकी बात नहीं लगती तो यही कथा कहदेते हैं और यह भी कहते हैं कि थोडे ही समय में इतना अन्तर होजाताहै। एक कथा और भी कहूंगाः—

अकबर ने सब ज्योतिषियों को बुलाकर बांध दिया और कहा कि मैं क्यों राजा हूं और जो लोग मेरे ही

साथ उत्पन्न हुवे थे, क्यों राजा नहीं हैं ? उनमें से एक बुड्ढे ज्योतिषी ने सात पान मंगवाये और एक सुई को मंत्रकर अकबर से कहा कि इनको छेदो। पहिला पान सोने का होगया, दूसरा चाँदी का, तीसरा तांबे का, चौथा लोहे का, पर सातवां पान वैसा ही रहा, ज्योतिषी ने कहा देखिये महाराज! पान छेदने में क्या समय लगता है, इतने ही में यह अन्तर होगया, ऐसी सैकड़ों कथायें हैं।

फलित वाले ऐसा भी कहदेते हैं कि मुसल्मानों ने सब ग्रन्थ जला डाले। यह सब झूठ है। मुसल्मानों का राज्य सारे हिन्दुस्तान में नहीं हुवा। जबकि वेद, पुराण और बहुत सी निकम्मी पुस्तकें तक बचगईं तो फलित को ही वे क्यों जलाते ? इसे तो वे भी मानते थे और अबतक मानते हैं। टीपू सुलतान ने अंग्रेजों से लड़ने का मुहूर्त्त कराया था, बरन साहेब अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि नये मुसल्मान और राजपूत मुसल्मान व्याहके समय जन्मपत्र मिलाते हैं और नामकर्म के समय ज्योतिषी को बुलाते हैं। अफगानिस्तान के लोग अबभी ज्योतिष का विश्वास रखते हैं। बाबर जब राना सांगा से लड़नेको गया तो काबुल से ज्योतिषी ने आकर कहा कि मङ्गल सामने है, बाबर की सेना का नाश है बाबर मङ्गल से तो न डरा पर अपनी सेना का साहस टूट जाने से बहुत घबराया। जब बाबर लड़ाई जीत गया तो यही आज्ञादी कि ज्योतिषी को मेरे राज्य से निकालदो।

मैं यह सिद्ध करचुका हूं कि यवनज्योतिष हमारी

विद्या नहीं है हमने यह यवनोंसे ली। हमारे सब से पुराने ज्योतिषी गर्गाचार्य भी यही कहते हैं:-

म्लेच्छाहि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किम्पुनर्वेदविद्द्विजाः ॥

यूनानी (यवन) म्लेच्छ हैं, पर फलित ज्योतिष का सम्पूर्ण शास्त्र उनमें स्थितहै, इसकारण ऋषितुल्य होने से वे भी पूज्य हैं, यदि वेदके जानने वाले ब्राह्मण हों तो उनका कहना ही क्या है।

हिन्दू धर्म का यह एक विशेष गुण है कि यह औरों की भी सब बातों को अपने में मिला लेता है। बुद्ध हिन्दू धर्मका खण्डन करनेको आया, हमने उसे दसवां अवतार मानलिया। कोई २ बंगाली योगी क्रिष्ट और कृष्ण में कुछ अन्तर नहीं समझते। यदि महम्मद और क्रिष्ट मूर्ति पूजाको बन्द न करते तो कदाचित् उनकी भी मूर्ति हिन्दूमन्दिरों में धरी मिलती। बहुतेरे हिन्दू पांचों पीरोंकी पूजा करते हैं और पंचपीरये कहलाते हैं। बहुत से हिन्दू बहराइच में सय्यदसालारकी कबरकी पूजा करते भी देखे गये हैं।

इस समय तक तो फलित वाले कुण्डली का फल बतलाया करते थे, इससे कोई बड़ी हानि भी न थी। अब तो इनका मन बढ़गया, भला बुरा मुहूर्त्त भी बतलाने लगे। इस समय के रचे हुवे ग्रन्थ मुहूर्त्तचिन्तामणि और काशीनाथपद्धति हैं। बिना ज्योतिषियों के पूछे विवाह भी नहीं होसकता। मैंने रामायण, महाभारत और अठारह पुराणों को पढ़ा है, पर कहींभी

उन में यह नहीं देखा कि व्याह के लिये कुण्डली मिलाई गई हों, बहुतेरे व्याह स्वयम्वर से होते थे, जिस में कन्या वर को पसन्द करके उस के गले में जयमाल डाल देती थी । अहा ? यह कैसा उत्तम नियम था । राजा जयचन्दने भी ऐसाही स्वयंवर रचा था, जब कि पृथ्वीराज बलात्कार से कन्याको हर लेगया और इसी फूटसे उस ने अपना नाश कराया। किसी २ व्याह में शक्ति की परीक्षा लेते थे, जैसे राम और सीताका व्याह कृष्ण के बहुतेरे व्याह, अर्जुन का द्रौपदी से व्याह, तथा गान्धर्वविवाह भी सुने गये हैं, जैसे दुष्यन्त और शकुन्तला का हुवा, परन्तु कुण्डली मिलाकर विवाह करने की रीति कभी नहीं सुनी गई। यह रीति उन्होंने बनाई कि जो पढ़ते २ पागल होगये और जिन्हें भले बुरे का ज्ञान न रहा । जैसे ही फलित वालों ने शुभ अशुभ विवाहों का वर्णन किया, भोले भाले लोग बडे प्रसन्न होगये और अपनी आयु बढ़ाने को ज्योतिषियों के पास दौड़ने लगे । यह अन्धेर नहीं है कि लोग महा मारी के कीड़ों से न डरें परन्तु अशुभ विवाह से डरजांय। क्या अशुभ विवाह की मौत कडवी और महामारी की मौत मीठी होती है ? यह पागलपना नहीं है कि जो लोग आयु और मौत को अटल समझकर बैठे हैं, वेही लोग ज्योतिषी के पास दौडैं कि अटल वस्तु टल जाय, टुक सोचिये तो ।

पहाड अचल हैं यदिआप किसी रेलके बाबू से कहें कि भाई चार पैसे लेलो अटल पहाड़ को यहीं बुलादो,

मैं ठंडा पानी पीऊँगा और ठंढी हवा खाऊँगा तो आप की बुद्धि कैसी समझी जायगी? आप तो समझेंगे कि मेरे समान बुद्धिमान् और कोई नहीं, चार पैसे देकर यहीं अटल पहाड़ को बुलारहा हूं, पर और लोग आप को क्या कहेंगे। जो लोग चारपैसे ज्योतिषी को देकर कर्मकी अटल रेखा को टालना चाहते हैं उनकी बुद्धिभी इतनी ही समझो॥

अब तो यह नियमही होगया है कि सबभले मनुष्य कुण्डली मिलाकर विवाह करें, जो कुण्डली नहीं मिलाते वे नास्तिक हैं। ज्योतिषीजी कर्मकी रेखा को भी मिटाने के लिये बुलाये जाते हैं और शुभमुहूर्त्त ढूंढते हैं, जिससे कर्मका फल टलजाय। इन्हीं महाराज ने पृथ्वीराज को दो घंटे तक मुहूर्त्त ढूंढते २ रोक दिया और शहाबुद्दीनने उसके गलेमें छुरा फेरा। टीपू सुलतान के लिये भी ये मुहूर्त्त ढूंढते रहे। अवधमें एक राजाकी स्त्री को क्षयरोग हुआ, पूसका महीना था, वैद्योंने हवा बदलने को कहा, ज्योतिषियोंने तीन बजे रातका मुहूर्त्त किया, जिससे रानीजी शीघ्रही ठंडी होजांय। ऐसेभी लोग हैं जो यह सुनलें कि तुम्हारे लड़कने विष खा-लिया है तो कुछ चिन्ता न करें, क्योंकि ईश्वरने जो आयु रची है क्या विष खाने से कम होसक्ती है। "जाको राखे साइयां मार सके नाहिंकोय" परन्तु जब वे सुनें कि तुम्हारे लड़के अशुभ मुहूर्त्त में कहीं गये हैं तो चिन्ता से व्याकुल होजांय, क्योंकि इस दशा में उन के बचनेकी कोई भी आशा नहीं रही।

कुण्डली मिलाकर व्याह करने से मा बापों की चिन्ता

तो मिटगई,पर दुलहा दुलहिन प्रसन्न न हुवे। निदान ज्योतिषियों को यह कहना पड़ा कि विवाह बचपन ही में करदिये जावैं। क्यों कि जब लडकी प्रेमरस चखने योग्य होतीहै तो उसका विवाह एक काले देव के साथ कर देना खेल नहीं है। जब बचपन में विवाह होगया और किसी को उसने अपना पति समझ लिया, तो जवान होने तक कुछ न कुछ प्रेम उसके साथ हो ही जाता है। इसी लिये काशिनाथ महाराज लिखगये हैं कि दस वर्ष तक जो लडकी का विवाह न करै, नरक में जाय। ऐसे बच्चों का विवाह वेद और पुराणों में कहीं नहीं है। वासिष्ठ लिखते हैं कि लडकीका विवाह रजस्वला होने से तीन वर्ष पीछे होना चाहिये। मनुजी का भी यही मतहै। ज्योतिषी जी महाराज ने मनुस्मृति में भी हाथ डाला है और दो एक श्लोक जोड दिये हैं कि विवाह ८।१० वर्ष में होसक्ता है। किसी वर्ष में व्याह अशुभ होते हैं और वर मिलना बडा कठिन होता है, इस लिये ६।७ वर्ष की बालिकाओं का विवाह होने लगा, जिससे हमारा सब बल वीर्य क्षीण होगया। यूनान का राजदूत मेगास्थिनिज सन् ३१२ ई० से पहिले और चीन का यात्री फाहियान सन् ४०० ई० में हिन्दुस्तान में आये थे। ये लोग अपनी पुस्तकों में इस अन्धेर का कहीं भी वर्णन नहीं करते। परन्तु अलबरूनी जो १०२० सन् ई० में तुर्की से आयाथा, लिखता है कि हिन्दूलोग बचपन में विवाह करदेते हैं। इससे यह सिद्ध है कि बचपन का विवाह जिसने हिन्दुओं का नाश किया है,

४०० ई० के पीछे और १०१० ई० से पहिले हिन्दुस्तान में प्रचलित हुवा। यवनज्योतिष के बाबा वराहजी ५०६ ई० में हुवे और फलित का झण्डा तभी से गढ़ा अर्थात् बचपन के विवाह का मूल फलित है ॥

सन् ११५० ई० तक यवनज्योतिष की चढतीरही। इस बीचमें सामुद्रिक,योग,प्रश्न इत्यादि बहुत सी और २ भी विद्यायें चलीं, जिन्होंने कि फलित को और भी सहारा दिया, इतनेपर भी फलित डगमगाने लगा और डूबने को ही था कि जैमिनि महाराज ने एक उल्टा ग्रंथ बनाया। जैसे और ग्रन्थों के अनुसार कोई लड़की विधवा होगी तो जैमिनि के अनुसार वह सुहागिनी रहेगी। स्त्री या तो विधवा होगी या सुहागिनि रहेगी। दो बातों में एक बात तो अवश्य ही सच्ची होगी, तो एक ज्योतिषी अपने आप सच्चे होगये।

भागवत में लिखा है कि चन्द्रमा ने अपनी गुरुपत्नी से व्यभिचार किया। यवनलोग चन्द्रमा को स्त्री बतलाते हैं। पुराण शुक्र को देवताओं का शत्रु मानते हैं, यवन शुभग्रह कहते हैं। बुध और शनैश्चर को यवनों ने नपुंसक कहा है और इन्हें कुछ बुरा न लगा, आजतक इन्होंने हतक का अभियोग (दावा) भी नहीं किया, अवश्य ही हिंजडे होंगे।

फलित के खोज करनेवाले सच्चे और खरे लोग थे उन्हें भ्रम तो अवश्य हुवा, परन्तु उनकी सच्चाई में कोई संदेह नहीं। पर भृगुसंहिता एक ऐसी पुस्तक है, जिस के लिखनेवाले को हम सच्चा और खरा नहीं कहसकते। मैंने एक भृगुसंहिता पढ़ी है। इसका मूल्य ३५) है।

यह हज़ारों पत्रों की पुस्तक है रामायण और महाभारत से भी बढगई है, इसमें सब मनुष्यों की कुण्डली दीगई है। इसके पढ़ने से जानपडता है कि यह किसी विद्वान् की बनाई हुई नहीं है, किन्तु किसी धूर्त की रचना है। इस में केवल ठगपना भरा हुवा है।

कहीं कोई बात पकड़ी न जाय, इस से पूर्व जन्म का वर्णन अधिकतर किया है, जिसे कोई भी न पकड़ सकै।

१८ वें अध्याय में हमने भृगुसंहिता के ढंगपर रामदयालके जन्मपत्र का वर्णन किया है। भृगुसंहिता का लिखने वाला बड़ाही धूर्त्त और वञ्चक होगा, जो ऐसा नीच काम कर गया। ऐसा धूर्त्त निकला कि महात्मा भृगुजी को फंसाकर आप अज्ञात रहा, नहीं तो लाखों गालियां खाता। भृगुसंहिता का फल सुनाने के लिये १) देना पड़ता है और फल लिखादेने के लिये ५) से १०) तक देने पड़ते हैं। ऐसी गोल मोल बातों पर विश्वास करना और उनको दैवीय वाक्य समझना मनुष्य बुद्धि की बड़ी शोचनीय दशा को दर्साता है। हाय! हम भारतवासियों की यह अधमगति हुई कि ऐसे ठगपने को भी नहीं पहचान सके ॥

छठा अध्याय।

फलित की दशा!

सन् ११६० और १८६० ई० के बीच में यवनज्योतिष की बड़ी चढ़ती रही। बड़े २ गांव फलितज्योतिषियों को मिलगये। चीन में जो ज्योतिषी झूठा निकलता था, वह फांसी में लटकाया जाता था, इसलिये चीनियों ने इसे भयङ्कर जानकर छोड़दिया। पर हिन्दुस्तान के ज्योतिषी बुद्धिमान् थे, उन्होंने पहिले ही नियम करलिया कि ब्राह्मण को फांसी न दीजाय।

मैंने सुना है कि एक ज्योतिषी उप्रेतीजी सन् १८५७ ई० में फर्रुखाबाद रहते थे। सन १८५८ में वे काश्मीर की ओर भागे और उन्हें पकड़ने की आज्ञा हुई। कुछ दिनों में निराश होकर उन्हें फर्रुखाबाद आना पड़ा और कचहरी में पकड़े आये। उनका अपराध यही निकला कि उन्होंने बलवा करने वालों के लिये मुहूर्त्त किया था। साहब कलेक्टर ने मुस्कराकर उनसे कहा कि जाओ मुहूर्त्त ढूंढते रहो। लोग यह देखकर बड़े प्रसन्न हुवे। इस कथा से स्पष्ट होगा कि फलित का उन दिनों कैसा प्रभाव था।

परन्तु बंगाल में अंग्रेज़ी पढ़नेवालों की संख्या बढ़ने लगी, राजा राममोहनराय और केशवचन्द्रसेन ने ब्रह्मसमाज का प्रचार किया। स्वामी दयानन्दसरस्वती ने आर्यसमाज का डंका बजाया। पढ़े लिखे लोग विद्वान् अंग्रेजों की पुस्तकों को पढ़नेलगे, तब तो इनका मन फलितज्योतिष से हटगया। हमारे नये जवानों ने

केवल ज्योतिष को ही नहीं फेंकदिया, बल्कि हिन्दुस्तानी वस्तुओं से ही उनकी रुचि हटगई और एकप्रकार के नास्तिक होगये । इतने ही में थियोसोफी के प्रचारक करनैल अलकाट और मैडम ब्लवस्टकी हिन्दुस्तान में आये । एनबीसेन्ट ने बनारस में हिन्दुओं की बडी पाठशाला खोलदी । तब तो इन नास्तिकों की आंखें खुलीं और फिर पुराने मार्ग को दौडने लगे । यह तो अच्छा ही हुवा कि थियोसोफी के आनेसे नास्तिकता चली गई, पर साथ ही साथ कुछ पुराना अन्धकार भी आगया । इससे फलित की जड कुछ दिनों के लिये फिर हरी होगई । जब पढ़े लिखे लोग फलितज्योतिषियों के पास जाने लगें तो अनपढ़ों को फलित का विश्वास आपही होगया ।

पढ़े लिखे लोग ज्योतिषियों के पास क्यों जाते हैं ? उन्हों ने सुन रक्खा है कि बिना ज्योतिष के कोई काम सिद्ध नहीं होता, यात्रा निष्फल होती है । लड़की विधवा होजाती है । एक चश्मा लगाये हुवे अंगरेजी पढ़े हुये लडके ने कहा कि यह सब झूठ बात है, फलितवालों को फांसी देदेनी चाहिये । परन्तु जब उसी की लड़की के विवाह का समय आया और अच्छे लड़कों से विधि नहीं मिली तो वह कहनेलगा कि " हमारे ऋषि मुनि झूँठ नहीं बोलसकते, हमारा ज्योतिषशास्त्र झूठा नहीं होसक्ता । हम देवदत्त के रुपये से क्या करें, कुण्डली तो मिलती ही नहीं । लडकी रांड होजायगी तो क्या मैं रुपये का मुंह देखूंगा । चलो उसका विवाह

काले भूतके साथ करदें, उससे कुण्डली तो मिलती है। हां उसे दूर कुंवेसे पानी के घड़े लाने पड़ेंगे, पर इस से वह और बल पकड़ेगी और निरोग होगी। उसे मोटा खाना और पहिरना होगा तो क्या हानि है! मोटा खाने से कौन मरता है। भय्या! यह समय धनवानों के लिये अच्छा नहीं है। डाकू उन्हें घरकी मुर्गी समझते हैं। चन्दा मांगने वाले उन्हें चैन नहीं लेने देते। पुलिस वालों के वे आहार हैं। मेजिस्ट्रेट उन्हीं को डांडते हैं। पृथ्वी में एक भी तो मनुष्य नहीं जो उन्हें कहीं से लूटनेकी चिन्ता न करता हो। धनी होने से कुछ भी तो सुख नहीं है। अच्छा तो यही है कि वह रांड न होने पावै।"

उसकी मा कहती है धन्य रे आज्ञाकारीपुत्र! धन्य! धन्य!!

बुड्ढा बाप तो रोपड़ा और रूमाल आंखों से लगा कर कहने लगा, वाहरे बुद्धिसागर! फिर गदर आ-गया। बुद्धिसागर बोले, यदि फलित झूठ निकला तो लड़की हमें जन्मभर कोसेगी। उसकी मा तो चकित सी होगई, मानो वज्रपात होगया। हाय! क्या बकता है, पागल तो नहीं होगया। ज्योतिष कहीं झूठा होसकता है? दिन रात कैसे होते हैं, सूर्य कैसे निकलता है। देखो ज्योतिषी महाराजने परसों ग्रहण बतलाया था, कैसा ठीक निकला। क्या हमारे बाप दादा मूर्ख थे जो ज्योतिष को मानते आये। अपनी क्रिस्तानी मत की पुस्तकों को जला डाला। इन्होंने तो मेरेलड़के का नाश लगाया है।

विद्यासागर बोला कि मैं यह नहीं कहता कि ज्योतिष झूठा ही है, मैं पुस्तक पढ़कर उत्तर दूंगा। मुझे ईश्वरने आंख दी हैं, मैं देख भाललूं। ऐनक लगाकर फलितकी पुस्तकें पढ़ने जो गये तो देखते हैं कि वे कठिन संस्कृत भाषा में लिखीं हैं, जिनका कुछभी अर्थ समझ में नहीं आता। हां इतना अवश्य समझमें आता है, कि संस्कृत सीखने और ज्योतिष पढ़ने तक वह लड़की आधे दर्जन बालकोंकी महतारी होजायगी। आखिर विद्यासागर ने कहा, कि भाई! मैं जोखिम में पडना नहीं चाहता। लडकीके ग्रह बुरेहोंगे,होनेदो मैंअपने बूढे बाप को दुःखी नहीं करूंगा। वह गांव में जायगी, उसका भाग्य ही ऐसा है,मैं क्या करूं। बिचारी लडकी को गांव ही में जाना पडा। वह और उसकी मा रोती रहीं, परन्तु उन के आंसू किसी ने नहीं देखे। क्योंकि उन्होंने लम्बा घूंघट काढ लिया था। क्या ईश्वर के यहां भी इन आंसुओं का लेखा नहीं रहता। कबतक धर्मशास्त्र के नाम से इन अबलाओंपर यह घोर अत्याचार रहेगा। मैं सब पढ़े लिखे लोगों से यह प्रार्थना करता हूं कि वे टुक अपने मन में विचार कर देखें कि यह अत्याचार और अन्याय जो निरपराध कन्याओं पर नित्यप्रति हम देखरहे हैं, हमारे किसी धर्मशास्त्र में लिखा है कि नहीं। हमारे फलितज्योतिषियों ने एक नया ही विभाग खोला है, अर्थात् भाग्य। बहुत से लोग बिना अपराध अभागी बनादिये गये हैं। लोगों के उत्साह और साहस का सत्यानाश लगादिया है और उनको बलहीन निस्तेज करदिया।

क्या आप अबभी इस पुस्तक के उपकारी होने में सन्देह करेंगे। विद्वान् लोग इसकी परीक्षा कर सकते हैं कि यवनज्योतिष सच्चा है वा झूठा? परन्तु यह विचार तभी होसकता है,जब वे इसके ग्रन्थोंको पढें, पर ज्योतिष ऐसा कठिन बिषय है और ऐसीकठिन संस्कृत भाषा में लिखा है कि बहुतेरे मनुष्यों की सामर्थ्य से वाहर है। यही कारणहै कि इतना हानिकारक होनेपर भी फलित से लोगों का विश्वास नहीं हटता। पण्डित लोग तो कभी यह न कहेंगे कि यह झूठ है, क्योंकि उनकी तो इससे आजीविका है।

मैंने यवनज्योतिषके कारण घोर २ अत्याचार देखेहैं, मेरे मित्रोंने कहा कि फलित ठीक है, मुझे विश्वास तो नहीं आया, पर मैं इसे नहीं जानताथा कि यह क्या वस्तु है? मैंने मंसूवा किया कि मैं इसकी पूरी २ खोज के लिये कुछ रुपये ऐसे मनुष्य के लिये जमा करदूं जो संस्कृत भली भांति पढ़ा हो और हिसाब और अंग्रेजी, गणितज्योतिष में बी० ए तक पास हो। मेरे एक मित्रने मुझसे कहा कि आपही क्यों नहीं इस काम को करते। यह बात मुझे भली लगी। इन पांच बर्षों में मैंने फलितकी प्रायः सब ही पुस्तकें पढ़डालीं। इन में से बहुतेरी पुस्तकें अभीतक छपी भी नहीं हैं। मैंने एक हजार तक जन्मपत्र देखे और विधवा स्त्री और संन्यासियों के जन्मपत्र तक इकट्ठे किये। मैंने जो फल कहे, कईवार ऐसे ठीक लगे कि एक दिन मेरी कचहरी में ६ मुक़द्मों में राज़ीनामा होगया। लोग कहनेलगे कि

ऐसे दैवज्ञ ज्योतिषी से कौन बात छिपी रहेगी । मुझे भी बडा अचम्भा होगया । परन्तु जब मैंने हजार तक कुण्डलिया देखली, तो मैं ज्योतिष का सच्चा भेद समझ गया और यह भी जानगया कि ज्योतिष अबतक कैसे माना जाता है । अब मैं संक्षेप रीति से ज्योतिष का वर्णन करूंगा । मैं तो इस विषय में एक बड़ा पोथा लिखडालता, पर आप अकड़ाने और जम्भाने लगेंगे, इस डर से संक्षेप ही लिखता हूं ॥

इति पहिलाभाग समाप्त हुवा.

श्रीः।

(जो लोग फलितज्योतिष सीखना चाहते हैं
वे ही दूसरे भाग को पढैं और लोग
दूसरे भाग को छोड़दैं)

अथ दूसराभाग

सातवां अध्याय।

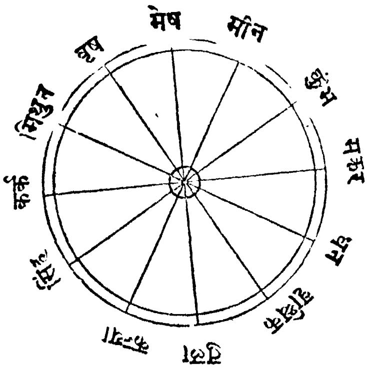
गणितज्योतिष के सङ्केत जो यवनज्योतिष में काम आये हैं।

यवनज्योतिष पढने के लिये कुछ गणित का जानना भी आवश्यक है।

राशिचक्र—आकाशमण्डल का एक घेरा है, इस में २७ नक्षत्र हैं—अश्विनी, भरणी, इत्यादि और १२ राशि हैं:—मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, और मीन। ताराओं का कोई समूह ऐसा दिखाई दिया जैसे भेडी के सींग होते हैं, उस का मेष नाम रक्खा। कोई बैल के सींग जैसा जानपड़ा, उसका नाम बृष रक्खा। इसीप्रकार १२ नाम रखदिये। तारे स्थिर हैं ग्रह घूमते हैं।

ग्रह—वे हैं जो पूर्व से उदय होकर पश्चिम की ओर अस्त होते हैं। यवनज्योतिष वालों ने ९ ग्रह माने हैं:—(१) सूर्य २ चन्द्रमा ३ मङ्गल ४ बुध ५ बृहस्पति ६ शुक्र ७ शनैश्चर ८ राहु ९ केतु। राहु और केतु कोई

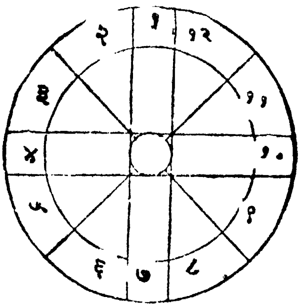
ग्रह नहीं हैं पृथिवी और चन्द्रमा के मार्ग के मिलने के कल्पित बिन्दु हैं। नये बर्ष की पहिली तिथि को सूर्य्य मेष राशि में प्रवेश करता है, इसे मेष संक्रान्ति कहते हैं। एक महीने पीछे वृष में जाता है और वृष संक्रान्ति होती है। एक दिन में एक राशि का ३० वां भाग चलता है और वर्षभर में वही आजाता है। चन्द्रमा एक दिन में १ नक्षत्र चलता है। शनैश्चर ढाईवर्ष में एक राशि चलता है। एक राशि को राशिचक्र अर्थात् गोलाकार का बारहवां भाग समझना चाहिये॥



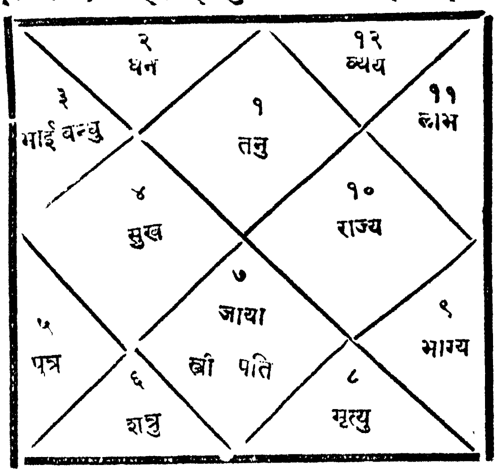
आठवां अध्याय।

जन्मकुंडली।

जन्मकुंडली आकाशमंडल का एक चित्र है जिस से यह जानाजाता है कि मनुष्य की उत्पत्ति के समय कौन ग्रह किस राशि में था और ग्रहों के बल का विचार होसक्ता है। इसके १२ कोठे होते हैं। सब से ऊपर का कोठा पहिला कोठा कहलाता है, फिर बाँयी ओर का दूसरा, फिर तीसरा जैसे कि चित्र में लिखा है।



सुगमता के लिये बहुधा करके ऐसा भी चित्र बना लेते हैं, दोनों एक ही हैं कुछ भी भेद नहीं।



इन १२ कोठों का वर्णन हिन्दुओं ने यवनों से सीखा। यूरोप में भी येही १२ कोठे इसी रीति से बनते हैं। यहीं से फलित का आरंभ हुवा । इन १२ कोठों का नाम भलीभांति सीखलेना चाहिये। याद रक्खो कि सबसे ऊपर का कोठा पहिला होता है फिर बाँई ओर को गिनती होती है ।

कोठों के नाम	संस्कृत नाम	किस कोठे से क्या २ फल मिलसक्ता है।
पहिला	तनु लग्न	शरीर लंबा, छोटा, मोटा, पतला, काला, गोरा, रोगी, इत्यादि
दूसरा	धन	दरिद्री, धनी.
तीसरा	सहज	भाई, बहिन, बन्धु, मित्र,
चौथा	सुख	सुख माता,
पांचवां	पुत्र	लड़के, लड़की, विद्या, चाल, चलन,
छटा	शत्रु	शत्रु, रोग,
सातवां	स्त्री जाया	दुलहा, दुलहिन, परस्पर प्रेम।
आठवां	मृत्यु	मृत्यु, रोग, आयु स्त्री का सुहाग
नवमां	भाग्य	भाग्य, धर्म, बुद्धि,
दसवां	राज्य	नौकरी, धन, पद,
ग्यारहवां	लाभ	आय, लाभ,
बारहवां	व्यय	व्यय, हानि,

विद्यार्थी को उचित है कि ऐसे बहुतेरे चित्र बना कर उन में कोठों का नाम लिखे और ठीक अभ्यास कर लेवै ॥

नवम अध्याय

लग्न।

जब कोई उत्पन्न होय तो पञ्चाङ्ग खोलकर संबत्सर मास तिथि वार उसकी कुंडली में लिख लेवे। फिर देखे कि सूर्योदयमें कितनी घड़ी और पल हुवे हैं। लग्न-सारिणी में लिखा होता है कि किस समय तक कौन लग्न होगी।

जैसे एक वर्षके मेष, बृष इत्यादि १२ भाग किये हैं वैसेही दिन के भी १२ भाग इन्हीं नामोंसे किये हैं। एक लग्न दोघंटे के लगभग होता है। संक्रान्ति के दिन सूर्य जिस राशि में हो उस दिन सूर्योदय के समय वही लग्न होता है। जैसे तुला संक्रान्ति के दिन सूर्यो-दय के दो घंटे तक तुला लग्न रही फिर बृश्चिक लग्न फिर धन इत्यादि। लग्नसारिणी में लिखा होताहै कि किस समय तक कौन लग्न रहेगी।

बालक उत्पन्न होनेके समय जो लग्न हो उसे पहिले कोठे में लिखो। जैसे बृश्चिक अर्थात् ८ वीं लग्न निकली तो पहिले कोठे में ८ दूसरे में ९ तीसरे में १० चौथे में ११ पांचवें में १२ छटे में १ सातवें में २ एवं ११ वें कोठे में ७ लिखो जिसमें सब कोठे भरजांय। अब इन लग्न के अंकोंको राशि समझो और पंचाग में देखलो कि ८ वीं राशि में उस दिन कौन २ ग्रह थे उन को ८ के सामने पहिले कोठे में लिखो फिर देखो कि ९ वीं राशि में कौन ग्रहथे और उन को दूसरे कोठे में लिखो इसी प्रकार नौ ग्रहों को कोठों में भरदो जिस राशि में वे हों। बस यही जन्म कुण्डली है।

दसवां अध्याय ।

कुण्डलीविचार ।

अब तो आप ज्योतिष के आचार्य होगये, बी. ये, पास कर लिया बाकी क्या रहा, आगे कोई भी कठिनता नहीं है । कुंडलीविचार करने के लिये कुंडली के पहिले कोठे को देखो उस में कौन २ ग्रह हैं उनका फल हमारी जंत्री में पढ़लो । ऐसे ही दूसरे तीसरे कोठोंके ग्रहों का फल देखो ।

पुरुषजातक-
जन्त्री

ग्रहों का १२ घरों में फल

नाम घर	सूर्य फल	चन्द्र फल	मङ्गल	बुध
१ तनु शरीर	दरिद्री, आलसी, आंखका रोगी, बुद्धिमान, दुबला पतला, बापसे झगड़ै.	रूपवान्, कपड़े अच्छे पहिने, धनी, २७ वर्ष में रोग हो.	रुधिर की बीमारी, ५०वें वर्ष बड़ी हानि हो, झूठा, दुष्ट, बलवान. मूर्ख,	नाटे क़द का, मीठा स्वभाव, लंबी आयु, बुद्धिमान्, पठित पुत्र, दीर्घायु.
२ धन	७ वर्ष में धन नाश, अच्छे मित्र न हों, धन नाश होता रहै, स्त्री से लड़ै, लड़के वाले न हों, सवारी न हो औरोंके साथरहै.	३७वें वर्षमें स्त्री मरै, रूपवान्, शौक़ीन, धनी, शरमीला स्वभाव, बहुत प्रसन्न न रहै.	१२ वें वर्ष धन नाश, निर्दयी, अभागी सब से बैर, करज लेता रहै, कंजूस, व्यौपारी.	२६ वें वर्ष धन पावै, प्रसन्न, सच्चा, धन और नाज इकट्ठा करै, उदार, प्रख्यात, नम्र, स्त्रीप्यार करै.
३ सहज भाई बन्धु	भाईको २०वें वर्ष कष्ट हो, घोड़े गाड़ी होवें, रोग शीघ्र छूटै, भाइयोंको दुःख रहा करै.	झूंटा, कंजूस, बेडर, भाई बहिन बहुत हों, विवाह करै पर फक़ीर होवै.	भाइयों को कष्टरहै भाई शत्रु हों, दीर्घायु हो, लड़के हों, १३ वर्ष में भाग्य जागै.	१२ वें वर्ष भाई हो, बड़ा परिवारहो, आंख में रोगहो, चंचल चित्त, मनमें कपटहो, खुश न रहे, भाई बहिन बहुतहों.
४ सुख	१४ वर्ष में भाग्य जागै, गायन का शौक़ीन, लड़ाई करै तो हारै, बाप का धन उड़ावै.	२२वर्ष में पुत्र हो स्त्री को प्यार करै, व्यापार से लाभ हो, बड़ाही शौक़ीन हो, घर हो.	८ वर्ष में भाई को कष्ट, मा मरजाय, भाइयों से झगड़ै, सवारी से गिरनेका डर रहै.	गायन का शौक़ीन, २२ वर्ष में हानि, राजा आदर करै.
५ सुत सन्तान	लड़के मरैं या न होवैं या कम हों, बाप ८ वर्ष में कष्ट पावै, अच्छी जगह पसन्द करै, दुष्ट.	६ वर्षमें घरमें आग लगै, मा कष्ट पावै, लड़के और पोते हों.	मा को ५ वर्ष में कष्ट अथवा मरजाय, लड़के न हों अथवा एक दुष्ट लड़का हो.	२७ वर्षमें लड़का हो, कथा कहा करै, स्त्री के गर्भपात हुवा करै.
६ शत्रु	शत्रु न हों, ३६ वर्ष में भाग्य बढ़ै, धनी, सब प्रकार बड़ा हो बड़ा उत्तम फल.	शत्रु बहुत, थोड़ी आयु, अजीर्ण, मूर्ख, आलसी.	शत्रुनाश, २४ वर्ष में लड़का हो, भूख तेज, जो मन आवै सो करै.	दुष्टोंसे मेल, निर्दयी, आलसी, झगड़ालू, बहुत शत्रुहों.

बृहस्पति	शुक्र	शनिश्चर	राहु	केतु
उदार, पठित, दीर्घायु, रूपवान्, प्रतिष्ठित, बडा भाग्यशाली.	१७वें वर्ष धन मिले, अच्छी स्त्री मिलै, शौकीन, मंत्री, बलवान्, मधुर, दयालु,	अभागी, धन और आरोग्यता दोनों का नाशकरै शराबी.	अभागी, पापी, कुरूप.	अभागी, पापी, कुरूप, काला, माता रोगी रहै, स्त्री व्यभिचारिणी हो, वा विवाह न हो.
३८ वर्ष में बडा काम वा गांव इत्यादि मिलै, पठित, धनी, धर्मात्मा, स्त्रीको प्यार करै, रुपया कमबचै, ईश्वर भक्त.	छटे वर्ष माल मिलै, अच्छे घोडे हों, राजा आदर करै, बड़ाभाग्यहो	१२ वर्ष में धन नाश घरबार नहो औरों के पास रहे और खावै.	१२वर्षमें भाई को कष्ट. अभागी घूमतारहै, घर नहो	१६ वर्ष में माता मरै, स्त्री से विधि न लगै. घूमतारहै.
२७वर्ष में बडीहानि हो, २७वर्ष मेंहो नौकरीसे निकालाजाय कंजूस, स्त्री और लड़. के उसे प्रेम न करैं.	४३ वें वर्ष आपति, कंजूस, बुरे काम करै आयु लंबी नहो।	भाई को कष्ट, भाइयों से प्रेम न हो, अपनी स्त्री के नातेदारों को प्यार करै. उदास, क्रोधी. १४वर्षमेंभाग्यउदय	१३ वर्ष में लाभ, बड़ा बलवान् निरोगी, भाग्यवान् (इज्जत) प्रतिष्ठाहो नौकर होवैं.	१४वर्षमें भाग्य उदयहो, शत्रुभी मानैं आदरकरैं, सबलोग बहुत मानैं प्रेमकरैं.
बडा आदर पावै, भाईसे धनमिले, गाने बजाने तसबीरइत्यादि का शौकहो, खुश रहे.	४५ वर्ष मेंभाग्य बढ़े माता को प्यार करै, गांव हों, नौकर, पशु, सब पदार्थ हों, दीर्घायु हो।	माता को ८ वर्ष में कष्ट. सब से झगडै अभागी, परदेसरहै.	भाई ७। ८ वर्षमें कष्ट पावैं, शराबी, मैला, रोगी, काले कपड़े भले लगें।	राहुके समान फलहो.
लड़के बहुतहों, बडा पठितहो, सब लोग मानैं आदरकरें राजा आदर करैं.	लडकेहों २१ वर्ष में स्त्री कष्ट, कविता का शौक हो, गाने बजाने का शौकीन, पठित भाग्यवान्.	नास्तिक, लड़के नित्य रोगी रहैं, या नहों, ५वें वर्ष भाई को कष्ट, छाती का रोगहो, खांसी क्षय इत्यादि.	दुष्ट, ६ वर्षमें भाईवा बाप मरे उदास, लड़कों की चिन्ता बनी रहै.	राहुके समान फलहो, लड़का हो तो कालाहो, बलवान्, नौकरी की आजीविकाहो
नाच गाना पसन्द हो, आलसी, रोगी, [illegible]को हानिहो.	झगड़ालू, भोग शक्ति कमहो, दिखलावट बहुतहो.	२४वर्षमें लड़का हो, निडर, शत्रुओं से न डरे.	२५ वर्ष में लड़काहो, चचा को दुःखदे, शत्रु जीतै.	२७ वर्ष में लडकाहो, शत्रु जीतै, परिवार निरोगहो.

ग्रहों का १२ घरों में फल

नाम घर	सूर्यफल	चन्द्रफल	मङ्गल	बुध
७ जाया स्त्री	स्त्री कष्ट,४२ वर्ष में बवासीरका रोग हो, नित्य चिन्ता रहै.	१५ वर्ष में माको कष्ट, स्त्री बड़ीरूपवतीहो पर रोगीहो.	२७वर्ष में स्त्रीको कष्ट, स्त्रीका सुख, स्त्रीसे मेल कम,परदेश रहै.	स्त्री और सन्तान अच्छे हों, आयु लम्बी हो.
८ मृत्यु	गर्मी सुजाकहों, वेश्यागामी, मौतका डर बना रहे,५७बर्ष में भाईको कष्ट.	६ वर्षमें मृत्यु वा अल्पायु,रोगी,कंजूस, निर्धन.	मौत का डर बना रहै. आंव अतीसार की बीमारी रहै, रुधिर का रोग हो,अजीर्ण रहै.	१७वर्षमें स्त्री मरै, व्यभिचारी,मौत का डर रहै.
९ धर्म भाग्य	६३ वर्ष में अधिकार मिलै, कंजूस, नित्य चिन्ता रहै, हरिभजन करै.	लड़के,स्त्री, धन, इत्यादि सब सुखहों, धर्मात्माहो.	१४वर्षमें कष्ट,शिकार खेलनेका शौक, अभागी, निर्धन.	१९ वर्ष में माता को कष्ट, सच्चा, भाग्यवान्,धनी,उदार.
१० राज्य	१४ और २१वर्ष में हानि, ४२ वर्षमें भाग्योदय,राजाआदर करै, स्त्री,लड़के लड़ाकियाँ हों.	४२वर्षमें भाग्योदय, धर्म्मात्मा, संतोषी,धनी,वलवान् सीधा साधा.	राजा आदर करै, बुद्धिमान् औरों की सहायता करै, बड़ा आदर पावै,खुशरहै	३९ वर्ष में भाग्योदय, आदर पावै, उत्साही, (हौसलेवाला)
११ लाभ	३३ बर्षमें लड़का हो,शत्रुडरैं बड़ा धनवान्.	२६ वर्षमें नौकरी या धन मिलै,दीर्घायु, खुश,	४५वर्षमें भाग्योदय, धनी, एक लड़का मरै , लड़के बहुत हों.	४५ वर्ष में धन मिलै, क़र्ज कभी न ले, धनी, दीर्घायु.
१२ खर्च व्यय	२८वर्षमें धनहानि, कैदजावै, आँख का रोगी, चोरी होजावै.	३० वर्ष में हानि, पैर व आँखका रोगी, आलसी.	४५ वर्ष में हानि, कैद होनेका डर,स्त्री रोगी रहै , स्त्री से प्रेम कम हो	२५ वर्ष में स्त्री कष्ट, मित्र न हों.

बृहस्पति	शुक्र	शनिश्चर	राहु	केतु
स्त्री रूपवती,पठित (बहुत पढी हुई) शौकीन,निरोग.	औरोंकी स्त्रियों से आंख मिलावै प्रेम करै,स्त्री रूपवती भली हो चतुर.	स्त्री बहुत मोटी हो,मरजावै,रंडवा रहै,नौकरी कमहो	स्त्रीका बुरा स्वभावहो, लडके नहीं, वा कम हों, २७ वर्ष में आगका डर.	स्त्री क्रोधी, बुरे स्वभाव की ३० वर्ष में स्त्री कष्ट,परदेश रहै.
२२वर्ष में बिवाह, आलसी,मौतका डर बनारहै,परदेश रहै।	१५ वर्ष में हानि, स्त्री और लडकों के लिये नित्य चिन्ताकरै,	मौत का डरहो, परदेस रहै, २३ वर्ष में हानि हो.	२४वर्षमें स्त्री मरे, शत्रु बहुत दुःख दें.	बहुत हानिहो, चोरहो, २५वर्ष में हानिहो.
२१ वर्ष में रोग, धर्मात्मा,धनी,खुश, मन्त्री।	१९ वर्ष में भाग्योदय(बृहस्पतिके समान फल)	१५वर्ष में हानि अधर्मी,दुःखी,परंतु सन्तोष करै.	निर्धन,धर्महीन मित्रहीन, दुष्ट, झूठा,पिताको १६ वर्ष में कष्ट.	बहुत हानि (राहुकेसमान फल)
दयावान, धनी, स्त्री, पुत्र हों, खुश, १५ वर्ष में माताको कष्ट।	विवाह छोटी उमर में हो, भाग्यवान् घरके लोगों को प्यार करै, स्त्री रूपवती धन खर्च करै.	२८ वर्ष में शत्रु नाश, कंजूस धनी.	बुरे लोगों के साथ रहै, कुसंग में रहै, बवासीर का रोगहो.	२७ वर्षमें स्त्री मरै, बवासीर का रोग हो अधर्मीहो
२५ वर्ष में धन, राजा आदरकरै,धनी, दीर्घायु।	भाग्यवान(बृहस्पति के समान फल)	४४ भाग्योदय धनी, बलवान्, पुत्रवान्.	बडा भाग्यवान झूठा, बडे धनी की लडकी के साथ विवाह करे.	राहुके समान फल.
२५ वर्ष में कष्ट, शरीर रोगी, पापी, आदर न पावै।	झूठा.निर्दयी, शौकीन, दुष्ट.	४६वर्षमें हानि, निर्दयी, निर्धन, आलसी.	आंखका रोग, ४७ वर्ष में हानि परदेश रहै,शत्रु नाश करै.	राहु के समान फल.

स्त्रीजातक।

घर	सूर्य	चन्द्र	मंगळ	बुध
१	क्रोधी, निर्दयी, विधवा अथवा पति निकालदे.	बुध के समान फल.	सूर्य के समान फल.	पतिव्रता, सच्ची, रूपवती, आज्ञाकारी, भाग्यवती, दयालु.
२. ३. ४. ६. ९. १० ११. १२	इन घरों में इन ग्रहों का फल पुरुषजातक समान होता है, जो फल स्त्री उसके पति को यह फल कहना चाहिये।			
५	एकही लड़का हो.	दो लड़कीहों, बुध समान फल हो.	पुत्र न हों वा रोगीहो.	भाग्यवतीहो ३ लड़की हों.
७	पतिको छोडदे वा उससे लड़े.	बुध समान फल.	विधवा हो;	भाग्यवतीहो पर पति नपुंसकहो.
९	विधवा.	बुध के समान फल.	विधवा.	कोई विशेष फल नहीं है.

बृहस्पति	शुक्र	शनिश्चर	राहु	केतु
पतिव्रता, सच्ची, रूपवती, आज्ञाकारी, भाग्यवती, दयावती.	बुध समान फल.	कुरूपा, अभागी, चाल चलन बुरा.	कुरूपा. अभागी, चाल चलन बुरा, पुत्र मरैं.	राहु के समान फल.

को नहीं लगसक्ते वे उसके पति को लगेंगे जैसे नौकरी मिलै वा राजा आदर करै आवे तो

५ पुत्रहों, बुध समान फल.	लड़के हों पर ७लड़की हों, बुध समान फल.	सन्तान न हों वा लड़की हो.	शनिसमान	शनि समान
पति भला मिलै, भाग्यवती हो.	पति भलामिले, भाग्यवतीहो.	पति नपुंसक हो वा प्रमेह से दुःखपावै.	शनिसमान	शनिसमान
बुध समान.	बुधसमान.	अशुभ.	अशुभ.	अशुभ.

इस जंत्री में जातक ही नहीं ताजक का भी संक्षेप कर दिया है। वराहमिहर लिखते हैं कि चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र शुभग्रह हैं और पहिले दूसरे तीसरे चौथे पांचवें सातवें नवें दसवें और ग्यारहवें कोठों में उत्तम फल देते हैं। सूर्य और मंगल क्रूर ग्रह हैं, छटे और ११ वें कोठों में उत्तम फल देते हैं। दसवें में मध्यम फल देते हैं। और कोठों में अशुभ फल है। शनि राहु केतु पापग्रह हैं, इनका सब कोठों में अशुभ फल है, केवल छठे और ११ वें में अच्छा है, ८ वें कोठे में कोई ग्रह भी अच्छा फल नहीं देता। यही जातक है॥

ग्यारहवां अध्याय।

राशिस्वामी इत्यादि।

फलितवालों को सब जातक याद करने पड़ते हैं। इस में १०। १२ वर्ष लगजाते हैं क्योंकिपहिले कई वर्षों तक संस्कृत रटना पड़ता है, आप तो ।||) आने की पुस्तक पढ़के उतना ही सीखगये।

राशि स्वामी।

कई कोठे कुंडलियों के ऐसे भी होते हैं जिन में कोई ग्रह नहीं होते केवल राशि का अंक होता है, उन राशियों का स्वामी उस कोठे में समझना चाहिये, उसका फल जंत्री में देखलो-

मंगल १ और ८ वीं राशि का स्वामी है.
बुध ३ और ६ का.
बृहस्पति ९ और १२ का.
शुक्र २ और ७ का.
शनि १० और ११ का.
चन्द्रमा ४ (कर्क) का.
सूर्य्य ५ सिंह का.

मित्रता।

ग्रहों में मित्रता हो तो फल बहुत अधिक हो, शत्रुता हो तो फल नष्टहो।

ग्रह	मित्र	शत्रु	सामान्य
सूर्य	चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति,	शुक्र, शनि	बुध
चंद्रमा	सूर्य, बुध		शनि, मंगल, बृहस्पति, शुक्र
मंगल	सूर्य, चंद्र, बृह०	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चंद्रमा	शनि, मंगल, बृह०
बृहस्पति	सूर्य, चंद्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	बुध	सूर्य, चंद्र	मंगल, बृहस्पति
शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चंद्र, मंगल	बृहस्पति
राहु, केतु	(शनि के अनुसार)		

उच्च नीच ।

उच्च के ग्रह से फल बहुत बढजाता है, नीचका ग्रह अच्छा नहीं है, ग्रह उच्च नीच इन राशियों में होते हैं, उच्च राशिमें ६ जोड़ने से नीच राशि होती है, १२ में अधिक होय तो १२ घटादो।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहुकेतु
उच्च	१	२	१०	६	४	१२	७	३
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	९

स्वक्षेत्र ।

यदि ग्रह उस राशीमें हो जिस राशि का स्वामी वही ग्रह है तो फल बहुत उत्तम होय। शत्रु क्षेत्रमें फल कमहोय।

दृष्टि ।

सन्मुख अर्थात् उस कोठे को गिनकर सातवें कोठे में पूर्ण दृष्टि होती है। शनि तीसरे और दसवें स्थान को पूर्णदृष्टि से देखते हैं । बृहस्पति नवें और पांचवें को। इसी प्रकार एक चरण और दूसरे चरण से भी ग्रह देखते हैं, जिनका वर्णन करता तो यहपुस्तक बहुत बढ़जाती। पूर्णदृष्टि से फल अधिक होता है।

शुक्लपक्ष का चंद्र फल बढ़ाताहै, कृष्णपक्ष का चंद्र पाप ग्रह है। इन्हीं सब बातों का जोड़ करके ग्रहों का बलाबल विचारा जाता है ॥

बारहवां अध्याय ।

और विचित्रता ।

इतनी विचित्रता करने से भी यवनज्योतिष का काम ठीक२ न चला और २ प्रकार की बातैं जोडते गये स्थानका स्वामी कैसे कोठेमें गयाहै इसका भी विचार हुवा।जैसे कि पाँचवां कोठा लड़कोंकाहै इसका स्वामी ६(शत्रु)वा ८(मृत्यु) वा १२ (व्यय) कोठोंमें हों तो लड़के मरजावें ११ (लाभ-स्थान)में हों तो बढ़ैं,इसी प्रकार और कोठे के स्वामियों का भी विचार होता है । थोड़ा ही समय हुवा है कि एक और भेद बढाया गया ग्रहों की (१) खड़े होने की (२) बैठने (३) सोनेकी (४) भोजन (५) नृत्य (६) क्रीड़ा की अवस्था का विचार हुवा जिनका फल भिन्न २ है । इस प्रकार फलादेश ६ गुने और बढ़गये और फलित-वाले को झूटे बनने का डर न रहा ।

फिर १ से पांच ग्रहोंके एक राशि में होने के फलका बिचार हुवा यदि चन्द्रमा के साथ पापग्रह हो और बृहस्पति की दृष्टि न हो तो जारपुत्र समझना, सूर्य बृह-स्पति और चन्द्र नीच के हों तो जारजात हो इत्यादि छैसौ योग लिखे गये।इनका वर्णन करना इसपुस्तकमें वृथा होगा।जो लोग अबभी यवनज्योतिष का विश्वास क-रते हैं कृपा करके अपनी और अपने सब कुटुम्बियों की जन्मपत्री मेरे पास भेजैं तो मैं श्लोक समेत योगों का फल लिख भेजूंगा, कोई गुप्त बात निकली तो मनमें र-क्खूंगा,भेद प्रकाश न करूंगा ॥

तेरहवां अध्याय।

ताजक।

ताजक से वर्षफल दशा इत्यादि बनाये जाते हैं। ताजक नीलकण्ठी विख्यात है, यह फारसी से निकला है। और इस में 'सहाम्' से गिनती भी है जो फारसी का शब्द है। वर्षफल के लिये वर्ष कुण्डली बनाते हैं। वर्षकुण्डली उसी रीति से बनती है जिस रीति से जन्म-कुण्डली बनती है। वर्ष का लग्न वही होती है जबकि सूर्य उसी स्थानपर आगया हो जहां कि वह जन्म के समय था। इस के लिये कुछ गणित का अभ्यास चाहिये पर कुछ भी कठिन नहीं है। जब कुण्डली में ग्रह पंचांग देखकर रक्खे जाते हैं और उसका फल उसी रीति से बतलाया जाता है जैसा कि जातक के अध्याय में कहा है।

दशा दो प्रकार की होती हैं। एक विंशोत्तरी, दूसरी योगिनी। योगिनी ८ हैं मंगला, पिंगला, धान्या, संकटा इत्यादि। १ बर्षतक मंगला, २ वर्ष तक पिंगला, ३वर्षतक धान्या इसी प्रकार घूम फिरके फिर येही योगिनी अपना फल दिखाती हैं। विंशोत्तरी अष्टोत्तरी रीतियों में ग्रह बुध शुक्र इत्यादि के भी इसी प्रकार वर्ष नियत हैं। इन वर्षों को दशा कहते हैं फिर प्रत्येक दशाकी इतनी ही अन्तर्दशा अर्थात् भाग हैं जो इन्हीं नामों से कही जाती हैं। जब संकटा में संकटा का अंतर आया या शनि दशा में शनि का अन्तर आया तो कहदो कि मृत्यु, बन्धन, नौकरी छूटना, स्त्री का मरना इत्यादि भयंकर बातें होंगी, भलीदशा में भला अन्तर आया तो उत्तम फल कह देना चाहिये, इन बातों को तूल देने में कोई लाभ नहीं।

सूर्य,मंगल बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं। शुक्र चंद्रमा राहु स्त्री ग्रह हैं, बुध और शनि नपुंसक हैं, जब पांचवें कोठे का स्वामी वा पांचवें घर में पुरुष ग्रह होयँ तो लड़के बढ़ैं, स्त्री ग्रह होंय तो लड़की कहना चाहिये, नपुंसक होयँ तो लड़के लड़की। ऐसे ही तीसरे कोठे में पुरुषग्रह होयँ तो भाई, स्त्रीग्रह होयँ तो बहन कहना चाहिये। इन कोठों के ग्रह बलवान् वा शुभ हों तो ये बचैं, अशुभ वा बलहीन हों तो ये मरैं॥

चौदहवां अध्याय।

यवनज्योतिष की और बातें।

यवनज्योतिष की बातोंका अन्त नहीं है कहांतक लिखूं। सब भले बुरे कामों के लिये भी मुहूर्त्त हैं, चोरी करने के लिये मनुष्य की आयु गिनने की रीति है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो फलित में न आवै, जब शिष्य सब पढ चुका तो उसे यह कथा सुनाई जाती है।

एक राजाने अपने बेटे को ज्योतिष पढने भेजा, जब वह पढचुका तो राजाने अपनी अँगूठी मुट्ठी में बंद की और पूछा कि बेटे हाथ में क्या है। उसने कहाकि गोल है उस में पत्थर भी है। राजाने कहा क्याहै? बेटेने कहा चक्की का पाट, राजाने कहा बेटे तूने पढ़ा है गुणा नहीं अर्थात् पुस्तक के ही भरोसे मत रहो।

प्रश्न करने के लिये प्रश्न समय की कुंडली बनाई जाती है और आधा फल कहा जाता है। इसके बड़े १ नियम हैं। प्रश्नकर्ता दाहिने बैठे तो यह कहो, बायें बैठे तो ऐसा कहो, ऊपर देखै तो यह कहो, नीचै देखै तो यह कहो इत्यादि। इस छोटी पुस्तक में ऐसी बातैं कहांतक भरैं॥

पन्द्रहवां अध्याय।

जन्म।

जन्मपत्री में पहिले संवत्सर मास पक्ष तिथि वार इत्यादि लिखते हैं फिर उनका फल भी लिखते हैं। जैसे जो इतवार को जन्म होय तो पित्तदेह वाला, सुन्दर गंम्भीर और चालाक हो,६० वर्ष की आयु हो। सोमवार का जन्म लेने वाला। विद्यावान् चतुर भोगी भले स्वभाव का हो,आयु ६४ वर्ष । मंगल के दिन धनी कठोर मूर्ख नास्तिक हो,आयु७०वर्ष। बुधके दिन पठित धर्मात्मा धनी आलसी दर्शनीय हो, आयु १०० वर्ष। वृहस्पति को जन्म लेने वाला पठित धर्मात्मा बड़े परिवार वाला होता है,आयु ९० वर्ष। शुक्र के दिन पठित धर्मात्मा धनी वातविकार वाला,आयु ६० वर्ष। शनिश्चर को स्वार्थी राग द्वेषी जातिपतित मनुष्य जन्मता है,आयु १०४ वर्ष।

इसी प्रकार संवत्सर मास तिथि नक्षत्र और राशियों के फलहैं कहाँ तक लिखें प्रत्येक नक्षत्र के लिये अलग२ अक्षर हैं, इन्हीं अक्षरों से नामकरणके दिन नाम रक्खा जाता है॥

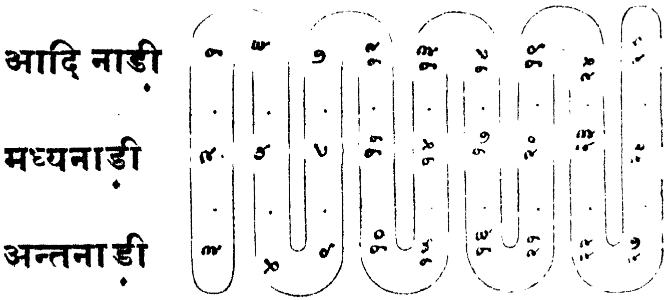
नक्षत्र फल।

ज्येष्ठा में जन्म होयतो जेठ मरै। मूल में जन्म होय तो श्वसुर मरै। अश्लेषा में सास मरै। विशाखा में देवर मरै। रेवती के प्रथम चरण में जेठ मरै। दूसरे चरण में श्वसुर मरै, तीसरे में सास मरै। चौथे चरण में देवर मरै। ऐसी लड़की को कौन लेजायगा अपना मरना वा स्त्री वा पुत्रों का मरना कौन चाहता है। लड़की क्या हुई सांपहुई। वही विपत्ति लड़के को भी भोगनी पड़तीहै॥

सोलहवां अध्याय।

विवाहदोष।

विवाह में ये दोष वर्जित हैं। (१) नाड़ी वेध, इस में २७ नक्षत्र इस प्रकार सांप की तरह लिखे जाते हैं। जिस वर कन्या के नक्षत्र पहिली पंक्ति में आते हैं उन की आदि नाड़ी होती है, दूसरी पंक्ति में मध्य नाड़ी, तीसरी में अन्त्य नाड़ी होती है। जैसे कि लड़के लड़की का नक्षत्र १ और ६ वा ७ वा २४ वा २५ इत्यादि हों तो आदि नाड़ीवेध होगया, आदि नाड़ी में वर की १०० वर्ष के भीतर मृत्यु होती है, मध्यनाड़ी में दोनों की और अन्त्य नाड़ी में कन्या की.



इसप्रकार ½ लड़कों से साम्य नहीं होसक्ता। बंगाल में इसीप्रकार कोई ४ वा ५ नाड़ियां बनालेते हैं॥

(२) षटकाष्टक-वर और कन्या की राशि आपस में छठी और ८ वीं न हों, नहीं तो १०० बर्ष भीतर मृत्यु होगी। जैसे मेष से कन्या ६ छटी है, वृश्चिक ८ है, १। ६। ८ राशियों का षटकाष्टक होता है। ऐसे ही २।७। ९ अथवा ३।८।१० इत्यादि।

(३) द्विर्द्वादश-वर कन्या की राशि आपस में २

और ११ की दूरीपर नहों, जैसे १ राशि का ४ और २ राशियों से छिद्वादश दोष होता है। फल घोर दरिद्र ॥

(४) नवपंचक-ये राशि आपस में ९ और पांच की दूरी पर नहों, जैसे १।५।९ वा २।६।१० वा ३। ७।११ इत्यादि। फल सन्तान नाश ॥

(५) वर्ण-जिनकी राशि ४, ८, १२ हैं वे ब्राह्मण हैं, १।५।९। की क्षत्री, ३।७।११ की वैश्य २।६। १० शूद्र हैं। ऊंचे वर्ण की स्त्रीका विवाह नीचे वर्ण से नहीं होसक्ता। फल १०० वर्ष भीतर विधवा होगी।

(६) वश्य-किसी राशि के मनुष्य दोपाये माने गये हैं और किसी के चौपाये जानवर (कैसा अच्छा होता कि राशि के बदले उनकी बुद्धि देखकर जानवर गिनते) किसी राशि के कीडे और जलचर मानलिये जाते हैं। इनकी परस्पर मित्रता और शत्रुता का विचार होना चाहिये॥

(७) योनि-२७ नक्षत्रों में जो लोग जन्म लेते हैं वे घोडे,हाथी भेड,सांप,कुत्ते,बिल्ली,चूहे,गधे, गाय,बंदर, वाघ इत्यादि २७ योनि समझी जाती हैं। परस्पर शत्रुता का विचार होता है जैसे घोडा, भैंस, हाथी, सिंह,चूहा, बिल्ली योनि वालों का व्याह आपस में नहीं होता। भेड, कुत्ता, गधा, इत्यादि इनकी बुद्धि देखकर बनाया जाता तो क्या ही अच्छा होता बिना अपराध बनाये जाते हैं॥

(८) गण-वर कन्या का एक गण होना चाहिये, वर राक्षसगण हो, कन्या देवगण हो तो वर सौ वर्ष भीतर मरजाता है। १।५।७।८।१३।१५।१७।२२।

१८ नक्षत्रों का देवगण, २। ४। ६। ११। १२। २०। २१।२२। २६।२७। का मनुष्यगण औरों का राक्षसगण॥

(९) शुभ अशुभ तारा का विचार होता है।

(१०) मंगल-कन्या के १।४।७।८।१२। कोठे में हो तो सौ वर्ष भीतर वर मरजाय। वर के हो तो १०० वर्ष भीतर कन्या मरै॥

(११) चंद्र के सन्मुख पापग्रह हों तो १०० वर्ष भीतर वर मरै।

(१२) १ और ७ कोठे में पापग्रह हों तो वर मरै।

(१३) सातवें कोठे का स्वामी ६।८। वा १२ वें कोठे में होय तो पति मरै॥

कहांतक लिखें, ऐसा जानपडता है कि उन दिनों १ वर के लिये दसहजार कन्या मिलती होंगी और १ कन्या के लिये १० हजार वर मिलजाते होंगे तभी तो इतनी बातों की विधि मिलती होगी। अब तो इतनी विधि मिलाना असंभव है और ज्योतिषीजी महाराज इन नियमों को आप ही छोडते जारहे हैं। कोई पंडित मुझे एक भी ऐसा साम्य दिखा देवै जिस में ये सब मिलते हों। अब केवल नाड़ीवेध षट्काष्टक का विचार कियाजाता है।

इस कठिनता को देखकर ज्योतिषियों ने कहदिया कि राजाओं के लिये गणदोष देखना चाहिये और ब्राह्मण को नाडीवेध, इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यही है कि राजाओं को एक दो राजकन्या मिलीं तो बहुत षटराग चल नहीं सक्ता। ब्राह्मण को बहुतेरी कन्या हैं दिन भर जन्मपत्री मिलाया करे। यह अर्थ कदापि

नहीं है कि ब्राह्मण का प्राण राजा के प्राण से अधिक है॥

मैंने बहुत वर्षों तक ज्योतिष की खोज की इसलिये कई लोगोंने मेरे पास जन्मपत्रियां भेजीं कि इस लडकी के ग्रह और नक्षत्र मेरे लिये अथवा मेरे लडकों के लिये अशुभ तो नहीं हैं। अपने देश की यह दशा देखकर मुझे बडा ही दुःख हुवा, क्या ये लडकियां सांप थीं जो जाते ही अपने श्वसुर वा सास के पांव में पैलागें कहते ही डँस देतीं। कितनी ही लडकियां मूलनक्षत्र में जन्म लेने के कारण गांव में सौंप दी जाती हैं। और मरजाती हैं जो बच भी गई तो जिस लडके का बाप बचा हो उस से उसका विवाह नहीं होसक्ता। कहीं जिस लडके के भाई हों उससे विवाह नहीं होता, योंही किसी दरिद्री के देदी जाती हैं। अथवा किसी बूढे के दूसरे विवाह में दीजाती है। दो सौतों का जो डाह होता है वही उनके लडकों में भी फैलता है और कई पीढ़ियों तक बना रहता है। इसी फूट से हिन्दुस्तानका नाश लगा क्या ही अच्छा होता कि जब लार्डबेन्टिकसाहिब गवर्नर जनरल ने सती होना बंद करादिया था, उसी समय विलायत का नियम यहां भी चलादेते कि दो विवाह करने वाले को सात वर्ष की कैद होगी, कोई क्रिस्तान वा अंग्रेज दो विवाह हिन्दुस्तान में भी करै तो (४९४ दफे ताजीरातहिन्द के अनुसार) सात वर्ष की कैद होती है। उस समय जो करदेते सो ही होजाता अब तो करना कठिनहै। यह नियम हिन्दुस्तान में चलजाता तो हिन्दुस्तान की स्त्रियों का कैसा भला होता और इनका भला होने से हमारा भला था। अब

तो सत्रह वर्ष की बहू होगई और बालक न हुवा तो सास ननद कहने लगजाती हैं कि इस बांझ बहू से क्या करैं, कहीं और लडकी ढूंढो इस से घर न बसैगा।

जिन लोगों ने ज्योतिष पूरा पढा है वे जानते हैं कि नाडीवेध षट्काष्टक इत्यादि में विवाह का निषेधनहींहै।

षट्काष्टकमे गोमिथनं प्रदद्यात्, कांस्यं सरूप्यं नवपंचमे च । नड्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं, द्विर्द्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च ॥

जब नाडीवेध वा षट्काष्टकमें विवाह कोई करे तो गोदान वा सुवर्णदान करै तो कोई दोष नहीं । पर सामान्य ज्योतिषी इतना कहीं पढते हैं । मुहूर्तचिन्तामणि रटते रटते उनका जन्म बीतता है, इन बातों को वे क्या जानें ॥

श्रीः ।

तीसरा भाग

पहिला अध्याय ।

विवाहकी आपत्तियां।

हमारे पाठकगण यवनज्योतिष को पढ़ते २ थक गये होंगे और अकडाने लगे होंगे। उन्हे तो अपनी पाठशाला के दिन याद आते होंगे। अब उनके विनोद के लिये दो अध्याय नाटक के तौरपर लिखे देता हूँ अब जिससे यवनज्योतिष के समझने में सहायता मिलै।

अच्छा अब आपको हम एक ऐसी कोठरी में लेजाते हैं जहां कि नरपशुजी और उनकी स्त्री बडे भारी सोच में पडे हैं मानो कि प्रलय होगया है और उनकी लडकी जीवन्ती एक कोने में गुडिया खिलारही है। नरपशु जिवन्ती के सिर पर हाथ मारकर कहते हैं। हाय! इस अभागिन ने मेरे कुल को कलङ्क लगाया आज तक हमारे कुल में किसी लड़की का विवाह आठ वर्ष पीछे नहीं हुवा था। इसने हमारी प्रतिष्ठा (इज्जत) मट्टी में मिलादी देख! मेरा शरीर सूख गया है तीन महीने से रातको नीद,नहीं दिनमें भूख नहीं। नगर में ऐसा एक भी लड़का नहीं जिसका जन्मपत्र मैं नहीं लाया। जन्मपत्रों से घर भरगया पर विधि किसी से भी नहीं मिलती॥

स्त्री-क्या ये लड़के धनी हैं और गहना पत्ता बहुत लायेंगे।



नरपशु--क्या तुझे बावले कुत्ते ने काट खाया है जो गहने पत्ते को पूछती है। क्या इस के ग्रह ऐसे उच्च पड़े हैं जो गहना पहने। अरी इसको एक बार जुआर बाजरे की रूखी सूखी रोटी भी मिलजाय तो धन्यभाग। तू गहने को कहती है किसका गहना, इसके ग्रह तो ऐसे खोटे हैं कि मारे जन्मपत्रों के घर भरदिया, पर विधि किसी से नहीं मिलती॥

स्त्री—अभागिन! अभागिन!!

नरपशु-आहा!! जीवन्ती ग्यौरस साल मरजाती तो क्या ही अच्छा होता। उस साल क्यों मैंने असिस्टेन्ट सर्जन को ४) फीस देकर इसे बचाया।अब तो एक धेला भी मैं इसके लिये खर्च न करूं। लडकी क्या हुई, कुरकी हुई, सत्यानाश लगावेगी। मरजाती तो क्या ही अच्छा होता॥

स्त्री—आंचल से आंसू पोंछती हुई कहती है। अरे महाराज! यह पापकी बात क्यों कहते हो। मेरी जीवन्तीसी लडकी तो पृथ्वी में दूसरी न होगी। देखो इस के होंठ शिंगरफ़ को मात करते हैं और पतले इतने हैं कि मैंने और किसीके भी न देखे। देखो परसों ही देवकी का विवाह हरिदास के साथ हुवा, गहने पाते से लद रही थी। देवकी के होंठ देखो जैसे मालपुवे। नाक देखो जैसे बडी का दाना। रंग ऐसा सांवला है, जिसकी कुछ उपमा ही नहीं है। मैं तो जीवन्तीकी नाक देखती ही रहजाती हूं, जो कि चाकू की धारसी ढलवां है। दांत क्या हैं, मानो सफेद मोती की लडियां। लड़की क्या है? खिलौना है, संगमर्मर की मूर्त्ति है। कैसी गोरी है और शरीर इसका कैसा कोमल है। पान

की पीक निगले तो बाहर गले में दिखाई दे। मुझे तो यह हंसीआती है कि और लोग अपनी भद्दी लड़कियों को कैसे गोद में खिलाते होंगे। मुझे तो उन्हें देखते ही घिन आती है। ऐसी लड़कियां मेरी होतीं तो मैं कुँवे में डालदेती। अरे महाराज! ऐसी सुन्दर लडकी का पाप क्यों लेते हो। यह तो किसी योग्य पुरुषको मिलजाय तो इसकी पूजाहो। जिस समय यह सोने और जडाऊ गहने से लदेगी, सब लोग इसको ही देखते रह जायेंगे। मैंने पडोस में तो क्या सारे नगर में ऐसी और कोई लडकी नहीं देखी।

नरपशु—अरी! चल परे हो, मैं क्या इसके रूप का चाटूं। लड़की के रूप से क्या करना है, उसका तो भाग्य अच्छा चाहिये। इस से तो काली लड़की होती, आंखों की जगह दो गढे होते, नाक होती जैसे अंजीर का दाना, पर ग्रह अच्छे होते, साम्य होजाता॥

स्त्री—महाराज! आप खाली हाथ ज्योतिषी के पास जाते हो, विधि कैसे लगेगी?

नरपशु--मैं तो खाली हाथ कभी नहीं जाता जब कुण्डली लेगया तो फूल सुपारी साथ लेजाता हूं, विना फूल कभी नहीं जाता।

स्त्री-महाराज फूल सूंघते २ ज्योतिषीजी की नाक में फोड़ी निकलआई है, उन्हें चांदी के फूल चाहियें, जिन में महारानी विक्टोरिया का सिक्का खुदा रहता है। आप तो बुद्धि के शत्रु हैं, बुद्धि के पीछे लठ लिये दौड़ते हो। पांच रुपये स्वामी लक्ष्मीदासजी के पैरों में रखदो, वे सब ग्रहों को आप ही ठीक करदेते हैं। कहां का झगड़ा

लगाया है। अपनी २ आयु लेकर सभी आये हैं,दूसरे के ग्रहों से कौन मरता है। रुपये गिनदो तो स्वामीजी भाव गिनकर ठीक मिलादेंगे॥

नरपशु-अरी पापिन चण्डालिनी ! तुझे क्या हुवा, जो ऐसे पापकी बातें कहती है। क्या मैं ज्योतिष नहीं जानता। राम राम मैं ऐसा घोर पाप कभी न करूंगा। क्या हमारे बाप दादा मूर्ख थे जो ज्योतिष को मानते चले आये हैं॥

स्त्री-अरे महाराज ! क्या आपके बाप मैंने नहीं देखे ये बातें और किसी से कहना, हां मेरे बाप तो बड़े बुद्धिमान थे। वे पांच रुपये ज्योतिषीजी के पांवों में रखदेते थे। कभी कोई झगड़ा नहीं होता था। न आपने ज्योतिषीजी को एक पैसा दिया, न आपके बापने दिया, केवल ज्योतिषीजीके हाथ जोड़दिये। हाथ जोड़ने से भी किसी का पेट भरता है। आपके लिये पख न लगायेंगे तो और किसके लिये लगायेंगे। रुपया देने में तो प्राण निकलता है, उल्टी गाली मेरी जीवन्ती को देते हो। ऐसी कठोर बात आपके मुंह से कैसे निकलती है। मनुष्य बड़े ही कठोरचित्त होते हैं। मैं तो जीवन्ती के होने का कष्ट अभीतक नहीं भूली, कैसे दुःख से पाली है। लोग सड़ी गली लड़कियों को गोद में खिलाते हैं और कैसा लाड प्यार करते हैं, आप कहते हैं वह मरजाती तो अच्छा होता। यह कहकर रोने लगी॥

नरपशु—देख तो यह जन्मपत्री देवी की है, देवी के बाप के दो गांव हैं, इनके धन का क्या ठिकाना है। देवी का विवाह होगया है पर उसकी दुलहिन काली

है। देवी उस से घिन करता है और वह ऐसा धनी है कि पांचा विवाह करसकता है॥

स्त्री—तो क्या पांचों को गहना देसकेगा ?

नरपशु—तुझे गहने ही की सूझती है अरी वह तो हम तुमको मोल लेसकताहै। पर अब बिखरे दूध के लिये क्या रोना। देवी का मूल नक्षत्र मेरे लिये भला नहीं। अरी! यह न समझना कि मैं डरपोक हूं, मरने से डरता हूं, मरने से क्या डरना क्या दोबार कोई मरता है। मैं तो काल से भी न डरूं, हजार मनुष्य तलवार लेकर आजांय तो मेरा क्या करसकते हैं॥

जाको राखे साइयां, मार सकै नहिं कोय।
बाल न बांका करसके, जो जग बैरी होय॥

क्या कोई बिना मौत मरसकता है। मनुष्य विष निगलजाय तौ भी नहीं मरसकता। देखो तो सरकार को क्या होगया है जो महामारी के कीड़ों को मारने के लिये लाखों रुपये फूंकरही है। जिसकी मौत नहीं आई उसका महामारी क्या करसकती है हम से कोई कहै तो हम उन कीड़ों में लोट पोट होजावैं। हम क्या मरने से डरते हैं, जो आयु ब्रह्माजी ने रचदी क्या वह टलसकती है? पर सच बात यह है कि मैं अपने ग्रहों से मरना चाहता हूं, दूसरे के नक्षत्रों से मरना नहीं चाहता। यह मत समझना कि मैं डरगया, डर तो मेरे पास नहीं फटकने पाता। क्या तू मुझे डरपोक समझती है और वीर नहीं समझती। वह दिन भूलगई है जब सुलफे की चिलम तेरे पांव से लौटपड़ी थी तो तुझे कितना मारा था, जीवन्ती की क्या गति की थी, थोड़ा और मारता तो उसके प्राण निकलजाते॥

स्त्री-उस मारको न मैं भूली न जीवन्ती ही भूली। आपतो मुझसे क्या जीवन्तीसे भी नहीं डरते। आपकी धीरता में हम दोनों को कुछभी शंका नहीं है। आप बड़े बहादुर हैं। मेरा राज होता तो उसी दिन आपको रायबहादुर बनादेती। पर महाराज आप काल से भी नहीं डरते तो मूल नक्षत्र से क्यों डरगये॥

नरपशुजी-तभी तो कहते हैं कि स्त्रीको बुद्धि नहीं होती। बन्दूक की मार से क्या होता है मनुष्य मरजाता है। क्या दो बार मरना है। आयु जो पूरी न हुई तो क्या मरना खेल होरहा है। पर मैंने बन्दूक की मार देखली, तलवार चाबुक लट्ठ सोंटा इत्यादि सबहीकी मार देखली पर न जानै नक्षत्र कैसी बेढब मार मारते हैं। फिरभी अपने मरने से नहीं डरता तेरे रांड होने का डर है। परसों बीच बाजार में देवसिंह ने नाहक मुझे दो कोड़े मारे और मेरे मुंह में थूक दिया। मैं भीतर भाग आया और मुंह धोलिया क्योंकि मुझे तेरेरांड होने का डरलगा। बुद्धि इसे कहते हैं थोड़ा पानी तो खरच हुवा पर तू रांड होने से तो बची। कोई बुद्धिहीन होता तो वहीं लड़ पड़ता और अपनी स्त्रीकी काली चूडियोंको जोखिम में डालता॥

यह कुंडली शिब्बूकी है, शिब्बूका बाप कहता है कि वह वकील बनेगा। विकालत के समान आज कल कोई दूसरी वस्तु नहीं। वकील भूँखा कभी नहीं रहता॥

स्त्री-क्या उसे अजीर्ण रहता है?

नरपशु—नहीं, नहीं और कमाते हैं, वकील खाता है। दो मनुष्यों को लड़ादिया, उनकी सम्पत्ति आपखाली। जब कोई भी न लड़े तो अपनी पुस्तकें गिरवीं रखदीं

क्योंकि उन के बाप उन के लिये हजारों पुस्तक ले देते हैं।

किसी वकील ने एक मित्र को अपनी तसबीर दिखलाई। मित्रने कहा यह तो किसी किसान की तसवीर है वकील की नहीं। वकील की तसवीर होती तो इसके हाथ अपनी जेब में न होते और लोगोंकी जेब में होते॥

स्त्री—सिर हिलाकर अभागिन! अभागिन!!

नरपशु-देख यह कुण्डली रामदयाल मुख्तार के लड़केकी है। मुख्तार एक अद्भुत जन्तु है। वह वकील की भांति कानूनकी पुस्तकें रटते २ अपना मगज नहीं सुखाता और न उसे बड़े दामों के चशमे लेने पड़ते हैं, क्योंकि वह अपनी आंख नहीं बिगाड़ता। इसलिये ये लोगअच्छा शिकार मारते हैं। एकबार यज्ञदत्त इसके पास गया और अपने अभियोग (मुकदमे) का वर्णन किया। तो रामदयाल रोदिया और कहा अरे! तेरा बाप तो मेरा बड़ा ही मित्र था, मैं उसका नाम भूलगया। यज्ञदत्त ने कहा कि उसका नाम गंगादास था। रामदयाल ने और आंसू छोड़े और कहा अरे, तेरे ऊपर यह क्या बिपत्ति आई, अब तो मेरेऊपर आगई। गंगादास तो मेरा परममित्र था। फिर कहा भाई! यह कलियुग है बिना रुपये के काम नहीं चलता। सरिश्तेदारजी को २५) रुपये देने पड़ेंगे,नहीं तो वे काम बिगाड़देंगे। १०) मुंशी को और ५) नाज़िर को देने ही पड़ेंगे। मैं तो एक पैसा भी अपने लिये नहीं लेता, क्यों कि यह तेरा काम नहीं,मेरा ही काम है। मैं तो ४-५ रुपये अपनी गांठ से और लगा दूंगा। जब यज्ञदत्त ने ये सब रुपये गिन दिये तो चपरासियोंके और पटवारीके लियेभी रुपये

मांगे। १) बाकी रहगया था, सो रामदयालने कहा यह मेरे बच्चों को दे दो, बिचारे मिठाई खायेंगे। रामदयाल के पास कुछ भी न होगा तो साठ सत्तर हज़ार होंगे। इसके लड़के का ज्येष्ठा नक्षत्र है, उसका फल है कि दुलहिन का बड़ा भाई मरजाय॥

स्त्री–अरे! इस जन्मपत्र को फाड़दो, दूर करो, मेरे लाल के लिये इस सांप को मत लाओ।

नरपशु—यह बुधू का जन्मपत्र है, बुधू तो पागल जैसा है और रोगी भी है, पर उसका बाप डाक्टर है। उस के पास इतने रुपये होगये हैं, जितने इस पीपल के पेड़ में पत्ते भी न हों। उसका हाथ चीरफाड़ में बड़ा अच्छा है बहुतेरे रोगी चीरफाड़ के समय मरजाते हैं, पर उनका रोग तो निकलजाता है और डाक्टर रोगकी जड़ खोदेता है। जो रोगी मरगये, उन के वारिसों पर दावा करके रुपया लेलेता है। मरगये तो क्या ... रोग तो गया। अगले जन्म में न भोगना पड़ेगा। द... ऐसी अद्भुत देता है कि जवान खाय तो उसे कभी बु... न आय अर्थात् बुढ़ापा आने से पहिले ही मरजाय।

क्या करें इस बुधू के ग्रह कुछ ऐसे ही हैं, जीवन्त ... ग्रह बलवान् हैं। मैं तो विवाह करभी देता, देखी जा... दो चार पैसे ब्राह्मण को दान दे डालता, पर डाक्टर ब... सीढी है। उसे मना भी लेता तो डाक्टरनी उसकी भं... दादी है। किसी भांति इन दोनों को भी बश में करलेता पर डाक्टरका बाप जब सुनेगा तो विषखाकर मरजायगा॥

स्त्री—अभागिन! अभागिन!!

नरपशु–देख! यह विष्णु का जन्मपत्र है, उसका

बाप क्षय से मरा और वह भी कुछ क्षयी सा दुबला पतला है । पर इस से क्या ? लड़की के सौभाग्य के लिये ग्रह अच्छे होते तो विष्णु का क्षय भी अच्छा होजाता। इसकी तो कुछ भी चिन्ता न थी, पर नाड़ीवेध होगया । यों तो कर्म की रेखा नहीं मिटती, ब्रह्माने जो आयु रची है, घट बढ़ नहीं सकती । पर क्या करें, जान बूझकर कौन अपनी लड़कीको विधवा बनाना चाहेगा । हाय ! क्या करूं ! कहां जाऊं ? मैं मरजाता तो अच्छा होता । पर मैं दूसरे के नक्षत्र से मरना नहीं चाहता । देखो इस अभागिन छोकरी को । इसकी चिन्ता मुझे फूंके डालती है और इसे कुछ भी तो चिन्ता नहीं, गुडिया खिलाती है । मानों मेरेकटे घावों पर नमक मिर्च डाल रही है । हमने इसको दूध देना बन्द कर दिया, नमव [illegible] देते हैं । रोटी तक कम करदी तौभी मोटी और [illegible] होती जारही है । इतना मांस हमारे लड़के शंक[illegible] क्यों नहीं लगता, वह सूखता जा रहा है ॥

आंसू पोंछती है और नर पशु गाता है ।

[illegible]क—हाय जीवन्ती तोको काल न आयो ॥
[illegible] देश की पत्री मंगाई, तौभी पार न पायो ।
[illegible]वही तिहारो बदन निहारो, मांस आपनो खायो ॥
[illegible]ार रुपये डाक्टर को दीने, समझ २ पछतायो ।
हाय जीवन्ती० ॥

जीवन्ती—अरी मा ! बब्बाजी गीत गारहे हैं । जब गाते थे तब मुझ से ढोलक मंगाते थे, आज अभीतक नहीं मांगी । लो मैं दौड़कर लाती हूं । यह भोलापन

और प्रेम देखकर नरपशु से रहा न गया । आंसुओं की धारा निकलने लगी, फिर आंसू पोंछ कर गाता है ॥

टेक–ऊधोजी कर्मन की गति न्यारी ।

उज्ज्वल पक्षी बगुला बनायो, कोयल किस विधि कारी । नीके नैन मृगन को दीने, बन बन फिरत उजारी ॥ मूरख २ राज करतहैं, पण्डित फिरैं भिखारी । ऊधोजी० ॥

फिर गद्दर आगया । दोनों आंसू पोंछने लगे ।

जो मैं जानता योंदुखदेगी। जीवन्ती तुझसे क्योंकहता॥
जीवन्ती जीती कहलावे । मरन्ती नाम तेरा धरता ॥
हायजीवन्ती तू तो मर न गई।अरेजीवन्तीतूतोशूलभई॥

अब चलिये, एक और स्थान में आपको हम लेजाते हैं। एक कोठरी में स्वामी लक्ष्मीदासजी म[illegible] आंखें मून्दकर ध्यान में बैठेहैं । एक रुद्राक्ष की [illegible] हाथ में है। बन्देदीन वहां पहुंचे और स्वामीजी [illegible] चरणों में लम्बे होगये। आध घंटे में स्वामीजी ने आंख खोली और पूछा कि कुशल तो है। बन्देदीन ने कहा हां महाराज! आपकी दया से सब कुशल है। ये जन्मपत्रियां लाया हूं, आप मेरेलिये एक लडकी छांटदें। देखिये मैं केवल ६६ वर्ष का हूं और मेरी तीसरी स्त्री भी मरगई है, अब मैं कहां जाऊं। जिसकी स्त्री नहीं, उसका कोई नहीं। अब मेरी सम्पत्ति का कौन भोग करेगा । दस वर्ष भी नहीं हुवे कि मैंने २५०) लगाकर नया घर बनाया है।मेरे तीन बैल हैं, दो भैंस हैं, सात बकरियां

हैं, एक गाय दूध देती है। मेरे मरनेके पीछे इस सम्पत्ति का मालिक कौन होगा और मेरे मरने के समय कौन रोवेगा? अब आप इन जन्मपत्रियों का विचार करके एक ऐसी लड़की छांटदीजिये कि जिसका सुहाग ऐसा उत्तम हो कि उसके ग्रहों से मेरी आयु बढ़े और मेरा घर फिर बस जाय। मेरी शक्ति तो अब क्षीण होती जाती है, पर उस के ग्रहों से शक्ति आजाय। यही विचार आप कीजिये॥

स्वामीजीने आध घंटे तक विचार किया और उत्तर दिया कि इस लड़की के ग्रह सुहाग को अच्छे हैं, पर तुम्हारा नक्षत्र ऐसा खोटा है कि उसका बाप डर जायगा, क्योंकि तुम्हारा नक्षत्र श्वसुर के लिये अच्छा नहीं है॥

बन्देदीन-अरे महाराज! इस नक्षत्र को आप बदल दें। आप ईश्वर हैं, सब कुछ करसकते हैं। मैं तो ऐसी लड़की चाहता हूं, जिस के सुहाग से मेरी आयु बढै। ६६ वर्ष के मनुष्य में यह लड़कपन नहीं होता है कि श्वसुर के मरने पर रोवे। मैं कभी नहीं रोऊंगा, श्वसुर जावे भाड़ मैं, मुझे उस से क्या प्रेम? आप यही बिचार करदें कि जिस से मेरी आयु बढै, लो यह ५०) आपकी भेंट हैं। आप नक्षत्र ठीक करदें। आज कल बाल काले करनेकी ओषधि (खिजाब) बहुत मिलते हैं, मैं मोल लेलूंगा और कहदूंगा कि ४५ वर्ष का हूं॥

यह कहना था कि स्वामीजी भड़क गये और कहने लगे। रेनीच दुर्बुद्धे! पापिन्! किस घोरपापी ने तुझे जन्म दिया कि ऐसा घोर पाप करता है कि हम जैसे

महात्माओंको रिशवत देता है। रेकपटी निर्लज ! तुझै यह साहस कहां से आया कि मुझ महात्मा वेद पाठी को रुपये का लोभ दिखाने लगा। रेनीच अधम! यदि हम रुपये को चाहते तो अशर्फीहीरा मोती में लोट पोट होते, हमारे आंगन में हीरे जड़े होते। हमारे लिये जैसा पत्थर वैसा रुपया, हम रुपये को क्या समझते हैं। धिक्कार तुझै ॥

बस बन्देदीन बूढ़ा तो कांपगया कि स्वामी महाराज इस घोर पाप के लिये इसको वहींपर भस्म तो न करदें और रुपये पास रखलिये। स्वामीजी के शिष्य लाखों गालियां उस अधर्मी को और उसके बाप को देनेलगे। फिर स्वामीजी बोले, भाई! अब ऐसा पाप मत करना, जो हुवा सो हुवा। हम लोग ऐसा लोभ करते तो मट्टी को सोना बनादेते। हम तेरे रुपये को क्या समझते हैं। पर सुनो, तुम्हारा मन बडा सच्चा है और रुपये साक्षात् लक्ष्मीजी हैं। जिसने रुपये का अनादर किया उसने साक्षात् लक्ष्मीजी को लात मारी। मुझसे यह पाप भी न होसकेगा और तेरा मन भी मैं नहीं दुखाता। भीतर कोठरी मैं मेरे ठाकुरजी हैं। यह रुपया और भी जो कुछ तुझ से बन पडै, ठाकुरजी को चढादे, क्योंकि मैं लक्ष्मीजीको लात नहीं मारना चाहता, पर मैंने तो शपथ लेरक्खी है कि द्रव्य को कभी नहीं छूऊंगा। बंदेदीन बड़ेही प्रसन्न हुवे और भीतर जाकर ठाकुरजीको दूनी भेट चढ़ाई। स्वामीजीने उनसे कह दिया कि हम नक्षत्र को भी मिलादेंगे और लड़की के बाप से भी कहदेंगे कि और किसी से बिधि नहीं लगती ॥

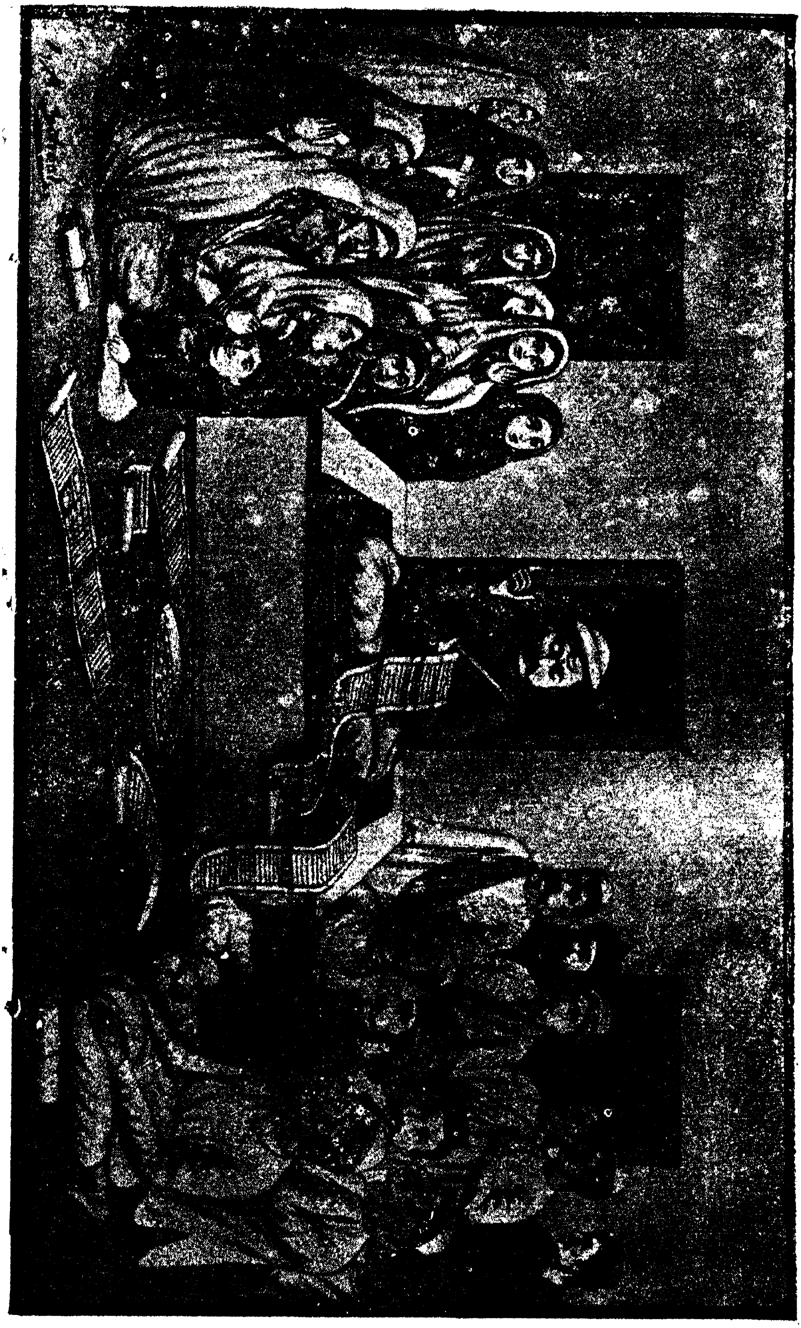
दूसरा अध्याय।

स्वामी रामानन्दजी।

सेठजी की कोठी में आज बड़ा मङ्गल होरहा है। सब पड़ौस की स्त्रियां और बड़े छोटे सब ही वहां जारहे हैं। अहा !! सेठ रामदयाल कैसे भाग्यवान् प्रतापी पुरुष जन्मे हैं। जिनका घर स्वामी रामानन्द जी महाराज ने अपने चरणकमलकी धूलि से पवित्र किया है। सेठजी के पूर्वजन्म के पुण्य आज उदय हुवे। स्वामीजी मंचपर विराजमान हैं। एक थाली में उनकी भेटके रुपये धरे जारहे हैं और स्वामीजी की आरती होरहीहै।

आरती—धन हमरे भागा, धन हमरे भागा।
स्वामीजू घर हमरे आये भाग जागा॥
पितर सात पीढ़िन के क्षण में उद्धारे २।
बेड़ा पार लगायो पापी निस्तारे॥
जयस्वामीजी जयस्वामीजी तुम्हरीजयगावैं२।
चन्दन फूल चढ़ावैं निशिदिन तुम्हेंध्यावैं॥
ब्रह्माविष्णु रुद्र तुमहीहो तुमरी शरणलहैं २।
हम दासनको उबारो तुमरे चरणगहैं॥
जापर कृपा तुम्हारी सो नर तरजावै २।
बन्ध्या पुत्र खिलावै निर्धन धनपावै॥

स्वामीजी ने एक छोटे बालक को गोद में उठाया और बड़े लाड़से चूमनेके मिससे आंख चारों ओर फेरी। यह देखा कि उसके पेट में जले हुवे का चिह्न है। अहा !! यह अद्भुत बालक किसका है? स्वामीजी ने उसके गले



में सोन का गंडा बँधा हुआ भी देख लिया था और बोले कि यह तो बडा ही भाग्यवान् है। बालक की मा प्रसन्नता से फूली न समाई। मन में कहने लगी, अरे! ये तो साक्षात् विष्णु के अवतार हैं। आज तक सब लोगों ने मेरे लडके को दोष लगाया और कहा कि इसी के खोटे ग्रहों के कारण इसका बाप मरा होगा। यह बात झूठ निकली, नहीं तो स्वामीजीमहाराज इस बालक को क्यों चूमते, क्यों इससे ऐसा लाड करते? अरे ये स्वामी नहीं हैं, साक्षात् ईश्वर हैं। झटपट पांच रुपये और लडके की जन्मपत्री लाकर स्वामीजी के चरणों में रखदी। स्वामीजी ने रुपयों की ओर तो न देखा, पर कुछ देर तक जन्मपत्री देखी। अहह!! यह कैसा भाग्यवान् लडका है, यह तो बडे धनी का लडका होगा (सोने का गण्डा तो देखही लियाथा) बालक की मा प्रसन्नता से फूल रही थी। चटपट लडके को गोद में ले लिया। स्वामीजी ने देखा कि वह सफेद चादर ओढ रही है और हाथ में काली चूडी भी नहीं हैं॥

स्वामीजी--पर इस के सुखस्थान को शनैश्चर देखरहे हैं, इसको कुछ कष्ट भी है। इसकी मा अथवा बाप बचपन ही में मरजावै।

सब लोग-हां हां महाराज! इसके बाप को मरे हुवे वर्ष भर तो नहीं हुवा।

स्वामीजी—शनैश्चर का ऐसा ही फल होता है और भी कष्ट इसने पाये होंगे, जैसे अग्नि भय।

सब लोग-महाराज यह तो जलही चुका था, आप के आशीर्वाद से बचगया।

स्वामीजी--इसको पहिले वर्ष और तीसरे वर्ष कष्ट लिखा है।

माता-महाराज! पहिले वर्ष तो बड़े दस्त हुवे और तीसरे वर्ष ज्वर आया।

स्वामीजी-जब यह बालक हुवा होगा तो माताको भी बहुत कष्ट हुवा होगा? और उस समय वहां पांच स्त्रियां होंगीं?

माता-अरे महाराज! वह कष्ट तो मैं अब भी नहीं भूली, पर स्त्रियों की मुझे ठीक २ याद नहीं, अवश्य पांच होंगी। क्या स्वामीजी का कहना कभी झूठ होसक्ता है?

स्वामीजी-इस लड़के की भूख ठीक नहीं होगी? खाता बहुत कम होगा, अपने शरीर के अनुसार भोजन नहीं खाता होगा।

माता—धन्य महाराज! आप तो साक्षात् ईश्वर के अवतार हैं, यह लड़का अन्न तो सूंघता भी नहीं, दूध के कुल्ले करडालता है। मैं नहीं जानती कि इसके प्राण कैसे रहते हैं। क्या कहूं किसी को विश्वास नहीं होता, मैं इसके कम खाने से बड़ी दुःखी हूं, आज आपने यह बात कही॥

स्वामीजी—अरे यह बालक बड़ा ही भाग्यशाली है, पर इसके दो विवाह होंगे, पहिली स्त्री ज्वर से मर-जायगी। दूसरी स्त्री पहिली से भी रूपवती होगी और उसे यह अधिक प्यार करेगा, उसका दास होजायगा। २१ वें, १७ वें, ३३ वें, ३७ वें, और ४४ वें वर्ष में भाग्य और बढेगा, इसकी ८६ वर्ष की आयु है। अरे ऐसे

अद्भुत ग्रह तो मैंने कभी नहीं देखे। इसके शत्रु इसे देखकर जलेंगे, यह बड़ा प्रतापी होगा। ७ वें, ११ वें, १७ वें, २८ वें और १५ वें, वर्ष इसे कष्ट है, परन्तु उस का उपाय कुछ कठिन नहीं। ४) वा ५) में महाकालका यंत्र बनजायगा, इसे पहना देना। मुझे तो इतना समय नहीं मिलता नहीं तो मैं ही बनादेता, किसी औरसे कहना।

बालककी मा का इस समय तक कहां ध्यान था, वह उसकी दूसरी स्त्री का स्वप्न देख रही थी, जिसे स्वामीजीने अधिक रूपवती बतलाया था। उसे यही सोच पड रहा था कि मेरी दूसरी बहू क्या मुझसेभी अधिक गोरी होगी। यदि ऐसा हुवा तो लड़का मेरा कहा नहीं मानेगा, उसी का बैल बनेगा। जब कष्टका वर्णन सुना तो चौंक पडी और स्वामीजी के पांवों में सिर रख दिया। महाराज! मैं विधवा स्त्री हूं, मेरा कौन है? आपही इस अनाथ बालक के बाप हैं, इस के ईश्वर हैं। आप इसपर दया करके आपही यंत्र बना देवें, ये ५) हैं। विधवा स्त्री के गिडगिड़ाने पर स्वामीजी को कुछ दया आई और रुपये धरालिये॥

स्वामीजी जाने कितनी और बातें बतलाते, पर इतने में बालक के चचा रामदयाल की स्त्री बिगडगई और रामदयाल को भला बुरा कहने लगी। क्या तुम पशु हो और तुम्हें कुछभी बुद्धि नहीं। उल्लू का मांस तो तुम्हें किसीने नहीं खिला दिया। अपने लड़के की तुम्हें कुछ भी चिन्ता नहीं, और लोगों को क्या मुंह दिखाओगे? तुम्हें क्या होगया। रामदयाल अपने लड़केकी जन्म-पत्री लाने दौडे तो देखते हैं कि उसकी जन्मपत्री एक

और पण्डितजी के पास विचार को गई है। यह देख स्त्री पुरुष बड़े घबराये। स्त्री को अपने भतीजे और देवरानी पर बडा क्रोध भडक आया। देखो सभी भली भली बातैं इस रांड के लड़के के लिये कहीं, मेरेलाल के लिये कुछ भी नहीं छोडा। देख कैसा यंत्र पहनातीहै। मैं चुपचाप उस यंत्र को चुराकर उस में खाली कागज भरदूंगी। इस रांड के सिर आग लगै, जाने स्वामीजी को मोल लेलिया। अच्छा लड़कोंकी पात्रियां यहां नहीं हैं, तो अपनी पत्री देदो। किसी प्रकार इस रांड से तो पल्ला छूटै॥

बात यह थी कि रामदयाल के लड़के से भी कोई स्वामी कहगये थे कि यह बड़ा प्रतापी होगा और इस के शत्रु जलेंगे और यह शत्रुओं का क्षय करेगा। आज वही बातैं देवरानी के लड़के के लिये स्वामीजी ने कहीं अब जेठानी के मनमें आग न लगेगी तो किसके मन में लगेगी। अपने लड़के के लिये शत्रु किसे अच्छा लगता है, अपने लिये कौन स्त्री सौत खड़ी करेगी। एक मियान में दो तलवार कैसे रहसकती हैं। दोनों जब शत्रुनाशी हैं तो एक का नाश अवश्य धरा है। इस लिये रामदयाल की स्त्री उस समय से अपने भतीजेको बहुत बुरा मानने लगी और देवरानी से तो उसका मन बहुत ही फटगया॥

रामदयाल ने अपना जन्मपत्र स्वामीजी के चरण कमलों में रक्खा। स्वामीजी ने बहुत विचार करके कहा कि किस उल्लू के बच्चे ने यह जन्मपत्री बनाई। यह तो ठीक नहीं बनी है। थोड़ेही अन्तर से बहुत गड़बड़

होजाती है। अच्छा जो कुछ मेरी समझ में आता है बताऊंगा, पर ऐसे जन्मपत्र से बिधि कहां लगेगी ?

स्वामीजी-धन क्षेत्र को बृहस्पति देखते हैं, वाह ! वाह !! कैसा भाग्य है ! मेरा मन तो इस कुण्डली से आंख उठाने को भी नहीं करता। क्या ही उत्तम ग्रह हैं। ऐसे ग्रह तो देखने को भी नहीं मिलते। तुम तीन भाई हो, पर आपस में प्रेम बहुत नहीं है, तुम्हारे चार लड़के होंगे ॥

रामदयाल—नहीं महाराज ! तीन लड़के हैं।

रामदयाल के चचा-अरे ! बावला होगया, जो स्वामी जी को झूठा बतलाता है। अभी क्या बूढा होगया, चौथा होने में क्या देर लगती है। स्त्री तो तेरी ब्याह की सी दुलहन दिखाई देती है ॥

रामदयालकी स्त्रीने मुस्कुराकर मुंह नीचा करलिया। गाल उस के लाल होगये।

स्वामीजी—तुम्हें दूसरे, पांचवें, ग्यारहवें, सत्रहवें' सत्ताईसवें और छत्तीसवें वर्ष कुछ कष्ट था, पर बहुत नहीं।

रामदयाल—महाराज ! ३६ वां वर्ष मुझे पूरा हो गया है, अवश्य मुझे कुछ सर्दी लगी थी और ज्वरभी आया था। पहिले भी ६। ७ बार मैं बीमार हुवा हूं।- आप ठीक कहते हैं ॥

स्वामीजी—कुछ तुम्हारे पेट में बिकार रहता है, जैसे पेट पीड़ा।

रामदयाल—नहीं महाराज।

स्वामीजी—क्यों घबराये जाते हो, अब होगी कहीं ग्रहों का फल झूठा होता है। तुम्हारी भूख ठीक नहीं,

कभी अधिक खाने को मन करता है, कभी खाया ही नहीं जाता। मीठे फल तुम्हैं अच्छे लगते हैं, जैसे आम, अंगूर की पिटारी, लखनौ के खरबूज़े। खट्टी वस्तु को अधिक रुचि नहीं। कभी २ बुरे स्वप्न दिखाई देते होंगे, जैसे कहीं ऊंचे से गिरने का डर। और सवेरे पलंग से उठने को मन नहीं करता होगा। मुख का स्वाद बिगड़ा रहता होगा। कुछ प्रमेह की शङ्का सी भी बनी हुई रहती होगी। कहो, यह बात है कि नहीं। १७ वें, और १८ वें, वर्ष कुछ प्रमेह की अधिक शंका हुई होगी। मेले में कोई सुन्दर रूपवती स्त्री आगई तो उसे देखने को मन करता होगा पर तेरी स्त्री को और कोई आंख भी उठावै तो उसका सिर फोड़देने को मन करता होगा॥

रामदयाल-अरे! ये तो साक्षात् ईश्वर हैं, इनसे क्या बात छिपी है॥

स्वामीजी--बृहस्पति के सम्मुख केतु न होता तो यहां १० हाथी झूमते हुवे देखने में आते। अब भी क्या कमी है, बड़े बलवान् ग्रह हैं, बड़ा भाग्यशाली है। चन्द्रमा सातवें घरको देखता है, स्त्री तुमको बड़ी रूपवती और पतिव्रता मिली होगी। वह तुम्हैं इतना प्यार करती है कि तुम नहीं जानते। तुम्हारे लड़के भी तुम्हैं प्यार करते होंगे। स्त्री क्या है लक्ष्मी का अवतार है, अरे भाई मौज करो। कभी २ कठोर बात कह बैठती है, पर मन में बड़ी भक्ति रखती है। तेरा ग्रह ऐसा बली है कि कैसी स्त्री क्यों नहो तेरे वश में रहै तेरी दासी बनी रहै॥

रामदयाल और स्त्री-अरे! ये तो परमेश्वर हैं, मनुष्य वेष धारण किया है।

स्वामीजी--तुम्हारे बाप छोटी अवस्था में मरगये होंगे।

रामदयाल--नहीं महाराज! उन्हें मरे हुवे तो केवल ६ वर्ष ही हुवे।

स्वामीजी--तो तुम्हारी बिधि नहीं लगती होगी, बात तो एक ही आई।

रामदयाल-नहीं महाराज! मुझे बड़ा प्यार करते थे।

स्वामीजी-तो तुम्हारे श्वसुर शीघ्र मरे होंगे। अरे यह शनैश्चर खाली थोड़े ही जासकता है।

रामदयाल-महाराज! श्वसुर तो अभीतक जीवितहैं।

स्वामीजी-तो तुम्हारे आपस में भेट बहुत ही कम होती होगी। यह ग्रह निष्फल नहीं होसकता।

रामदयाल--हां महाराज! मेरे यहां वे बहुत कम आते हैं। यह बात तो ठीक है।मेरेयहां का पानीतक नहीं पीते।

स्वामीजी--बात एक ही हुई,ये ग्रह बिना फल दिखाये नहीं छोडते। देख हमने कहदिया था।

सब लोग—धन्य हो महाराज आप अन्तर्यामी हैं।

स्वामीजी-तुम्हारी आयु ८१ वर्ष की पूरी है, तुम्हारा भाग्य २१। १८। ३३। ४७। ५४ वर्ष में विशेष है। ऐसे ग्रह मैंने और किसी के नहीं देखे। इन १। ४ वर्षों में तुम्हारा रुपया अधिक उठा होगा॥

रामदयाल—हां महाराज! मेरे बेटा हुवा, उस में बहुत रुपया उठा।

स्वामीजी-स्त्री भी दोवार मरनेसे थोड़ी ही बची होगी।

रामदयाल-हां महाराज! डाक्टरनी न आती तो रामप्रसाद के जन्म के दिन क्या यह बचती। धन्य हो महाराज!

स्वामीजी—इस शनैश्चर का यह भी फल है कि किसी वर्ष तू बीमार होजाय, किसी वर्ष तेरी स्त्री वा तेरे लड़के वा तेरे नौकर वा तेरा श्वसुर कोई न कोई बीमार होता ही रहे, वा तेरे मन में चिन्ता लगी रहे, बिना चिन्ता तेरा कोई वर्ष नहीं जाता।

रामदयाल—सत्य है महाराज।

स्वामीजी-तेरा स्वभाव बड़ा सीधा है, तुझे कुछ २ गाने का भी शौक है,अकेले बैठरहा तो कुछ गाने लगता है। मन तो बड़ा उदार है, पर जितना तेरा मन है, उतना रुपया तेरे पास नहीं है। तेरे मन में कपट नहीं है, पर तेरे हाथ में यश नहीं है। जिसे तू देता भी है, वह सन्तोष नहीं करता और समझता है कि कम दिया। तू समझता है कि मेरेपास होता तो पृथ्वी में भोजन बिना कोई नहीं मरने पाता। पर जैसा तू उदार है, लोग तुझे वैसा सच्चा खरा नहीं समझते, अच्छे खाने और अच्छे पहरने का तुझे बड़ा शौक है पर कष्ट नहीं करना चाहता। पका पकाया मिलजाय तो खुश होता है॥

रामदयाल-पैरों में सिर रखताहै। धन्य हो महाराज! आप ईश्वर के अवतार हैं, मनकी बातें जानते हैं,आप से क्या छिपसकता है। मैं नित्य समझता हूं कि मेरे पास राजा के समान धन होता तो पृथ्वी में भूखा कौन मरनेपाता? बस आप ईश्वर हैं और क्या कहूं।

स्वामीजी—दो बार ऐसा हुवा है कि तुझे रुपये आने की कुछ आशा नथी अकस्मात् तेरेपास रुपया आयाहोगा।

रामदयाल-(कुछ सोचकर) हां महाराज! ठीक है, मेरे बड़े लड़के की सगाई में अकस्मात् दो तीनसौ का

माल आगया है और पांचसौ रुपये मेरेश्वसुरजी ने भी भेजदिये। फिर विवाह नहीं हुवा, वह लड़की मरगई। रुपये मुझे ही पचगये ॥

सबलोग-अरेरे !! ये ईश्वर हैं, या क्या हैं ?

स्वामीजी-सुन पहिले जन्म में तू राजा था। यह लक्ष्मी स्त्री तेरी रानी थी। तुम्हारे एक लडकी थी, उसका नाम तारा था। उसके विवाह के समय तूने पुरोहित का अनादर किया। तुझे भूख लगी थी, बिना पुरोहित को दण्डवत् किये तू खाने को चलागया, उसी पाप से तुझे यह जन्म लेना पड़ा है। अब तू सोने की प्रतिमा बना उस में लालचन्दन से पुरोहित की मूर्ति लिख और किसी बड़े जानने वाले पण्डित को दान दे, इस से तेरा पाप दूर होगा और ईश्वर चाहेगा तो अच्छा रहेगा।

रामदयाल मन में सोचते हैं कि ये बातें अवश्य ठीक होंगी। जब अकाल का चन्दा हुवा था, तब मेरे मन में आया कि ५००)रु० देडालूं। यदि मैं पहिले जन्म में राजा न होता तो मेरा मन इतना उदार कैसे होता। देखो गंगाराम कैसा कंजूस है, उसने केवल १५) दिये। मेरा मन तो ५००) रुपये देनेको होगया था, पर मैंने समझा कि ये रुपये बीच ही में लोग खाजाते हैं, देकर क्या करूं। लखनौ में डाक्टरी पाठशाला खुलने का चन्दा हुवा, उसमें भी ५००) देने को मेरा मन होगया था, पर मैंने समझा कि और लोगों ने दसलाख से अधिक दे दिये हैं, मैं देकर क्या करूं। अवश्य मैं पहिले जन्म में राजा हूंगा। देखो मेरी भूख ने इस स्त्री की भी यह गति की। रानी से सेठानी हुई, अब इसे क्रोध न होगा तो

किसे होगा। तभी तो कभी २ मुझे गालियां दे बैठती है। पर स्वामीजी कहते हैं कि उसे बड़ी भक्ति है॥

रामदयाल की स्त्री को भी पूरा विश्वास होगया। उस दिन से वह आइने को ही देखा करती है, मन में समझती है कि कुछ २ रूप तो मेरे चेहरे में रानी होने का अब भी झलकता है। जब मैं रानी हूंगी और गहने से लदी हूंगी तो कैसी सुन्दर न दिखाई देती हूंगी। हाय इस पापीकी भूखने मुझे भी डुबोया। अब इस जन्म में भी तो भोजन के समय शीघ्रता करता है, अच्छी भांति पकने भी तो नहीं देता। वही उतावलापन चला आता है। रानी से तो यह दशा हुई, अब न जाने कहां डुबोयेगा और क्या २ दिखायेगा? उस दिन से रामदयाल चाहे भूख से मरे, पर स्त्री से भूख लगी है नहीं कहता, क्योंकि भूख का नाम सुनतेही उसकी स्त्री चिढ़जाती है और पाहिला जन्म याद आजाता है।

रामदयालकी स्त्री अपने पति से बोली। बस तुम्हारे लिये हम नहीं हैं, लड़के नहीं हैं, रुपयों का ही मुंह देखाकरो। जाओ और स्वामीजी के पैरों में गिरो और जो रुपया लगै, खर्च करके नई जन्मपत्री बनवाडालो। रुपया ही तुम्हारा ईश्वर होगया। स्त्री सन्तानका कुछभी मोह तुम्हैं नहीं, अब परलोकको गठरी बांध के लेजाओगे। ये स्वामीजी मनुष्य नहीं हैं, साक्षात् ईश्वर हैं, इनकी दया से सब अच्छा होसकता है।

सुनने वाले सब लोग भौंचक रहगये। कानों में हाथ धर रहे हैं मुंह खुले हैं और विस्मित होकर यह कहरहे हैं:—बापरे! बापरे!! ऐसे स्वामी तो हमने कभी न देखे।

जब ऐसी झूठी जन्मपत्री से स्वामीजी ने इतना बतला दिया तो सच्ची पत्री से न जाने क्या कहदेते। घर घर स्वामीजी की चर्चा होरही है और सब लोग आपस में यह कह रहे हैं कि भई ! स्वामीजी से तो कोई बात भी छिपी नहीं रहती।

इतने में ही एक स्त्री १७ वर्ष की आई और स्वामीजीके पैरों में अपनी पत्री और १) रक्खा। स्वामीजीने देखा कि स्त्रीकी बहुत पतली कमर है और चेहरा फूल के समान खिला हुवा है। बस जानगये कि इसके संतान अभीतक नहीं हुवा। सब लोगोंसे कहा कि आप हट जाइये, क्योंकि गुप्त बातें बतलानी हैं, केवल एक स्त्री को छोड़ जाइये। स्वामीजी की आज्ञा कौन न मानता सब चलेगये एक बुढ़िया वहां रहगई। स्वामीजीने स्त्री से कहा, देख मङ्गल खोटा पड़ा हुवा है। तेरे पति का तेरे लिये प्रेम कम है, स्त्री चुप होरही। स्वामीजी बोले कहती क्यों नहीं, हमसे क्या छिपाती है। हम लोग तो इन बातों का उपाय करते हैं। तेरे पति का मन कहीं और लगा है, तेरे लिये प्रेम कम है। दस बर्षतक तेरे लड़का न होगा। देखने में तो तेरा पति प्रेम करता है, पर तू बिचारी उस के मनकी क्या जाने ?

इस बिचारीको तो स्वप्नमें भी अपने पतिका यह सन्देह न था। अब तो जो जो बातें इसके पतिने की थीं और कहीथा उनका और ही अर्थलगाने लगी। अरे! तभी उस रात कचहरीका कुछ काम बतागये थे। किसी२रात पान खाकर आते हैं और पूछने पर मित्रों का नाम लेदेते हैं। जब मैंने पान दिया तो दांत बिगड़ जाते हैं कहते हैं।

आज तो चोरी पकड़ी। योंही हजारों स्वप्न से देखने लगी और सिर में चक्कर आनेलगा। हाय दस वर्ष कैसे कटेंगे? एक दिन एक वर्ष की समान है।

स्त्री-महाराज! मङ्गल कैसे प्रसन्न हो?

स्वामीजी—मङ्गलकी पूजा को सोना, हीरा और चुन्नी चाहिये, बड़ा रुपया लगता है।

स्त्रीने बुढियाकी ओर ओट करके गले से सोनेकी सतलड़ी निकाली और कहा महाराज यह लो मैं अपने घर कहदूंगी कि खोगई है। आप मङ्गलको प्रसन्नकरैं।

स्वामीजी ने इसे छिपाया और कहदिया कि इस बात को कोई न जानने पावै, क्योंकि मङ्गल क्रोधी ग्रह है, बिगड़ जायगा तो तुम्हारे पति की मौत होने में कोई देर नहीं।

चारवर्ष पीछे हमने यह देखाकि यही स्त्री एक लड़के को गोद खिला रही है, इसका नाम उसने रामानन्द-दास रक्खा और तबसे रामानन्दजी और पुजने लगे और इन्हें बड़ा धन मिला। इन्हींकी दया से दसवर्ष में होनेवाला लड़का चार ही वर्ष में होगया, ये तो ईश्वर ही निकले। मङ्गलकी पूजा जो उन्होंनेकी, यातो वेही जानते हैं, या रामानन्ददासकी मा जानती है, या हम जानते हैं, चौथा मनुष्य नहीं जानता। हम तो सत्य ज्योतिष के प्रभाव से लोगों के घरोंकी रोटियां तक गिनदें। हम से क्या बात छिपी रहसकती है। आपके मन में क्या बात है? आप नहीं जानते, हम बतलादैं। रामानन्द-दास घर २ स्वामीजी की प्रशंसा करता है, भला अपनी मा का विश्वास वह क्यों न करै। अपने बापको कौन

बछिया का बाप समझता है और अपनी मा को कौन निर्बुद्धि समझता है।

स्वामीजी ने रामानन्ददास के बाप का वर्षफल बनाया था, उसको भी सुनलीजिये। अहाहा !! एक २ अक्षर उसका ठीक निकला। चैत से वैशाख ७मी तक अच्छा है, उत्साह रहै, मन प्रसन्न रहै। ज्येष्ठ के अन्त तक शनैश्चर की दशा है। मन में अनेकप्रकार की चिन्ता होवे। पुत्र वा स्त्री को भी कुछ कष्ट मिले, पर मैं इसका उपाय कर दूंगा, कुछ चिन्ता न करैं। धन की कुछ हानि हो। आषाढ़ ११ तक सम है, कुछ चिन्ता कुछ प्रसन्नता बनी रहे। भादो १३ तक मङ्गल बलवान् है। कुछ रोग हो अथवा फोड़ा फुन्सी होवैं। असौज में धन अधिक उठे। कार्त्तिक ८ मी से अगहन १० तक द्रव्य हानि हो, लाभ न हो। इस बीच आप घर से बाहर न जांय, नहीं तो बड़ी चोट लगै, खोटे दिन हैं। पूस ११ तक लाभ अच्छा रहै, पर किसी न किसी को घर में कुछ रोग होवै। यात्रा करनी पड़े। माघ १३ तक मध्यम है कुछ प्रसन्नता कुछ चिंता रहै। फिर फाल्गुन सुदी १५ तक अच्छा है, कुछ चिंता हो, पर मन में उत्साह रहै, किसी सर्कारी नौकर से भेट हो। एक २ शब्द इस वर्षफल का ठीक लगा। वैशाख ७मी तक वसन्त ऋतु में चित्त प्रसन्न रहा। जवानी के दिन थे, मन में उत्साह रहा। ज्येष्ठ में रामानन्ददास को कुछ दस्त हुवे, नये दांत निकले। बालकों के लिये ज्येष्ठ महा आपत्ति का समय होता है। पर स्वामीजी ने ग्रह पूजा करादी थी, जान बचगई। पर कितने डाक्टर आये, देवमन्दिरों में पूजा हुई, धन हानि अवश्य ही हुई। आषाढ ११ तक कभी

कोई चिन्ता हो पर रामानन्ददासकी महतारी सामने आगई तो चिन्ता भाग गई, स्वामीजी का वचन सच्चा हुवा। ऐसा मनुष्य कौन है, जिसके मन में कुछ चिन्ता कभी २ न आजाती हो, हां गफ्फू पागल के मन में कोई चिन्ता नहीं। पर रामानन्ददास के पिता पागल तो नहीं हैं। सावन भादो में आम अधिक खाने से अंधौरियां निकल आईं। असौज में श्राद्ध हुवे, धन उठा। कार्त्तिक से अगहन तक चोट लगने के डर के मारे घर से बाहर पैर नहीं रक्खा, आप ही द्रव्य हानि हुई। पूस ११ तक चले फिरे, व्यवहार किया धनलाभ अवश्य ही होगा अगहनमें घर बैठेरहे थे, इस महीनेमें चलना भी पड़ा। माघ १३ तक मा को कुछ शीत लगा और सिर में कुछ पीड़ा हुई और पड़ोस में गंगारामजी मरगये, इसे देख इनके मन में बड़ा सोच हुवा। अरे संसार कुछ नहीं है, झूठा है। देखो हम से छोटा था, दो दिन में मरगया। संसार का कुछ विश्वास नहीं। पर फाल्गुन का महीना था, रामानन्द-दास की महतारी एक कटोरे में औटा हुवा मिश्री मिला गाय का दूध ले आई और दूसरे हाथ में पान का बीड़ा था। उसका मुंह देखते ही रहगये। अरे कलतक इसका मुंह गोरा था, आज ऐसा लाल कैसे होगया। गोरे मुंह में लाल रंग ऐसा खिलरहाहै, मानो फ़र्रुख़ाबाद का तरबूज़ काट के धरा है, कहीं सफेद कहीं लोहू टपकता हुवा जैसा लाल बसन्त ऋतु थी नित्य नया रंग दिखाई देने लगा। कहां की मौत कहां की चिन्ता। मन में सोचने लगे अहा!! स्त्री तो सभी को मिलती हैं, पर ऐसी पतिव्रता स्त्री जो पति को ऐसा प्यार करती है, मुझे ही मिली है।

देखो कहार के हाथ दूध नहीं भेजा आपही लाई है, कैसी भक्ति रखती है। परसों कोई मिठाई देगया, मेरे आने तक आप न खाई। जिस रात मुझे घर आने में देर होजाय, मेरे आने तक रोटी भी नहीं खाती। अपने मन में एक बात भी नहीं रखती, सब मुझसे कहडालती है। देखो! रात दिन सास और ननदों की बोली टोलियां सुनती हूं, कहती है पर मुझसे उनकी २। १ ही बात किसी२ रात कहदेती है। वह तो इतनी भी न कहती पर मैंने उसका मन ऐसा वशमें करलियाहै कि उसके मनमें मुझसे कुछ भेद नहीं रहसकता। इसी लिये रातको दोचार बात कहदेतीहै। ऐसी पतिव्रता और प्यार करने वाली स्त्री मिलजाय तो स्वर्गमें क्या धराहै ? जङ्गल में मंगल हो। दसलाख रुपये न हुवे तो क्या हुवा। इतने ही में रामानन्ददास आगया, बस फिर क्याथा, इन्द्रलोक यहीं होगया। स्वामीजी का बर्षफल सोलह आने ठीक निकला कहां उतनी चिन्ता और कहां इन्द्रलोक का उत्साह और आनन्द। थोड़ीदेर में एक तहसील का चपरासी किस्त मांगने को आया, बस सरकारी नौकर से भी भेट होगई। अहा!! अब ज्योतिषियों को कौन झूंठा बतलावेगा, ये लोग तो तीन कालों की बातोंको जानते हैं।

किसी के घर कुछ खोया गया था, वहां स्वामीजी बुलाये गये। उन्होंने बिचार करके अपने मन में कहा कि इन्होंने क्या खोया होगा जो बड़े सोच में हैं, यातो कुछ धन गया हो या गहना गयाहो। बोले कि आपका कुछ धातु खोया गया है।

वे बोले हां महाराज!

स्वामीजी सोचने लगे कि द्रव्य गोल होता है, गहना भी प्रायः गोल होता है। बोले कि वह गोल है और थोड़े दिन से खोगया है।

बूढाबोला हां महाराज! परसों यह मूर्ख स्त्री नथ खोआई है, इसीसे हम दुःखी हैं।

स्वामीजी-हां मेरे विचार से उस में कोई पत्थर भी लगे हुवे थे। जिसने चुराया है, वह सोच रहा है, देदूं या न दूं। कभी देने को मन होता है, कभी देना नहीं चाहता। द्विविधा में है। आप राहुकी पूजा करें तो उसका नाश हो।

दूसरे दिन राहुकी पूजा का आरम्भ होने लगा। चोर ऐसा घबरागया कि नथ रात में वहीं डाल गया और स्वामीजी सच्चे होगये॥

सूचना-ज्योतिष के विद्यार्थियोंको उचितहै कि ग्रहों को अद्भुत बतलावें, विशेष करके बालकों के। जबतक उत्साह बढाना नहीं सीखोगे, लाभकी आशा छोड़दो। जिसके लड़के के ग्रह अच्छे नहीं बताओगे, वह क्या देगा?

तीसरा अध्याय।

मूर्ख कहावतें।

अगिले दो अध्यायों से फलितज्योतिष का कुछ २ ढंग आपके समझ में आगया होगा, इस अध्याय में आज कल की कहावतोंका कुछ वर्णन करेंगे जिस से कि फलित ज्योतिष के मूलकारण को समझनेमें सुगमताहो।

लंबा मनुष्य निर्बुद्धि होताहै।छोटा मनुष्य खोटा होताहै

आंख की भौं जुड़ी हों तो रांड वा रंडुवा हो।

गहरी नाभि वा छोटे जांघ वा हथेली वा पांवकी ऊर्ध्व रेखा भाग्यवान् के होती हैं।

सिर बड़े सर्दारों के। पांव बड़े गुलामों के॥
लाल नख सुखी। काले नख दुःखी॥
श्वेत नख भोगी। पीले नख रोगी॥

बड़े दांत वाला बिरला ही मूर्ख हो। खल्वाट बिरला ही निर्धन हो। घुंघरूवाले बाल भाग्यवान् के होते हैं। किसी बड़े रोगी की स्त्री का मुंह चमकता हुवा हो तो रोगी मरै। पुरुषका मुंह चमकताहुवा हो और स्त्री बडी रोगी हो तो स्त्री मरै॥

छिद्रदन्ती वा मोछैं वाली स्त्री विधवा हो।

चंचल चपल चमंकिनी। बहु भोजन बहु रोस॥
ये तुरगी (घोडी) में गुण कहे, ये त्रिया (स्त्री) में दोष॥

स्त्री के छोटे हाथ पांव सुलक्षण होते हैं।

गाल का तिल जहां आंसू गिरता है रांड वा रंडुवा होने का चिह्न है।

छाती का तिल वीरता का चिह्न होता है।

दाहिनी ओर का तिल शुभ और बाईं ओर का तिल अशुभ।

छोटी गरदन भाग्यवानी का चिह्न है।

सोते समय उत्तरकी ओर सिराना करनेसे मृत्युहोतीहै।

एक काम के लिये दो सगे भाई वा बाप बेटे वा तीन ब्राह्मण न जांय।

किसी काम करने के पहिले छींक आजाने से वह काम सफल नहीं होता।

मनुष्य का दाहिना अंग आंख हाथ इत्यादि का फड़कना और स्त्री के बांये अंग का फड़कना शुभ है। मनुष्य के बांये और स्त्री के दहिने अंग का फड़कना अशुभ है।

दही वा मछली वा पानी का आजाना शकुन है। खाली बरतन का आना, सांप के पार होजाना, काने ब्राह्मण का मिलना अशुभ है।

काना विप्र मिलै मग मांहीं, प्राणजाय कछुसंशयनाहीं।
तीनकोसलौंमिलै जो काना, लौटिआय सोइ जानोसयाना

दही बिखरना शकुन है।

पलंग का टूट पड़ना बड़ा अशकुन है और शान्ति की जाती है।

घर दक्खिनकी ओर नहीं बनाते।

कव्वा और हिरन का दाहिनी ओर जाना शकुन है।

जाते हुवे मनुष्य से यह न पूछो कहां जाता है नहीं तो उस का काम सफल नहीं होगा।

जिसकी छाती में बाल न हों उस से मित्रता न करो। भूचाल के समय छोटे मनुष्य को डेवढी में लेजाकर खींचने से वह लंबा होजाता है। अन्न को डेवढी में लेजाकर मापने से अन्न बढता है। भूचाल जब आते हैं तो सुकाल होता है। ग्रहण जब अधिक लगें तो अकाल होता है॥

भादो सुदी चौथ को चांद देखने में झूठा कलंक लगता है, इसे पथरियाचौथ कहते हैं।

मंगल को मिलाप अच्छा नहीं। शनिश्चर के दिन घर नहीं छोड़ते। बुध को जैसे जाना तैसे आना॥

किसी काम के आरम्भ में दही खाना शुभ है, पर दूध पीना अच्छा नहीं।

शकुन और अपशकुन नाक के स्वर चलने से भी लिये जातेहैं। प्रातःकालके समय भलेका मुंह देखना भला होता है। कहावत है कि किसी राजा ने किसी मनुष्य का मुँह देखा और उसे ठोकर लगी। उसने आज्ञा देदी कि उस मनुष्य को फांसी देदीजाय। उसने हाथ जोड़ कर राजा से कहा कि महाराज मेरा मुंह देखकर आप को ठोकर लगी पर आपका मुंह देखकर मुझे फांसी हुई। आपका मुंह बुरा कि मेरा मुंह बुरा। राजा ने प्रसन्न होकर उसे छोड दिया॥

पैर के ऊपर पैर रखना दरिद्रता का चिह्न है। सांपन भौंरी सिर में वा जांघ में हो तो स्त्री विधवाहो।

घोड़ा।

तीन पांव एक रंग हैं एक पांव एक रंग।
अड़जल ताको जानिये करै राजकोभंग॥

ऐसे ही श्यामताल मेढ़ासिंगी सितारे पेशानी भौंरी अशुभ और देवमन कंठमन भौंरी घोडों की शुभ मानीगई हैं ॥

स्वप्न ।

चिट्ठी आती देखै तो मृत्यु । दो दीपक जले देखै तो पुत्र हो । एकदीपक देखे तो लडकी हो । जो स्वप्न में मरै उसकी आयु बढ़ै पर और कोई मरै । ग्रहण देखना अशुभ है । दही, मांस वा फल खाना वा देवताओं को पूजना वा वेश्या को तथा सुहागिनी स्त्रीको देखना शुभ है । विधवा को देखना वा नहाना अशुभहै । बहुधा करके उल्टा फल होता है ॥

चौथा अध्याय।

दो ज्योतिषियों की सच्ची कथा।

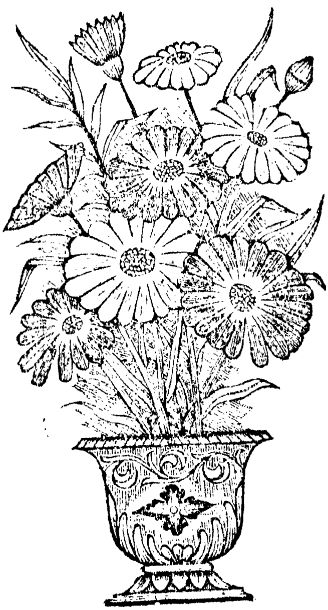
मैंने एक बड़े ज्योतिषी से मित्रता की उसने मुझे यह कथा सुनाई।

मैं और एक पंडित एक नगर में गये और रात्रि को एक सराय में रहे। दूसरे दिन हमने एक कहार को नौकर रक्खा और उसे ।) देकर नगर की सब बातैं पूंछीं उस से हमैं यह भेद जानपड़ा कि वहां का महाजन बड़ा ही धनवान् है परन्तु उसके सन्तान कोई नहीं। उसके ६ लड़के हुवे पर बचपन ही में मरगये। दूसरे दिन हम उसके पास गये। जाते ही उसने अपनी और अपनी स्त्री की जन्मपात्रियां हमारे आगे रखदीं। हमने एक घंटे विचार करके कहा कि बृहस्पति उत्तम है तुम्हैं तो लखपति होना चाहिये। धन सम्पत्ति सब हो और रूपवती स्त्री मिलै, तीन भाई हों और एक बहिन। शनिश्चर की दृष्टि तीसरे स्थान में होने से भाइयों में प्रेम कम हो। गांव तुमने मोल लिये हों। इसीप्रकार जो २ बातैं हमने कहार से सुनी थीं, कहदीं। फिर हमने कहा कि केवल एक बात की कमी है अर्थात् सन्तान की। तुम्हारे सात लड़के होकर मरजांय। कहार ने तो हम से ६ लड़कों के मरने का वर्णन किया था। बस महाजन हमारे पैरों में गिरपड़ा और रोने लगा, उसका सातवां लड़का होनेवाला था इस लिये वह घबड़ागया मेरे ऊपर दयाकरो, ईश्वर आपका भलाकरेगा, इस विपत्ति से मुझे बचाओ कहनेलगा। हमने कुछदेरऔर विचारकिया और कहा कि हमारी समझ में यह आता है कि किसी

तुम्हारे शत्रुने इस घरके किसी स्थान में मनुष्य की हड्डियां गाढदी हैं इस से तुम्हारा घर हराभरा नहीं होने पाता। आप होम करें इस में आपके ८००) रुपये लगेंगे। ६००) पहिले देने होंगे २००) आप तब देना जब हड्डियां मिल जांय। महाजन और उसकी स्त्री यह सुन कर बड़े प्रसन्न हुवे। हम ६ दिन वहां रहे और हमारा बड़ा आदर हुवा, आंगन के एक कोने में मैंने होम का प्रारम्भ किया। पंडितजी रातभर हड्डियोंकी खोज में इधर उधर घूमा करते थे। सातवें दिन मुर्दों के जलाने के घाट से दो अधजली हड्डियां ले आये। हमने इनको दो हाथ गहरे गढे में दबा दिया और उस के ऊपर होम करने लगे। फिर दूसरे दिन हमने महाजन और उसकी स्त्रीको एकान्त में बुलाया और होम पूरा करके आग बुझाई और खोदकर वे दो हड्डियां निकाल दीं। वे बड़े ही प्रसन्न हुवे और हम को २००) के बदले ४००) दिये हमने हड्डियां दूर फैंकदीं और तब से हम उस नगर में भी न गये॥

एक बड़े ज्योतिषी के लडके ने अपने बापकी कथा कही थी। वह कहता था कि मेरे बाप एक तिदरी कोठरी में आंख मूंदकर घंटों ध्यान करते थे। जब कोई कुछ पूछने आया तो घंटों तक उनका चेला उस मनुष्यको सुलफा वा तम्बाकू पिलाता था। जब उसे बडा अधैर्य होनेलगा तो बातों ही बातों में उसके मन का भेद लेलेता था। जब कोई वस्तु खोजने का प्रश्न हुवा तो पूर्वके द्वार से उस मनुष्य को मेरे बाप के सामने लेगया। जब लड़का लड़की होनेका प्रश्न हुवा तो दक्खन

के द्वार से और किसी रोगी का प्रश्न हुवा तो उत्तर के द्वार से लेजाता था, मेरे पिताजी यह देखकर फिर आध घंटे आंख बंद रखते थे, जब वह मनुष्य थकगया तो थोड़ी देर आंख खोलकर उस के आने का कारण बतला देते थे और कहते थे कि कार्य तो कठिन है पर हम कुछ पूजा पाठ करदेंगे। पांच चार रुपये उस से लेकर उसे चलता करदेते थे। इस प्रकार उन्होंने दसहजार रुपया बंक में जमा किया। पर जैसे आया तैसे ही गया, अब मेरे पास दो चारसौ बाकी रहगये हैं।



पाँचवां अध्याय।

बहुतेरी चालें जिनका हमारे समयमें लोप होगया है।

तीसरे अध्याय में मैंने कुछ इस समय की मूर्खता की कहावतों का वर्णन किया है। अब उन चालों का थोड़ा सा वर्णन करूंगा जिनका हमारे ही देखते २ लोप होगया है। इससे जान पड़ेगा कि मनुष्यकी बुद्धि कुछ २ उन्नति करती जाती है और भोलापन दूर होताजाता है॥

महाराज अकबर के समयतक आग से परीक्षा की जाती थी। जलते हुये तेलकी कढ़ाई में हाथ डालना अथवा लोहे के लाल गोले को हाथ में लेना आपने सुनाही होगा। एक रीति यह भी थी कि जिनपर सन्देह हुवा उन्हैं तोलते थे और यह कहते थे कि अपराधी मनुष्य तोल में बढ़जाता है। जो सचमुच अपराधी हुवा वह अपना खाना पीना कम करदेता था। जिससे कि तोल में बढने न पावै और झट पकडलियाजाता था॥

जो लोग सन्देह में पकड़े गये उन्हैं एक २ मन्त्री हुई छड़ी देदेते थे और सब लोग यह बात जानते थे कि अपराधी की छड़ी एक अंगुल बढ जाती है। अपराधी इस डरसे उसे एक अंगुल छोटा करदेता था और पकड़ा जाता था॥

अब हम लोग इस भोलेपन को सुनकर हंसते हैं। क्या सोलहवीं सदी तक मनुष्य ऐसे भोले होते होंगे। १६ वीं सदी को छोड़िये मैं ३० वर्ष पुरानी बातें कहता हूं जो मैंने आंखों देखी हैं। तीस वर्ष पहिले

लोग प्रायः एक पुराने समय का चौकोन रुपया रक्खा करते थे जब कुछ खोगया तो उसे तोलकर चावल लोगों को खिलाते थे चोर के मुंह से लोहू निकलता है कहते थे। रात के समय सब लोग एक भूसेकी ढेरी में हाथ डालते थे।चोर डरके मारे चोरी कीहुई वस्तुको उस ढेरी में डाल देता था। कार्तवीर्यकी कथा पढ़ी जाती थी और लोग जानते थे कि चोर ६ महीने भीतर मरजाता है। बड़े २ विख्यात मंदिरों की डेवढ़ी धोकर पानी पिलाते थे जिस से चोर कोढी होजाय। गंगाजल और हरिवंश की शपथ अबतक चली आती है। कुमाऊं में करडा लगाया जाता था। एक लकडी में मंत्र पढते थे वह लकडी चोर के घर आप ही चली जाती है कहते थे। ऐसी डर धमकी में हजारों चोरियों का पता चलजाता था। पर अब तो इन गीदडभवकियों में कोई भी नहीं आता अब लोग चालाक होते जारहे हैं। भोलापन दूर होता जारहा है। मूर्खता की कहावतों से ही मनुष्य की बुद्धि भांपी जासक्ती है। ज्यों २ बुद्धि बढती जाती है,इन कहावतों पर विश्वास छूटताजाताहै॥

छठा अध्याय।

यवनज्योतिष क्यों ठीक जानपड़ता है ?

अब मुझे यह बतलाना रहा कि यवनज्योतिष का भ्रम कैसे उत्पन्नहुवा और अबतक इसे क्यों मानतेहैं ? जिसने स्वामी रामानन्दजी का चरित्र मन लगाकर पढलिया है, उसे समझाना बहुत कठिन नहीं होगा, पर मुझे यह भी कहदेना आवश्यक है कि हिन्दुस्तान के सभी ज्योतिषी स्वामी रामानन्द और महात्मा लक्ष्मीदास ही के समान नहीं होते। बहुतेरे ज्योतिषी ऐसे भी हैं, जो यवनज्योतिष पर पूरा २ विश्वास रखते हैं और उसे सच्ची विद्या मानते हैं। इनको पक्का विश्वास न होता तो ये लोग अंग्रेजों के पास जाने का साहस कैसे करते। इन ज्योतिषियों की सच्चाई और खरे होने में कोई भी सन्देह नहीं होसक्ता। अब मैं इसकी जांच के लिये कुछ प्रश्नोत्तर की रीति पर लिखता हूं:-

प्रश्न-यवन ज्योतिष सच्चा है वा झूंठा ?

उत्तर-न यह सच्चा है न झूंठा। कोई मनुष्य यह प्रश्न करै कि मेरे लड़का होगा या लड़की ? आप ८ कौडियां हाथ में लेकर पृथ्वी में फैंकदें। यदि पूरी आवैं तो लडका बतलादें और अधूरी आवैं तो लडकी। मान लो कि कौड़ी पूरी आगई और आप उस से कहैं कि तेरे लडका होगा। संयोग से उसके लडका ही होजाय तो बतलाइये कि यह कौड़ियों की विद्या सच्ची हुई वा झूठी ? यदि यह झूठी है तो इसबार सची क्यों निकली? और यदि सची है तो प्रत्येक बार सच्ची क्यों नहीं होती?

जब कभी आप से कोई इसप्रकार का प्रश्न करै तो आप कौडयां लेकर इसप्रकार फैंकिये बीसियोंबार आपसच्चे निकलेंगे। अनेकबार जब आपके वचन सच्चे होगये तो इसको झूठा कैसे कहोगे? रमलशास्त्रवाले कौडियों के के बदले फांसा डालते हैं। एक पुस्तक पञ्चपक्षी नाम की है। उस में ६ ग्रहों के बदले ५ पक्षियों को मानकर सब प्रश्न बतलाये हैं।

मैं पहिले कहचुका हूं कि ग्रहणों के होने से फलित-ज्योतिष का आरम्भ हुवा। ग्रहण फलित की जड हैं। किसी वर्ष एक भी ग्रहण नहीं लगता और किसी वर्ष हर महीने ग्रहण होते हैं। इसका क्या कारण है? पहिले समय के लोगों को इसका बड़ा अचम्भा हुवा और इसकी खोज में उन्होंने सैकडों वर्ष बिताये, तब उन्हें यह पता लगा कि १८ वर्ष में सूर्य और पृथ्वी की चाल उसी प्रकार की फिर से आपडती है और १९ वें वर्ष से ग्रहण उसी क्रमसे फिर लगते हैं। इससे उन्होंने यह अनुमान किया कि मनुष्य के लिये भी कोई ऐसा ही समय नियत होगा और उस नियत समय में जो मनुष्य जन्मलेवैं, उनका भाग्य दुर्भाग्य एक सा होता होगा। दो घंटे का एक लग्न होता है, उस लग्न में जो २ मनुष्य जन्मैं, उनकी जन्म कुण्डली एक ही होती है और फलभी उन सबका एक ही होता है। इस लग्न को खोजने लगे। फलित ज्योतिष की जड यही है कि बहुतेरे मनुष्यों का भाग्य दुर्भाग्य एकसा होता है, अर्थात् बहुत कुछ मिलता है। ज्योतिषी जो २ बातें

बतलाते हैं, वे प्रायः सभी मनुष्यों को हुवा करती हैं। वे प्रायःयही बतलाते हैं कि लाभ होगा, रुपया उठेगा, रोग लगेगा, शरीर अच्छा रहेगा, चिन्ता रहे, मन प्रसन्न रहै। बाप मरै, पुत्र हो। स्त्री वियोग हो, विवाह हो इत्यादि। क्या ये बातैं प्रायः सभी मनुष्यों को नहीं होतीं ? लाभ नहीं होता तो मनुष्य क्या खाता है? ऐसा कौन मनुष्य है, जिसका रुपया कभी नहीं उठता। जिसे चिन्ता नहीं वा जिसका मन कभी प्रसन्न नहीं होता वा जिसे कभी कुछ रोग न हो, वह कौन मनुष्य है ?

मानलो कि किसी महीने में सवासात बजे देवदत्त का जन्म हुवा। जो२बातैं उसको बीतीं हमने वे लिखलीं (१) ११ वर्ष में बिवाह हुवा। (२) तीन लडके और १ लडकी हुई। (३) १७ और १९वर्ष में उसे कष्ट हुवा। (४) स्त्री उसकी ४२ वर्ष में मरगई। (५) एक लडका मरगया। (६) २७ वर्ष में लाभ हुवा। (७) ४८ वें वर्ष में हानि हुई। (८) ४४ वें वर्ष बाप मरगया। (९)५२ वें वर्ष में पोता हुवा। (१०) ४३ वर्ष में दूसरा ब्याह हुवा। (११) ७३ वें वर्ष ज्वर से मरगया। इसीप्रकार हमने और लोगों की बातैं भी लिखलीं। बहुत वर्षों के पीछे हमैं एक काल्पित समय ऐसा मिलगया जब कि यज्ञदत्त सवासात बजे उत्पन्न हुवा और उस समय सब ग्रह उन्हीं राशियों में थे, जहां कि वे देवदत्त के जन्म समय में थे। हमने ११ बातैं जो देवदत्त को बीती थीं, यज्ञदत्त के लिये भी बतलादीं। यही फलादेश (जन्म-कुण्डली का फल) है।

हम कहचुके हैं कि बहुतेरे लोगों का भाग्य दुर्भे[illegible]

परस्पर बहुत कुछ मिलता है और बिवाह, पुत्र, नौकरी इत्यादि प्रायः बहुत लोगों के उसी अवस्था में होते हैं। यह सम्भव है कि यह फलादेश बहुत बातों में ठीक लगे, अथवा खींच खांच कर ठीक करालिया जाय। उसका बाप न मरै तो बापसे प्रेम कम हो या सुसर मरै या दादा वा चाचा मरै। स्त्री न मरै तो रोगिणी होजाय वा प्रेम कम हो। बात तो एक ही हुई, जैसा रामानन्दजीने कहाथा। ७३ वर्ष में न मरै तो ज्वर आवै, लाभ एक पैसेका हो वा लाख रुपये का। जब कोई बातभी ठीक न लगी तो क्या हम नहीं कहसक्ते कि किस उल्लू के पट्ठे ने यह जन्मकुण्डली बनाई थी। स्वामी रामानन्दजीने रामदयाल से क्या कहाथा। संयोग वश से सब बातैं भी ठीकही जैसी होसकती हैं।

फलित ज्योतिष का यही निदान है। पुराने समय के फलित ज्योतिषियों ने हजारों मनुष्यों की दशा लिखीं और इन से वह नियत समय का अन्तर ढूँढा कि जिस में एक ही प्रकार के मनुष्य फिर जन्मैं, जैसे कि १८ वर्ष में ग्रहण उसी क्रमसे फिर लगते हैं। पहिले यह समझ में आया कि २७ नक्षत्रों में जो २ मनुष्य पैदा होते हैं एक नक्षत्र में पैदा हुवे मनुष्य सब बातों में एकसे होते होंगे। जैसे जो मूल में जन्मै, उनके बाप मरैं। इसे नक्षत्र फल ज्योतिष कहते हैं। यह कहीं २ ठीक हुवा, कहीं न हुवा। फिर इसी प्रकार तिथिफल, वारफल, मास फल, संवत्सर फल इत्यादि का विचार हुवा। इस से भी काम न चला। फिर यवनज्योतिष चला। १२ कोठे, १२ राशि और ९ ग्रह मानेगये। इन्ही

को लौट फेर करने से उच्च नीच, शुभ अशुभ, मित्र क्षेत्री शत्रुक्षेत्री, नवांशक त्रिंशांशक इत्यादि हेर फेर करके लाख प्रकार निकल आये। तबतो बहुत बातैं मिलने लगीं। इस से यवन और हिन्दू ज्योतिषियों का मन बढा और इस नई खोज में रात दिन परिश्रम करने लगे। जब उन्होंने देखा कि इस गुप्त शास्त्र की चाभी हमारे हाथ आगई तब तिगुना चौगुना काम करने लगे। आप यह नहीं जान सक्ते कि उस समय उन को कैसी खुशी हुई होगी. मैं यह जान सकता हूं। जब मैं इस यवन ज्योतिष की खोज कर रहा था, मैंने देखा कि इस यवनज्योतिष से हजारों बातैं ठीक निकलती हैं। मैं तो खुशी से फूला न समाया और अपनी चाल दूनी करदी। मैं समझने लगा कि ६००) महीनेकी नौकरी से मैं क्या करूंगा। इस अद्भुत विद्या से तो ६००) एक दिन में मिलजायेंगे। मैंने प्रायः एक हजार जन्मपत्रियां देखीं और इनके फलों को मिलाकर मन में तर्क करने लगा। उन लोगोंकी और मेरी खोज एकही रही। उन्हैं और मुझे एकही प्रकारकी खुशी हुई, क्योंकि बहुत सी बातें मिलनेलगीं। बडा ही अद्भुत चमत्कार जानपडा। उन्होंने और मैंने अपनी चाल तिगुनी चौगुनी करदीं। परन्तु उनका और मेरा निदान एक न रहा वे पांचवीं छठी सदी के सीधे और भोले भाले सतयुगी मनुष्य थे। उन्होंने यह निदान किया कि ग्रहों का मनुष्य के भाग्य से सम्बन्ध है, पर पूरी २ खोज नहीं हो चुकी, इसी लिये सब बातें नहीं मिलतीं। परजो मनुष्य बीसवीं सदी में पैदा हुवा है, वहतो उतना भोला नहीं

होता। वह देख सकता है कि यवनज्योतिष एक प्रकार का भ्रम था और पुराने लोग मृगतृष्णा के पीछे दौड़ रहेथे और समझतेथे कि कि अब थोडी ही देर में मृग तृष्णा हाथ आजायगी। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि यदि वे लोग इस निष्फल मृगतृष्णा के पीछे इतना न दौड़ते तो न जाने वे क्या कर डालते। इतने परिश्रम से तो उन दिनों रेल और तार भी बना देते। परन्तु जब अपना सारा जीवन इसी उद्योगमें खोदिया तो फिर इसे छोड़ भी न सके। छोड़ने में हंसी भी होती और इस उद्योग से इतने थक गये कि और काम के लिये शक्ति न रही। पर हमारे बड़े आचार्यों ने यह जान लिया कि हमारा परिश्रम निष्फल हुवा है। आङ्गिराजी ने तभी तो कहा "आङ्गिरातु मनोत्साहं" अर्थात् मुहूर्त्त देखना व्यर्थ है। जब मन में उत्साह हो, तभी कामका आरम्भ करो, अर्थात् ज्योतिष का मुहूर्त्त कुछ भी वस्तु नहीं है। ऐसेही भास्कराचार्य आदि बहुत से आचार्यों ने फलित को असिद्ध कहा है। सच पूछो तो यवनज्योतिष कभी का मरचुका है, यदि इसका कुछ भाग धर्मशास्त्र में न मिला दिया जाता तो इसका दाह संस्कार कभी का होजाता और प्रेत रूप होकर यह हिन्दुस्तान का नाश न करने पाता। अब आप अपने सन्तान का भला चाहते हो तो इसका दाहसंस्कार और तेरहवीं करदो, नहीं तो इस प्रेत से बालकों को बड़ा भय है।

पढे लिखे लोग क्यों धोखा खागये? इसका उत्तर यह है कि फलितज्योतिष एक ऐसी भूल भुलय्यां अथवा

गोरखधन्धा है कि कई वर्ष संस्कृत पढने से भी समझ में नहीं आता। मुझे पढे लिखे लोगों का बडा भरोसा है और मैं उनकी प्रशंसा करता हूं, कि विना जाने बूझे उन्होंने यवनज्योतिष को धक्के नहीं दिये। अब उन के सामने यवनज्योतिष आइने के समान रख दिया गया है और वे अपनी जन्मपत्री का विचार आपही करसक्ते हैं। अबतो वे स्वामी रामानन्द और महात्मा लक्ष्मी-दास जी के शिकार न बनेंगे। अब तो इन महात्मा-ओंकी कलई खुलगई। इन बुराइयों को छिपाने से महा-मारी के कीडों की तरह से और बढती हैं। लोक लाज से डर कर इनको छिपाना बडीमूर्खता है। प्रकाश कर-नेही से यह दूर होंगी। मुझे निश्चय है कि स्वामी रामा-नन्द और महात्मा लक्ष्मीदास जी के दिन अब पूरे हो-चुके। अब इन को कोई और आजीविका ढूंढनी चाहिये कैसे शरमकी बात है कि आगरा व अवध राज्य में रामानन्दकी बिरादरी सन् १९०१ की मनुष्यगणनाके अनुसार ११९११ है और एक छोटे से टिहरी के राज्य में जहांकुल २१८८८५ निवासी हैं, ३१८५ दैवज्ञ हैं। प-ञ्चाङ्ग बनाने वाले अलग रहे। यह तो उन लोगों की संख्या है, जिनका और कोई उद्यम नहीं। अब तो ह-जारों ज्योतिषी सर्कारी नौकरी और २ उद्यम करते हैं ज्योतिष ही के भरोसे नहीं रहते। इस लिये रामानन्द जीकी बिरादरी की पूरी २ संख्या नहीं जान पड़ती। जब लोग विद्या सीख जायेंगे और देखलेंगे कि हमारे खोटे दिन केवल रामानन्दजी के प्रताप से थे इन्होंने हमारे हिन्दुस्तान को पौरुष हीन और निस्तेज

करदिया और कई लडकियों को घोर दुःख दिया और बन्देदीन के साथ ब्याह कराया तो रामानन्दजी को भी चैन नहीं लेने देंगे । उसकी छूत मानेंगे और अगली मनुष्यगणना में ये लोग ठग और नीच कर्म करनेवालों के साथ गिनेजावेंगे । कोई धर्मात्मा और उद्योगी सोशियलकान्फ्रेन्स का सभापति इनका हुक्का पानी बन्द करादेगा और इन्हें जाति बाहर करादेगा । समाचारपत्र उनका विज्ञापन न छापेंगे। मेरे ज्योतिष के विचार से अब उनके दिन खोटे आगये । यदि यह झूठ निकले तो फलितज्योतिष के झूठ होने का और कोई प्रमाण मत मांगिये । मैं सच२कहता हूं कि जो लोग इसपुस्तक को ध्यान देकर पढरहे हैं, उनकी और उनकी सन्तान की बलायें दूर होकर रामानन्द के सिर में जारही हैं और इनका सिर भारी होता जारहा है ॥

सातवां अध्याय ।

यवनज्योतिष कैसे चला और क्यों माना जाता है?

मैंने यह सिद्ध कर दिया है कि यवनज्योतिषकी जड यही है कि बहुतेरे लोगों का भाग्य दुर्भाग्य और जीवन बहुत कुछ मिलता है। यह भ्रम क्यों चला आता है, यह हमारी न्यायशक्ति का फेर है। मजिस्ट्रेट के सामने तीन साक्षी (गवाह) कहदें कि हमने इस मनुष्य को चोरी करते देखा तो मेजिस्ट्रेट उसे दण्ड देदेगा। चोर तीनसौ मनुष्यों को लावे जो यह कहें कि हमने उसे चोरी करते नहीं देखा तो मजिस्ट्रेट उसे कभी न छोडेगा, यह न्याय हुवा।

परन्तु जब वे तीनसौ गवाह ऐसे हों कि जो उस मनुष्य के साथ ही हों और सच्चे खरे हों और कहें कि वह मनुष्य उस समय किसी और स्थान में था और उसका यह चोरी करना कभी सम्भव नहीं। यदि मजिस्ट्रेट फिर भी उसे दण्ड दे तो यह न्यायशक्ति का फेर है। मन में जो एक अस्पष्ट (गडबड) तौर पर चित्र बनजाता है, उसे न्याय का फेर कहते हैं। तीन गवाहों ने जो बात कही, उस से मन में एक चित्र सा बन गया। तीन सौ गवाहों ने उस चित्र को कुछ २ फीका और गडबड कर दिया पर मन में जब एक बार चित्र बनगया तो साफ २ नहीं उड़जाता। एक पल में हम कागज में कुछ लिखदें तो सौ क्या हजार पल में भी उस लिखे हुवे को साफ २ नहीं मिटा सकते। कुछ २ चिह्न रही जाता है। इसी प्रकार एक बात ज्योतिषी

की जो ठीक लगी तो हमारा विश्वास ज्योतिष पर जम गया। फिर जब बीस बातें झूंठ निकलीं तो हमने समझ लिया कि उसके हिसाबकरने में भूल होगई होगी। यह बात मानासिक विद्या से सम्बन्ध रखती है।

इसी प्रकार किसी मनुष्य की बुराई की कोई बात मुंह से निकल जाय तो एका एक फैल जायगी, भलाई की बात नहीं फैलती। रूपवती स्त्री कोई देखने में आजाय तो मनमें सन्देह होने लगता है कि क्या यह पतिव्रता ही होगी। पुलिसका कोई नौकर मुकदमे में फंस जाय तो सब यही कहेंगे कि अवश्य ही इसने अपराध किया होगा क्योंकि इसे अधिकार था और यह मनुष्य है, ईश्वर नहीं है, तो बिना किये हुवे कैसे रह सका होगा। यही न्यायशक्ति का फेर है।

मूर्ख कहावतों में से एक कहावत यह है कि लम्बा मनुष्य बुद्धि हीन होता है। इसीका विचार करो। ऐसा मनुष्य कौन है जो मूर्ख ही मूर्ख हो वा जिसमें मूर्खता नाम को न हो। मनुष्यमें सब गुण, बुद्धि, मूर्खता, भलाई बुराई, मिली हुई होती हैं। पुरानेसमय में कोई मूर्ख होगा, जो लम्बा होगा। उसे देखकर किसीने यह अनुमान किया कि लम्बा मनुष्य मूर्ख होता है। अब जो कोई लम्बे मनुष्य को देखता है, उसे यह बात याद आजाती है कि लम्बा मनुष्य बुद्धि हीन होता है। जो कोई बुद्धिमानी के काम वह करता है, उनपर हम ध्यान नहीं देते। उनसे हमारा क्या प्रयोजन है। जो मूर्खता के काम करता है, हमारा ध्यान उन्हीं पर जाता है और चटपट अपनी बुद्धिमानी दिखाकर कह बैठते हैं, देखो

कहावत सच्ची निकली। इसी प्रकार और कहावतों को भी समझो।

जब पण्डितजी ने हमसे कह दिया कि वैशाख ११ तक तुम्हें लाभ होगा, तो हमारा ध्यान लाभ पर जमगया मनुष्य को नित्य लाभ होता है, नहीं तो वह खाता क्या है। १००) की हानि हुई उसे तो भूलगये, २) सुसराल से टीके के आये, बस ज्योतिष ठीक हुवा, लाभ होगया।

ज्योतिषीजीने कहा कि कुछ चिन्ता हो, ऐसा मनुष्य कौन है, जिसे चिन्ता नहीं। फिर कहा कि शरीर में कुछ कष्टहो, वा रोग हो। ऐसा मनुष्य कौन है जिसे कुछ न कुछ व्याधि न लगी हो। किन्तु सब लोग अपने को दुर्बल और रोगी समझते हैं औरों को पुष्ट और नीरोग देखते हैं। जब उन्हें यह ध्यान हुवा कि जेठ सुदी ९ तक रोग होगा तो जो रोग उन्हें न जान पड़ता था, वा जिसे वे कुछ नहीं गिनते थे, वही प्रत्यक्ष देख पड़ा।

देवदत्त ने हमसे यहभी कहा कि ज्योतिषी बड़ा चमत्कार दिखलाते हैं। एक ज्योतिषी ने मेरे दादा से कह दिया कि चैत सप्तमी को तेरे लड़का होगा तो उसी दिन मेरे बाप का जन्म हुवा। हमने पूछा कि भाई तुम ने उस ज्योतिषी को देखाथा, देवदत्त बोला नहीं महाराज! देखा तो नहीं। भाई तुम्हारे बाप ने देखा होगा?

देवदत्त—नहीं महाराज उन्होंने यह बात सुनी। किस से सुनी? मेरी दादी से। दादी ने परदादी से सुनी थी।

बस यही कहेसुनेका प्रमाण है। क्या ऐसे प्रमाण से न्याय ठीक होसकता है ?

ऐसे न्याय के फेर के लिये हिन्दुस्तान एक विचित्र स्थानहै। हमारे ऋषि मुनि और प्राचीन आचार्य ऐसे बुद्धि-सागर होगये हैं कि जिनका नाम पृथ्वी में विख्यात है। जब तक गङ्गाजी में जल है और जब तक रामचन्द्र जी का नाम इतिहासों में लिखा है, तब तक हमारी पुरानी सभ्यता की कीर्त्ति पृथ्वीमें चली जायगी ॥

पर पीछे छठी और सातवीं सदी से हमारी बुद्धि क्षीण होती चली आई, हम ने बुद्धि का अभ्यास छोड़ दिया भोले और सीधे होगये । इसी कारण हमारी न्यायशक्ति में यह फेर पडा और इस भ्रम की जड हिन्दुस्तान में जमगई । बुद्धि क्षीण न होती तो यह भ्रम हमारे समीप नहीं फटकने पाता । बल क्षीण न होता तो महामारी का कीड़ा हम को न दबाता । महामारी का कीडा हिन्दुस्तान में आया और हमारा बल क्षीण देखकर आनन्द कररहा है, हजारों के नित्य प्राण खा-रहा है । यदि भूलसे किसी अंगरेज के शरीर में घुस जाय तो देखेगा कि वह तो बडा बलवान् है और कीडे को आप मरना पडेगा। इसीप्रकार जब बुद्धि क्षीण होती है, तब ही ऐसे भ्रम उत्पन्न होते हैं । भली बात बुरी लगने लगती है, जिसे ऐसे भ्रम होते हैं, उस में न्याय शक्ति कहां ? यदि कोई अंग्रेज महामारी से मरजाय तो समझ लो कि उसका बल भी हमारे ही समान क्षीण होगया । यदि कोई अंग्रेज यवनज्योतिष मानने लगे

तो जान लो कि वह अंग्रेजों की और हमारी बुद्धि का मध्यस्थ है। याद रक्खो जो बल हीन है, उसी को महामारी सतावेगी और जिसकी बुद्धि क्षीण है, उसी को यवनज्योतिष का भ्रम होगा।

महामारी यूरोप में भी हुई और यवन ज्योतिष का प्रचार भी यूरोप में रहा। टैकोब्रेही डेन्मार्क के राजपुत्र ने अपना जन्म यवनज्योतिष में बिताया। यूरोप में १७ वीं सदी तक बड़े नामी यवनज्योतिषी हुवे। वहां के कारडीन और अरटीन अब हिन्दुस्तान में स्वामी रामानन्द और महात्मा लक्ष्मीदास होकर जन्मे हैं। अब भी एक दो यवनज्योतिषी यूरोप में हैं। यूरोप के ज्योतिषियों ने " पृथ्वी का प्रलय होगा " यह बात कई बार कही। हिन्दुस्तान में सन् १८९८ में ८ ग्रह एक राशि में इकट्ठे हुवे और ज्योतिषियों ने कहा कि प्रलय होजायगा। सन् १५२४ में यूरोप के एक ज्योतिषी ने प्रलय बतलाया तो वहां प्रेसीडेण्ट औरियल साहब ने आप बचने को एक बड़ी भारी नाव बनाई।

यवन ज्योतिष क्यों न चलै। इसे झूंठ कौन सिद्ध कर सकता है, क्यों कि यवनज्योतिष के भिन्न २ मत हैं। एक मत से एक बात सिद्ध होती है, दूसरे से उसके विरुद्ध दूसरी। इन दो मतों में एक तो अवश्य सच्चा हुवा। गौंडे में घोड़े शाह की दरगाह (कबर) से यह बात सिद्ध होगी। कई वर्ष हुये कि गौंडा जिले के बड़े साहब के सरिश्तेदार का एक प्यारा घोड़ा मरगया, उन्होंने उसके लिये एक कबर बनादी। कुछ वर्षों में यह कबर गिरगई और कोई मुकदमेवाला मुद्दई गांव से कचहरी

को जाता वहां एक पेड़के नीचे बैठगया और सोचने लगा। ओहो !! यह कैसे महात्माकी कबर टूटी पड़ी है और कोई इसे नहीं बनवाता। यदि मैं यह मुकदमा इस महात्मा की दया से जीत जाऊं तो नई कबर बनवादूं थोड़ी देर पीछे मुद्दाअला भी उसी रास्ते से कचहरीको गया और उसी पेड़ के नीचे बैठा। उसने भी वही बात सोची कि अगर मैं जीत जाऊं तो नई कबर बनवादूं। एक तो मुकदमा अवश्य ही जीतेगा, जो जीत गया उसने महात्माकी बड़ी सुन्दर कवर बनवादी वहां दिये जलने लगे और फूल चढ़ने लगे। पर सरिश्तेदारजी से यह पता लगा कि वह महात्मा उनका घोड़ा था और इस लिये उसका नाम घोड़ाशाह होगया।

यवनज्योतिष के अनुसार जन्मपत्री के उतने ही भिन्न २ फल होंगे, जितने कि फलादेश के ग्रन्थ हैं। प्रत्येक ग्रन्थकार ने अपना२अनुमान लिखा है। सो कोई न कोई अनुमान किसी न किसी जगह ठीक लगजायगा। परन्तु सब जगह ठीक नहीं लगसकता और न ये बातें तर्कशास्त्र के सामने ठहर सक्ती हैं। किसी मनुष्य की कुण्डली लाओ, हम यह सिद्ध करदेंगे कि वह बड़ा ही धनवान् है। यह भी सिद्ध करदेंगे कि वह महादरिद्र है। हम दोनों बातों के प्रमाण देसकते हैं कि वह अल्पायु होगा और वही दीर्घायु होगा। यवनज्योतिष वाले जैसा अवसर देखते हैं वैसे ही श्लोक दिखाते हैं। इस लिये इस भ्रम का मिटना कठिन है। लोग कहते हैं कि ज्योतिषी पुरानी बातों को तो ठीक बतलादेते हैं, पर होनेवाली बातों को ठीक नहीं बतलासकते। इसका

क्या कारण है ? ज्योतिष में सभीप्रकार की बातें मिल-सक्ती हैं, जो बात होगई, उनके श्लोक कहदेने में क्या देर लगतीहै, पर होनेवाली बातों का कहना खेल नहीं है॥

यूरोप में महामारी भी हुई और यवनज्योतिष भी फैला और जब वहां के लोगों ने बुद्धि की उन्नति की तो दोनों बातें उडगईं, इस से यह अनुमान भी होता है कि हमारी बुद्धि भी उन्नति करेगी और समय पाकर हम भी इन दोनों घोर आपत्तियों से बचजायेंगे। यदि यह बात सच न निकली तो इस ज्योतिष के झूठ होने का अधिक प्रमाण आप क्या मांगते हैं।

पर उस समय के आने तक जिनके कहने से छाती फटजाय ऐसे घोर अत्याचार बडे२घरानों की निरपराधिनी लडकियों को भुगतने पडेंगे। यदि मैं ऐसे २ घोर अनर्थों को अपनी आंखों से न देखता तो इतना समय इस खोज में और इस पुस्तकके लिखने में न लगाता। मुझे तो पुस्तक लिखने का अवकाश भी नहीं है। सर्कार तो दो एक छुट्टी दे भी देती है, पर चोर और डाकू छुट्टियों में भी चैन नहींदेते। जो मजिस्ट्रेट अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहे तो वह हरएक समय प्रजाकी विपत्ति को सुनने के लिये तयार रहे। उसे पुस्तक लिखनेका समय कहां है। अब मैं दो तीन वे बातें कहूंगा कि जिनका मैं साक्षी हूं।

एक बन्देदीन की स्त्री लडका छोडकर मरगई, बन्देदीन ने दूसरा विवाह किया, जिसकी स्त्री सन्तान छोडजाती है उसे वही लडकी मिलेगी जिसके ७ वें, ८ वें, ४ थे, १२ वें वा लग्न में मंगल हो। ऐसी कन्या

को मंगली कहते हैं। भले लोग मंगली कन्या के नाम से कोसभर भागते हैं। ये दूसरे विवाह में बंदेदीनोंको चढ़ाई जाती हैं। इस बन्देदीन का बडा भारी कुटम्ब है, रूखी सूखी रोटी कठिनता से मिलती है, कुटुम्बकी चिन्ता इसे फूके डालती है। ऐसी दशामें विवाह करने और क्षीण शक्ति होने से क्षय रोग अवश्य लगता है। बन्देदीन क्षय रोग से पीडित हैं, बचने की कुछ भी आशा नहीं है। ये और इनकी माता भाई बहिन दादी चाची सौतेले लड़के सभी इस अभागिनी स्त्री के सिर में हाथ मार रहे हैं कि इसी के मंगलने यह दशा कररक्खी है। बिचारी अबला बालिका को १५ वर्ष भी पूरे नहीं हुवे हैं घूँघट काढकर गरमागरम नमकीन आँसुओं की धारा बहा रही है। पर इन आँसुओं को कौन देखता है। उसे सचमुच विश्वास होरहाहै कि मेरा ही मंगल मेरे पति को खारहा है। एक तो यह मनका कष्ट दूसरे सास ननद और सौतेले लड़कों की रात दिन की गालियाँ। यह कोई कथा नहीं है, कहो तो इस बन्देदीन का नाम और पता बतलादूं। इन अन्यायों को और विपत्तियों को आप क्या जानसक्ते हैं। जिस देश में ऐसा घोर अन्याय हुवा करता है वहीं ईश्वरका कोप होता है और लोग भोजन बिना अकाल से मरते हैं।

एक लडका और एक लडकी एक ही मुहल्ले में और ठीक एक ही समय पर पैदा हुवे। उन दोनों की जन्मपत्री एक ही थीं। उनका नक्षत्र मूल था, जिसका यह फल है कि बालक का बाप मरै। इससे बचनेका यही उपाय है कि बालक का मुंह न देखा जाय। लड़की तो उसी

समय दूर गांव में भेजदीगई और थोडे ही समय में दूध न पाने से मरगई। लड़का अपने बाप का पहिला ही लडका था। क्या करते रखना पडा। लडके का बाप इस समय ७९ वर्ष का है। जबतक लड़की की मा जीती रही इस लड़के को देखकर पछताती रही। हाय! हमने कैसी मूर्खता की जो लडकी को फैंक दिया। देखो लडके के बाप को कुछ भी नहीं हुवा।

एक लड़की इसी प्रकार मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई, पर उसकी मा ने उसे न लेजाने दिया। तब उसके घर के लोगों ने उस स्त्री से कहा, तू अपनी लड़की का मुंह देखना चाहती है, या अपने पति का। वह रो पडी और लड़की को लेजाने दिया। हाय!! इन घोर बातों को सुनकर भी आपकी छाती नहीं फटती। मेरे तो आंसू कागज पर टपक रहे हैं और कलेजा मुंह को आता है। क्या आपका हृदय पत्थर से भी कठोर होगया, जो इन घटनाओं को सुनकर पिघल नहीं जाता। हाय! हमारी लडकियों की यह दशा है तो हम लोग डूब क्यों नहीं मरते। हमारे हिन्दुस्तान की एक ही बात प्रसिद्ध थी, अर्थात् दया। दया ही धर्मका मूल है। ऋषि सन्तान की जो शत्रुओं को भी दुःखी नहीं देख सकते थे, आज वह दया कहां लोप होगई। जो हम ऐसे घोर अनर्थों को अपनी आंखों से देखते और कानों से सुन रहे हैं और फिर भी हमारा वज्र हृदय नहीं फटता। हे ईश्वर! ऐसी दशा दिखाने से तो तू हमें इस संसार में उत्पन्न ही न करता तो अच्छा था।

जब मैं कालिज में पढता था, तब एक वैश्य के लडके से जो मेरेसाथ पढता था, मेरी मित्रता हुई। उसने मेरे पास दवा की बहुत सी शीशियां देख कर कहा कि बाबूजी ! मुझे कोई ऐसी दवा देदो,जिससे मेरी सौतेली मा मरजाय। मैंने उस से कारण पूछा तो उसने कहा कि उसकी सिंह योनि है और मेरी मृग योनि। इस से मैं दिन ब दिन सूखता जारहा हूं और मरजाऊंगा। मैंने कहा कि ऐसे घोर पापकी बात कहता है, तुझे पाप का डर नहीं है, वह बोला, चार पैसे दान करदूंगा।

जो २ कठोर अत्याचार देश और पर्वत में मैंने यवनज्योतिष के प्रभाव से होते हुवे देखे हैं, यदि उनका पूरा २ वर्णन लिखने बैठूं, तो एक दूसरा महाभारत बन जाय। इन घोर अत्याचारों को देखते २ मनुष्यों के वज्र समान कठोर चित्त होगये हैं, दया का लेश भी नहीं रहा। स्वामीजी को घूंस देते देते सच्चाई और सफाई का नाम तक नहीं रहा। बहुतेरे लडकों का व्याह इस लिये होता है कि किन्हीं लडकियों के ग्रह उन के ग्रहों से मिल जाते हैं और लडकों से मेल नहीं खाते। इस कुलकी लाज रखनेको इस लडके का व्याह अवश्य ही करदेना पडा। यदि उस छोटी अवस्था में इन लडकों का व्याह न करादिया जाता तो ये न जाने कितनी उन्नति करते और कितना पढलेते। बहुतेरे बूढे बन्देदीनों का तीसरा चौथा विवाह न होता, यदि किसी लडकी के खोटे ग्रह इन बूढे खबीसों के

ग्रहोंसे मेल न खाते। अथवा स्वामी लक्ष्मीदासजी की भलीभांति पूजा न कीजाती और उनके चरणों में चांदी के फूल न चढाये जाते। बहुतेरे लोगोंने दूसरे विवाह इसी लिये किये हैं कि स्वामिजीने उनके जन्मपत्र में दो विवाह बतलाये थे और कहाथा कि " द्विभार्या-योग" है, अर्थात् दो विवाह करने से सन्तान होगी।

इन घोर विपत्तियों को देखकर यदि मैं उनको हटाने का कुछ भी यत्न न करूं तो मैं उस सर्वशक्तिमान् के सामने अपराधी ठहरूं, जो इन लडकियों के आंसुओं को लम्बे घूंघट काढने पर भी देखलेता है। मेरेकई मित्रों ने मुझसे कहा कि ऐसा काम मतकरो, इसमें अपयश है। समय पाकर लोग बुद्धिमान् होंगे आपही यह भ्रम मिट जायगा, तुम क्यों लोगों के बुरे बनते हो। यद्यपि "न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्" इस गीता के वचन के अनुसार यह शिक्षा उनकी बुद्धिमत्ता से भरी हुई थी। क्योंकि पुस्तक बनाने और छपवाने में अपना समय व धन खोना और मूर्ख लोगों में उलटा अपयश लेना कोई बुद्धिमानीका काम नहीं है। तथापि इतने बडे भारी पुण्यके सामने यह हानि और अपयश किसी गिनती में नहीं। ऐसे भी तो मनुष्य ही हुवे हैं, जिन्होंने अपने कर्त्तव्य के पालन में प्राण तक देदिये। यदि मेरे इस परिश्रमसे एक मनुष्य भी गिरने से बच-जाय और एक हिन्दू कन्या की भी विपत्ति टलजाय तौ भी मैं अपने को कृतार्थ समझूंगा। पर मुझे तो इससे अधिक आशा है। क्यों कि मैंने येही बातैं (जो इस पुस्तक में दिखलाई हैं) बहुत से स्वदेशीय लोगों से

कहीं और उनकी समझ में ठीक आई। अब वे लोग भी रामानन्द और लक्ष्मीदास को भली भांति जान गये हैं। इसपुस्तक को पढ़कर हजारों लोग यवनज्योतिष के मर्म को समझ जायंगे और हजारों कन्याओं की विपत्ति दूर होगी और मूर्खता की वेदी में उनका बलिदान न होगा, यह मुझे दृढ आशा है।

हिन्दूशास्त्र के अनुसार मनुष्य जो बातें सोचता है, वे व्यर्थ नहीं जातीं। वे सञ्चित होकर उसको अगले जन्म में भी सहायता देती हैं। यदि यह बात सत्य हो तो मैं इस खोज को अपने जन्म भरकी बहुमूल्य कमाई समझूंगा। मुझे यह निश्चय है कि अगली मनुष्य गणना में श्रीमान् रामानन्द लक्ष्मीदास एन्डको Messrs Rama Nand Lakshmi Dass & Co. Un-Limited अनलिमिटेड(असंख्य) अपने जीवन से आपही लज्जित होजावेंगे और कोई दूसरा उद्यम करेंगे। मुझे इस बातकी बड़ी ही खुशी होगी कि मेरे देखते २ हिन्दू कन्याओं की विपत्तियां कम होजावेंगी। मेरे जीवनसमय ही में यह रामानन्दी पन्थ (यवनज्योतिष) नहीं रहेगा और इस की कथा मात्र रहजायगी। मरनेके पीछे जब उन लड़कियों के आत्मा से मेरी भेंट होगी जो कि ज्योतिषी महाराज के कहने से फेंकदी गई थीं और जिनको मैं भली भांति जानता हूं, तो मैं उनको पूरा विश्वास दिलाऊंगा कि मैंने उनका यथोचित बदला लेलिया है। उनका तर्पण यही है, उनका मन तभी ठंडा होगा।

हाय !! कौन जानता था कि हम लोग ऐसे घोर अन्धकार में टकरायेंगे और हमैं ऐसा भयङ्कर रोग लगेगा

जो कि हमारा समूल विनाश करदेगा। हमारे मनुजी कहगये हैं कि स्त्री लक्ष्मीरूप है, जहां स्त्री सुख से रहती हैं और इनकी पूजा होती है, वहां लक्ष्मीका वास है। जहां स्त्रियों को कष्ट और विपत्ति है, वहां दारिद्रय और नरक है। देखो अंगरेज अपनी स्त्रियों का कैसा आदर करते हैं। उन के घर लक्ष्मी न बसेगी तो कहां बसेगी। हम भी अब अंगरेजी शिक्षा पाकर कुछ २ स्त्रियोंका आदर करने लगे हैं, पर जबतक यवनज्योतिष की छुरी उनके गले पर रक्खी हुई है, तबतक हम उनका पूरा आदर नहीं करसकते। झूंठ मूठ उनके ग्रह खोटे बतलाये जाते हैं, जिससे उनको जन्मभर कष्ट भोगना पडता है। उनकी दशा सुधारने के लिये मैं मूर्खोंकी गालियों को तृणवत् समझता हूं॥

चित्र का वर्णन।

इस चित्र में हिन्दुस्तान का नकशा है। उसमें यवनज्योतिष रूप मकान खडा है। छत इस मकान का गणित ज्योतिष का है पर बुनियाद मनुष्यों के भोलेपन और अज्ञानता की है। ज्ञान और बुद्धि रूपी सब्बलों से यह मकान तोडा जारहा है। इंटें गिर रही हैं और मकान गिरनेही को है झुक गया है। इतने ही में थियोसौफी वालोंने दूसरी ओर से टेकें अथवा अडाने लगाये हैं। मकान अगम्य है और उसमें से सारे हिन्दुस्तान में जाल अथवा रस्सियां फैली हैं और हिन्दुस्तान की कन्या उन रस्सियों में फांसी खा रही है। फलित ज्योतिषी गृध्र रूपबनकर उसकी आंख निकाल रहे हैं।


SUMMARY OF THE BOOK.
CROWBARS
WESTERN EDUCATION
AND
REFORMERS
PROPS
NON CAUSA
MAID OF INDIA

आठवां अध्याय।

यवनज्योतिषी।

यदि यवनज्योतिषी ठग ही होते तो इनका ईश्वरने नाश क्यों नहीं किया ?

मुझको ईश्वर के न्याय का पूरा विश्वास है। ईश्वरके न्याय की चक्की बड़ी धीमी चलती है, पर बड़ा महीन पीसती है। यह बात इतनी ही ठीक है जैसे कि दो और दो मिलकर चार होते हैं। यदि अपराधी अपराध करते ही उसीसमय मरजाता तो पृथ्वीमें कोई भी पाप न करता और सब मनुष्य एक समान धर्मात्मा होते। इस दशा में भला बुरा मनुष्य कैसे पहिचाना जाता, सभी भले होते। इसी परीक्षा के लिये ईश्वर के न्यायकी चक्की बड़ी मन्द चलती है, भला काम करने से भी बुरा होता दीखता है, जिसमें भलेकी पूरी परीक्षा होजाय, राजा हरिश्चन्द्र की कैसी परीक्षा लीगई थी। यदि ईश्वर का न्याय न होता तो यह पृथ्वी लाखों करोड़ों वर्षसे किस पर ठहरती। अन्त में धर्म ही की जय होती है, स्वार्थी क्षीण होता है।

रामानन्द के पुरुषा लोग स्वार्थी न थे। उन्होंने तो यवनज्योतिष को सच्ची विद्या समझा और सच्चे मन से खोज की। रामानन्द भी यह नहीं जानता कि यहविद्या यवनों की गप्प है, उसे तो इस विद्या में पूरा विश्वास है। जान बूझकर इतनी कन्याओं के लिये ऐसी विपत्ति का जाल फैलाता तो इस कलियुग में भी धरती माता फट जाती और उसे निगल जाती अथवा आकाश से अग्नि की ज्वाला गिरती और उसे चाटजाती। परन्तु

ईश्वर उसे क्षमा करता है,क्योंकि वह यह नहीं जानता कि मैं क्या अनर्थ कररहा हूं। यह अपराध रामानन्द से अनजाने होता है, इस लिये ईश्वर उसको नाश नहीं करता। रामानंद ने बहुत विद्या नहीं पढ़ी और उसका मन सच्चा है। सभी लोग उसे घूंस नहीं देते। कोई बंदेदीन मिलगये तो क्या हुवा। तौभी रामानन्द के घर जाकर देखो तो उसकी बहन, लड़की, बहू, फूफियां रांड हैं। जितने रांड रंडुवे रामानन्द के घर हैं, उतने किसी के घर नहीं, उसको स्वप्न में भी सुख नहीं है। इतना धन कमाते हैं, पर हमने इनको और इनके सन्तान को नंगा और सदा भीख मांगते ही देखा। बहुतेरे ज्योतिषियोंने बडे दुःख से यह कहा कि यदि हमारी दस रुपये महीने की भी और कहीं से आजीविका होती तो इस ठगविद्या को हम छोड़ देते। जन्म भर यही पढ़ते रहे अब कहां जायँ। ऐसेही दो मनुष्यों की कथा जो उन्होंने अपने मुखसे कही थी १० वें अध्याय में है।

प्रश्न२–जब यवनज्योतिष का लोप होजायगा तो क्या रामानन्दजी भूखे मरजायेंगे ?

उत्तर–यही बात है तो डाकू और चोरों को भी दण्ड न देना चाहिये, क्योंकि उनके बाल बच्चे भूखों मरते हैं। एक अंग्रेजी पुस्तक में यह प्रश्न था कि यदि लोग न मरें तो क्या कफन सन्दूक बनाने वाले भूखे मरजांय ? इसका उत्तर था कि कभी नहीं क्योंकि वे और आजीविका ढूंढलेंगे। यवनज्योतिषियोंकी धारणा शक्ति और बुद्धि अद्भुत होती है। कई पीढियोंसे यही

काम करते २ उनकी बुद्धि ऐसी तेज होजाती है कि वे देखते ही दूसरों के मन का भेद जान लेते हैं। बड़े २ हिसाब बिना कागज कलम योंही करदेते हैं। पुस्तकों के अध्यायके अध्याय रटडालते हैं। ये लोग जिस विद्या में हाथ डालेंगे,उसीमें निपुण होजावेंगे,इस में क्या सन्देह है। सर्कारी परीक्षा (इम्तहान) इनके लिये क्या कठिन है। इस समय तो ये उल्टे मार्ग में चल रहे हैं, सैंकडों पुस्तकें रट डालते हैं। सात आठ वर्ष तक तो पहिले संस्कृत पढते हैं, फिर मुहूर्त्तचिन्तामणि, ग्रहलाघव, सारावली इत्यादि रटते हैं, रटते २ मरजाते हैं। मुझे इन लोगों को देखकर बडी दया आती है। इतना परिश्रम सीधे मार्ग में करते तो न जाने ये कहां पहुंचते और क्या करडालते। मुझे निश्चय है कि इनकी सन्तान मुझे सच्चे मन से आशीर्वाद देगी, क्यों कि मैं उनको धन, धर्म और सुख पाने का सच्चा और सीधा मार्ग बतलाता हूं, मैं इनका सच्चा हितैषी हूं, और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह रामानन्द की सन्तान को और२ आजीविकाओं के द्वारा बहुत धनी बनावै॥

नवां अध्याय ।

यवनज्योतिष के झूंठ होने में और प्रमाण ।

१-किसी अंग्रेज के हिन्दुस्तान में बच्चा पैदा हो, उसका जन्मपत्र बनाकर किसी प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास लेजाओ और उसका फल पूछो तो वह लड़की के लिये तो यह बतावेगा कि इसका ९-१० वर्ष में विवाह हो, १५ वें वर्ष सन्तान का योग है, २० वें वर्ष सौत आवै,इत्यादि और लड़के के लिये यह बतलावेगा कि इसका १२ वें वर्ष में विवाह हो, स्त्री से अनबन रहे, १८ वें वर्ष में दूसरा विवाह हो इत्यादि। जन्मपत्री तो हिन्दुस्तानी और अंग्रेज की एक ही होगी। जन्मपत्री से केवल यही जानसकते हैं कि बालक के जन्म के समय कौन ग्रह किस राशि में था। यदि कोई ज्योतिषी जन्म-पत्री देखकर यह बतलादे कि यह अंग्रेज की है वा हिन्दू की वा मुसल्मान की, वह पुस्तक समेत मेरे सम्मुख आवै उसे दस हजार रुपये दूंगा।

२-तीसरे कोठे (सहजस्थान) से भाई बहनोंका ज्ञान होता है। पुरुषग्रह हो तो भाई, स्त्रीग्रह होतो बहन और नपुंसकग्रह होतो भाई बहन हो, लिखा है। शुभ ग्रह हों तो ये बचें,अशुभ ग्रह हों तो मरें वा कोई न हो। जिस मनुष्य के चार भाई और चार बहिन हैं, तो उन आठों भाई बहनों के तीसरे कोठे में एक से ग्रह होने चाहिये। क्योंकि उन आठों में प्रत्येक के उतने ही भाई बहिन हैं। पर एक के ग्रह देखो तो आप कहेंगे, इसके भाई हैं। दूसरेके ग्रह देखो तो कहेंगे बहिन हैं। तीसरेके

केतु है और शनि की दृष्टि है, आप कहेंगे भाई बहिन कुछ नहीं हैं।

३-शनिक्षेत्रे यदाभानुः भानुक्षेत्रे यदा शनिः। सद्य-एव भवेन्मृत्युः शङ्करोयदि रक्षति॥ शनि क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बालक होते ही मरजाय चाहे ईश्वर भीउसकी रक्षा करते क्यों न आवैं। शनि क्षेत्र=मकर और कुम्भ राशि में सूर्य दो महीने रहता है और सूर्य क्षेत्र=सिंह राशि में शनि ढाईवर्ष रहता है तो तीसवर्ष में दो वर्ष ऐसे होने चाहिये, जिन में माघ और फाल्गुन के महीने में सारी पृथ्वी में जो बालक हों, वे होते ही मरजांय। क्या आपने ऐसे दो वर्ष देखे हैं, कहो तो ऐसे समय में हुवे बालकों की जन्मपात्रियां दिखादूं। यवनज्योतिषी कहेगा कि ये बालक किसी ग्रहकी दृष्टि से बचगये। क्या ग्रह की दृष्टि ईश्वरकी रक्षा से भी बलवान् है?

४-धनी लोगों के जन्मपत्रों में मैंने यह भी लिखा देखा कि शनि उच्च का है, इस लिये बडा धनी होगा। गणित मिलाकर देखो तो शनि ढाईवर्ष तक तुला में उच्चका होता है। ढाईवर्ष तक जो लोग उत्पन्न हुवे, सभी का शनि उच्च का होगा, पर उन में से बहुतेरे घोर दरिद्री हैं।

५—पहिले कोठे वा लग्न से बालक का रंग बतलाते हैं, गोरा है वा काला? क्या रूस और यूरोप भरमें सब के लग्न के ग्रहों का एक ही फल रहता है, जो सब ही गोरे होते हैं। और हवश देश में सबही के केतु होता है, जो सब काले हों। कोई गोरे और कोई काले तो

हिन्दुस्तान में होतेहैं,इसीलिये यह लग्नफल बनायागया।

६-मैंने बहुतसी रांड स्त्रियों की जन्मपत्रियां बटोर रक्खी हैं,और उन्हें मैं सुहागिन स्त्रियों की जन्मपत्रियों से मिलाता हूं। कोई ज्योतिषी रांड स्त्रियों की जन्मपत्रियां अलग करदेवे तो मैं उसे बहुत द्रव्य दूंगा। आश्चर्य तो इस बात का है कि जिनके वैधव्ययोग है, वे सुहागिन हैं और जिनके सुहाग के अच्छे योग हैं,वे विधवाहैं।

७-प्रायः ज्योतिषी तेजी मन्दी की पुस्तकें छापते हैं। यदि ये लोग तेजी मन्दीको जान लेते तो लखपति हो-जाते, आपसे चार पैसे ठगने को क्यों आते? भाव मन्दाहुवा एक रुपये का सौदा लेलिया, तेज हुवा तो दो में बेचदिया, इसप्रकार लखपति होसकते हैं।

एक ज्योतिषी ने तीन लड़कोंसे कहा कि तुम परीक्षा में हार जाओगे। उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया, जब हेड-मास्टर ने इस बात को सुना तो ज्योतिषीजी को बुलाया और कहा कि मुझे ज्योतिष में बड़ा विश्वासहै। ज्योतिषीजी जब इनके घर आये, इन्होंने सब लड़कों के सामने उनके बेंत उड़ाये और लड़कों से कहा कि-ज्योतिषीजी ने यह न जाना कि हमें क्या मिलेगा। जो अपनी बात नहीं जानता, वह तुम्हारी क्या बात बतला सकेगा?तब वे लड़के फिर पढने लगे और जीतगये।

८-पृष्ठेचन्द्रे भवेन्मृत्युः वामेचन्द्रेधनक्षयः-पृष्ठचंद्रमा में यात्रा करने से मृत्यु होती है। उसी मुंह से आप कहते हैं कि आयु ब्रह्माजी के यहां से रची जाती है। चाहे सूर्य पश्चिम से क्यों न उदय हो, आयु घट बढ नहीं सकती। अब आपकी कौनसी बात सच्ची रही?

जो आयु गर्भ से ही रचीगई, क्या आप उसको पृष्ठ-चन्द्रमामें यात्रा करने से घटा बढा सकते हैं ?

९-जब आयु अटल है तो नाडीवेध में विवाह करने से टल क्यों जाती है ? आप कहते हैं-" न हि चलति नराणां भाविनी कर्मरेखा" पश्चिम से सूर्य भी उदय हो तौ भी कर्मरेखा नहीं टलती। फिर आप ज्योतिषी के पास क्यों जातेहैं और क्यों कर्मरेखा को टालनेके लिये उसको चांदीके फूल चढाते हैं ? जब कोई बात टल नहीं सकती तो ज्योतिषीजी का फिर क्या काम रहा ? और यदि टल सकती है तो ज्योतिष को फूंको क्योंकि उसके अनुसार सब बातें उत्पन्न होने ही के समय नियत हो गईं और टल नहीं सकीं एकबात पर पक्के रहो।

१०-यदि ज्योतिषी शुभ मुहूर्त्त और भाग्य को जानता तो क्या इसका लाभ आप न उठाता। क्या वह सब भाग्यशालिनी कन्याओं को अपने घर न लेजाता औरों से कहदेता कि उनका भाग्य ठीक नहीं। शुभ मुहूर्त्त देखकर कितने ज्योतिषी लखपति होगये ? उन का घर रांड रंडुवों से क्यों भरा है ?

११-इनकी सहायता से आपने कौनसा लाभ उठाया? क्या हिन्दुओं के यहां रांड रंडुवे कम होते हैं ? १९०१ की मनुष्य गणनाकी पुस्तक देखने से जान पडता है कि प्रति दस हजार मनुष्य हिन्दुओं में ६७६ रंडुवे हैं, मुसलमानों में ५६७ हैं। प्रति दस हजार १७४३ रांड हिन्दुओं में हैं और १४८३ मुसलमानों में हैं। आप कहेंगे कि मुसलान रांडों का दूसरा विवाह होजाता है और हिन्दुओं में नहीं होता। यह ठीक नहीं है, क्योंकि थोडे से

उच्च जातियों के हिन्दुओं में विधवाविवाह नहीं होता अधिकतर लोगों में कराव होता है। हिन्दू रांडों का विवाह नहीं होता तो क्या रंडुवों का भी विवाह नहीं होता। पहिले अध्याय में ६६ वर्ष के बन्देदीन का वर्णन होचुका है जो बाल काले करने की दवा मोल लेरहे थे, उन्हें यही दुःख था कि हमारी सम्पत्ति कौन खायेगा और हमारे मरनेके समय कौन रोवेगा? जब हिन्दुओं में रांड और रंडुवे अधिक हैं, तो इस यवनज्योतिषसे हमैं क्या लाभ हुवा? और मुसलमानों को बिना ज्योतिष विवाह करने में क्या हानि हुई?

१२-आपका नीतिशास्त्र कहता है कि-"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्" जो बुद्धिमान् है वही बलवान् है। अंग्रेज जो हमारे देश में राज्य कररहे हैं, हम से अधिक बलवान् एवं बुद्धिमान् हैं। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान में जो २ अच्छी बातैं थीं, उन सबकी प्रशंसा की। गीता की कैसी प्रशंसा की है, उपनिषद्, योग, गणित, आयुर्वेद इन सब को सराहाहै। किसी बुद्धिमान् अंग्रेज ने आजतक इस यवनज्योतिष की प्रशंसा क्यों न की। अंग्रेजों को जाने दो, अपने ही देश के परम-विद्वान् ज्योतिष विद्या के शिरोमणि भास्कराचार्य, बापूदेवशास्त्री, महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी और विश्वगुणादर्श के रचयिता आदि इन लोगों ने फलितज्योतिष को क्यों झूठा कहा है?

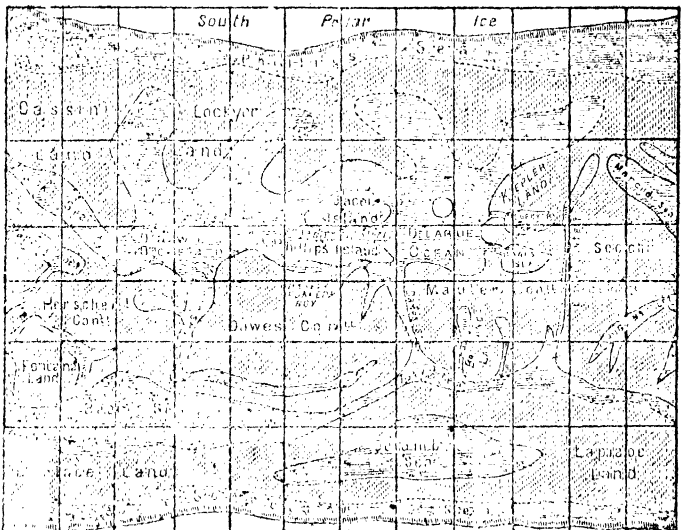
जिस मनुष्य में न्यायशक्ति होती है वह यह विचार करता है कि इस मनुष्य की बुद्धि मेरी बुद्धि से कम है वा अधिक, इसने कितना पढ़ा है, और विद्या की कितनी खोज की है। यदि देखा कि अपनेसे अधिक जानता है तो उसकी बात स्वीकार करते हैं। पर लठमार अपनी ही गाये जाते हैं। आप अपनी बुद्धि और विद्या को बापूदेवशास्त्री और सुधाकरद्विवेदी महाराजसे मिलाइये, यदि आप अधिक पढ़े हों तो हम आपका कहा मानें यदि वे अधिक पढ़े हैं तो आप उनका कहा मानो। यही न्यायशास्त्र है, इसी न्यायशक्ति के न होने से हिन्दुस्तान की अब यह दशा हुई है॥

हाय उस हिन्दू लड़की के भाग्यपर जिस के पहिले चौथे,७ वें, ८ वें और १२ वें कोठे में मंगल हो। उसे मंगली कहते हैं। उसका रूप वा उस के बाप का धन निष्फल है और उसका विवाह ६६ वर्ष के बूढ़े बंदेदीन से होगा और पांच सात वर्ष में अवश्य विधवा धरी धराई है।

ओह!! स्वामी लक्ष्मीदासजी ने क्या यह नहीं कह-दिया था कि इसका वैधव्य योग है, क्या स्वामीजी के वचन झूंठ होसकते थे? देखो कैसी अभागिन यह लड़की निकली, दो वर्ष के भीतर ही विधवा होगई। स्वामी जी को बलिहारी है।

यवनज्योतिष के झूठा होने का सब से बड़ा प्रमाण मङ्गल ग्रह है । प्रायः १४०० वर्ष से यह देखरहा है कि मेरे (मंगल) के नाम से लाखों हिन्दू अबला बालाओं पर कैसी विपत्ति पड़रही है । इतना अनर्थ देखकर भी इस से यह न होसका कि अपने डबीज समुद्र के पानी से सारे हिन्दुस्तान में प्रलय करदे । अवश्य यह नपुंसक है और ऐसा नपुंसक ग्रह क्या करसकेगा ?

मंगल का चित्र और डबीज़समुद्र मरकेट साहब के नक्शे फोटोग्राफ से ।



दशवां अध्याय।

आयु घटाने और बढाने की अद्भुत रीतियां।

ज्योतिषी लोग मृत्यु का विचार बहुत अच्छा करते हैं, और ज्योतिष का विश्वास इसी विचार से अधिकतर पुष्ट हुवा है। उन्हों ने मृत्यु का वर्ष ही नहीं किन्तु महीना और दिन तक ठीक बतलादिया है, इस विचार को निर्याण कहते हैं। मुझे निर्याण की सचाई का बड़ा विश्वास है, क्योंकि निर्याण बहुधा सच्चा निकलता है। क्या रामद्याल नहीं कहता था कि मेरे बाप से स्वामी रामानन्दजी ने कहाथा कि ७६ वें वर्ष में मरोगे और ठीक उसी वर्ष में वे मरे। ऐसे सच्चे मनुष्य का विश्वास मैं क्यों न करूं। मैंने निर्याण को बहुधा सत्य पाया, केवल एकवार झूठा निकला।

निर्याण की सचाई मानसिक विद्या से सम्बन्ध रखती है। मैंने किसी पुस्तक में पढाथा कि एक मनुष्यने किसी के सोने की कोठरी की दीवार में चमकीले अक्षरों से यह लिख दिया था कि तू आज रातको अवश्य मरेगा। जब रातको वे अक्षर चमकने लगे (जैसे दियासलाई रगड़ने से अन्धेरे में चमकती है) तो वह घबरागया। उसने समझा कि ईश्वर ही ने ये अक्षर लिखे हैं। उसी रातको उस के दिल का धड़कना बन्द हुवा और वह मरगया। रामद्याल के बाप को भी पूरा विश्वास होगया था कि ७६ वें वर्ष मरना है और उस के दिलका धड़कना बन्द होगया। जिनका दिल बलवान् होता है उनपर स्वामीजी के बचन नहीं लगते। एक मनुष्य स्वामीजी के बतलाये हुवे निर्याण के अनुसार ६ बार

हरिद्वार गङ्गाजी में मरने के लिये गया। जब वह समय टल गया तो लौट आया, उसका दिल बलवान् था।

एक मनुष्य ७४ वें वर्ष हरिद्वार जाने कहता था, क्योंकि स्वामीजी ने ७४ वें वर्ष उसका मृत्यु योग लिखा था। पर मैंने यवन ज्योतिष से उसका विश्वास हटा दिया और समझा दिया कि ये बातें मानसिक विद्या और विश्वास से सम्बन्ध रखती हैं। इसका फल यह हुवा कि वह अबतक जीता है।

ज्योतिषी लोग जवान और चंगे लोगों का निर्याण नहीं निकालते। बूढे और रोगियों का ही विचार करते हैं। कच्चे दिल वाले उन्हें सच्चा बना देते हैं, पक्के दिल वाले उन्हें झूठा बनाते हैं।

ज्योतिष से केवल हानिही नहीं हुई, कहीं २ लाभ भी हुवा। ज्योतिषी लोग आयुभी बढादेते हैं। मैं एक ८८ वर्ष के मनुष्य को जानता हूं, जिस को ज्योतिषी ने यह बता दिया है कि तेरी आयु ९४ वर्षकी है। इस मनुष्य को सैकडों वार रोग हुवे, पर उसका विश्वास वना रहा कि ९४ वर्ष तक मुझे कुछ नहीं होसकता। वह तो अभी बैठा हुवा है, पर उससेभी बलवान् निरोगी उसके सामने मरचुके हैं। उसी का लड़का उस के सामने मरगया।

मानासिक विश्वास से मनुष्य कितने ही रोगों को अच्छा कर सकता है आयु भी घटा बढ़ा सकताहै। एक मनुष्य को तेजारी ज्वर आता था मैंने कहा कि मैं मंत्र जानता हूं। एक लम्बा जूता लेकर इतवार के दिन तडके उसे एक घूंट पानी पिलादिया और कहा अब तेरा ज्वर

गया। अब आवेगा तो इसी जूते से १०० जूते तेरेलगेंगे और १०० तेरेज्वर के। उसको विश्वास होगया और ज्वर छूट गया। हिन्दू लोगों ने इस मानसिक विद्या की बड़ी उन्नति की थी।

एक ज्योतिषी ने किसी राजा से कह दिया कि ६ महीने आपकी आयु और है, वह बड़ा दुःखी हुवा पर उसके बुद्धिमान् मंत्री ने उस ज्योतिषी से पूछा कि आपकी कितनी आयु और है, उसने कहा २० वर्ष। मंत्री के सङ्केत (इशारे) से ज्योतिषी का सिर किसी ने वहीं पर काट डाला। मंत्री ने राजा से कहा, देखिये महाराज! यह आपकी आयु क्या जानेगा, अपनीआयु तो जान नहीं सका, तब राजा की चिन्ता गई।

इसी प्रकार एक ज्योतिषी को झूठा सिद्ध करने के लिये एक राजाने पूंछा कि आपकी आयु कितनी और है। उसने कहा जितनी आपकी आयु है, उससे ६ महीने अधिक है। राजाने अपनी आयु के डर से उसे न मारा॥

ग्यारहवां अध्याय।

यवन ज्योतिष का मानसिक विद्यासे सम्बन्ध

सच पूछो तो यवनज्योतिष एक प्रकार का मानसिक रोग है। हम आप भले और बुरे होनहीं सकते। भला मनुष्य वह है, जिसके ग्रह भले हों। मनुष्य की इस में कुछभी बडाई और प्रशंसा नहीं है। बुरा वह है, जिस के ग्रह बुरे हों, मनुष्य का कुछभी दोष नहीं। ग्रहही भले बुरे हैं, मनुष्य एक प्रकार के हथियार हैं। मनुष्य में और पशु में यही भेद है कि मनुष्य भला बुरा जान सक्ता है, पशु नहीं जान सकता। पर जब हम कुछभी नहीं करते, ग्रह हमसे कराते हैं, तो मनुष्य क्या हुवा, पशुहुवा, नरपशु कहिये।

इस दशा में वह अपने भले बुरे कामका उत्तर दाता (जिम्मेदार)भी नहीं होसकता,क्योंकि जैसा ग्रहोंने उससे कराया वैसा ही उसने किया, जब मनुष्य की पशुसंज्ञा हुई और मनुष्य में भला बुरा सोचने और करने की स्वतंत्रता न रही तो धर्म कर्म सब डूबे। ईश्वर ऐसा अन्यायी नहीं होसकता कि किसी मनुष्य के ग्रहों से चोरी वा अधर्म करावै और फिर उन ग्रहों को पाप न लगै। मनुष्य को जो ग्रहों का केवल हथियार मात्र है, पाप लगै। अब हमारे ग्रहों में चोरी या व्यभिचार करना लिखा है, तो हमैं व्यभिचार वा चोरी से क्या पाप हो सक्ता है। हां न करने से पाप है, क्यों कि हम ग्रहों की आज्ञा टालते हैं, बस धर्मशास्त्र की तो इतिश्री हुई। इसलिये यवनज्योतिष को माननेवाले बड़े नास्तिक हैं

और धर्मशास्त्र के घोर शत्रु हैं । सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर को मानना और पूजना छोड़कर ग्रहों को मानते और पूजते हैं, जो उसके सामने बालू के कण के समान हैं। आकाश में कितने करोड़ तारे हैं।

ऐसी स्पष्ट बात को न देखसकना और भ्रम करना मानसिक रोग है। हिन्दुस्तान की गर्मी से हमलोगों की मानसिक शक्ति क्षीण होती गई । मानसिक शक्ति घटने से बल घटगया और हम लोग सैकड़ों वर्षों से और लोगों के अधिकार में चले गये और दबे रहे, इस से हमारी मानासिक शक्ति और भी घटगई है । अब हम यवनज्योतिष की मूर्खता पर हँसते हैं। जब बन्देदीन स्वामी लक्ष्मीदासजी से कहता है कि कोई ऐसी लड़की ढूंढदो, जिस के ग्रहों से मेरी आयु बढ़े तो बत्तीसों दांत खोलदेते हैं। जब नरपशुजी अपनी स्त्री के सामने अपनी वीरता दिखलाते हैं कि मैं काल से नहीं डरता पर मूल नक्षत्र के नाम से मेरी नाडी छूटजाती है तो हम खिलखिलाकर हँस देते हैं। पर इतनी मानसिक शक्ति हम में नहीं रही कि इसका यत्न करें, शराब पीते २ मानसिक शक्ति घटजाती है। शराबी नित्य कहता है कि आज पीलूं, कल से छोड़दूंगा। दूसरे दिन और अधिक पीता है। वेश्यागामी भी नित्य मंसूबे करताहै कि आज देखलूं कल से ऐसा काम न करूंगा। यही दशा हमारी मानासिक शक्ति की है।

पर अभ्यास करने से जैसे शरीर की शक्ति बढ़तीहै, वैसे ही मानसिक शक्ति भी बढ़सक्ती है। पर जबतक हमारा यवनज्योतिष से विश्वास न हटजाय कि-"उद्यो-

गिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः, दैवेन दैवमिति कापुरुषा वदन्ति " जबतक यह बिश्वास हमारे मन में न गढ़ जायगा कि मनुष्य अपना ग्रह आपही है, भला बनना चाहै तो भला बनसक्ता है और बुरा बनना चाहै तो बुरा बनसकता है , तबतक हमारी मानसिक शक्ति क्षीण ही रहेगी।

कई मनुष्यों से मैंने कहा कि भाई खाली क्यों बैठेहो कुछ उद्यम करो। वे बोले कि महाराज उद्यम क्या करैं ज्योतिषीजी ने साढे सातवर्ष शनिश्चर की दशा बतला रक्खी है। जो करेंगे सो ही उलटा होगा इसी लिये सोये हुवे हैं। इसी रीति से मनुष्य पौरुषहीन शक्ति-हीन और उत्साह हीन होते जारहे हैं॥



बारहवां अध्याय।

सत्य ज्योतिष।

पिछले अध्यायों में हमने यह वर्णन किया है कि यवन ज्योतिष मनुष्यों का जीवन देखकर रचागया। इसमें भूल यही हुई कि न्यायशास्त्र और तर्कशास्त्र से इसकी जांच नहीं हुई। यदि जांच होजाती तो फिर यह अटकल पच्चू न रहता।

एक बूढे पण्डितजी अबतक यह कहा करते हैं कि अरे भाई! केला मत खाना, मेरे दद्दा केलाही खाके मरे हैं, बस यही यवन ज्योतिष है। सारी पृथ्वी केला खाती है, उनके दद्दाने केला खाया और मरगये, उन्हों ने समझा कि केला खाने से मनुष्य मरजाता है। एक वार कोई बात देखकर जो अनुमान करलिया जावै, वही यवन ज्योतिष है।

इस यवनज्योतिष ने कितनी कन्याओं का नाश किया, कितनी लडकियें को विधवा बना डाला, क्योंकि उनको ६९ वर्ष के बन्देदीन को छोड़ और कौन लेजा सकता था। कितनियों को बिना ससुर वाले घर पहुंचाया। अश्लेषा वाली लडकियों के लिये विना सास का घर ढूंढना पडा। ज्येष्ठा वाली के लिये विना जेठका घर ढूंढना पडा। लोगों को पौरुषरहित और दैव दैव कहने वाले नपुंसक बनाने के लिये और किस वस्तु की आवश्यकता रहगई।

यह यवन ज्योतिष एक २ मनुष्य का जीवन देखकर लिखा गया था इस लिये इससे काम न चला। सत्य

ज्योतिष हजारों लाखों मनुष्यों के इतिहास जानने से आसकता है। अथवा हमारे पुराने ऋषि मुनियों ने तपस्या और योगके बल से सीखा था। इसमें और यवनज्योतिष में इतना भेद है, जितना सोने और पीतल में अथवा हीरे और काँच में। इसी सत्यज्योतिष के सीखने के लिये अंग्रेज लोग मनुष्यगणना करते हैं, इतिहास इसकी जड है।

जो मनुष्य बहुत दौडता है, वह थकजाता है और विश्राम करता है। पुराने समय में हिन्दुओं ने इतनी उन्नति की, इतनी दौड धाप की कि थक के परास्त होगये यही परास्त होना क्षीणता है। मेकार्थी साहिब ने अपने इतिहास में यह सिद्ध किया है कि बडे २ लोग सिकन्दर, नैपोलियन, न्यलसन, वाशिङ्गटन, लार्डक्लाइव, इत्यादि अपनी बडाई का कोई वारिस नहीं छोडगये। कहावत चली जाती है कि बडे बापके लडके बडे पाप से होते हैं। जो थक के परास्त होजाता है उसकी सन्तान बहुधा क्षीण होती है। इसी क्षीणता से ६ ठी, ७ वीं, ८ वीं सदी में ऐसे भ्रम हुवे और उसी क्षीणता का फल हम लोग अबतक भोगते हैं। अपनी शक्ति अनुसार दौड़ते तो इतना बुरा फल न होता। जितनी क्षीणता अधिक दौडने से होती है. उतनी ही आलस्य से होती है। अब बहुत विश्राम होचुका है. हमें अब फिर काम करना चाहिये। मनुष्य आलस्यसे गलजाता है।

यहांतक तो हमने यवनज्योतिष का वर्णन किया और उसे झूठा सिद्ध किया। सत्य ज्योतिषका वर्णन चौथेभाग में होगा। इस समय मुझे लिखने का अव-

काश नहीं है । जब इस पुस्तक की दूसरी आवृत्ति छपेगी उस समय तक लिखूंगा ।

यवनज्योतिष घोर नास्तिकता का मूल है, उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर को पूजना छोडकर मंगल और राहुकी पूजा करने लगे । ईश्वर को छोड दिया और ईश्वर ने हमैं छोड दिया । अंग्रेज लोग नित्य प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर ! आजकी रोटी हमैं दे, उन्हैं ईश्वर के दर्बार से रोटी भी मिलती है और मक्खन भी मिलता है । हिन्दुस्तान के लोग निर्वाणकी इच्छा करतेहैं, सो हैजा, अकाल और महामारी से पूरा २ निर्वाण हो रहा है । ग्रहों को छोड कर उस साक्षात् भगवान् के हाथ जोडो तो तुम्हारा भी कल्याण हो ॥

ओम् श्रीकृष्णार्पणमस्तु शुभम् ।

क्रोड़पत्र ।

पहिला अध्याय ।

सिद्धि श्रीसदुपमेय श्रीमान्पंडितवर महामहोपाध्याय सुधाकर दुबे महाराज ! जनार्दन जोशी का नमस्कार, कृपादृष्टि रहै, मैंने पांच वर्ष से ज्योतिष के अनेक ग्रंथ जातक ताजक आदि पढे, पर मेरा तो अनुमान यह है कि ज्योतिष गणित ही है, फलित केवल अनुमान है । कहीं ठीक भी लगजाय कहीं न लगै । जैसे-

(१)-शनिक्षेत्रे यदा भानुः, भानुक्षेत्रे यदा शनिः। सद्य एव भवेन्मृत्युः,शंकरो यदि रक्षति ॥ ऐसे दो महीने माघ और फागुन में होने चाहिये जब कि पृथ्वी के सब बालक इन महीनों में जन्म लेते ही मरजांय, इन महीनों

में जन्मे हुवे बालक २० । २० वर्ष के मैंने कितने ही देखे हैं, सब जीवित हैं, यह श्लोक केवल एक मरे हुवे बालक की कुण्डली देखकर अनुमान करलियागया है।

(२) मेरेपास कई रांड स्त्रियोंकी कुण्डली हैं। क्या आप यह बतलादेने की प्रतिज्ञा करते हैं कि रांडोंकी कुंडली कौन हैं और सुहागिन स्त्रियों की कौन हैं, मैं ५० कुंडली दोनों प्रकार की मिलाकर भेजूं॥

(३) मनुष्य की आयु,विद्या,धन इत्यादि गर्भहीसे नियत होगये हैं। कभी टल नहीं सक्ते, तो षृष्ठे चंद्र भवेन्मृत्युः क्यों कहा है। क्या आयु घट सक्ती है ?

(४) नाडीबेध में बिबाह करने से आयु कैसे घट सक्ती है ? मेरी समझ में तो फलित केवल १। २ बातों को देखकर अनुमान किया गया है। कहीं ठीक होगा कहीं न होगा। यदि आपने भी यही अनुभव किया है तो आगे अपना समय मैं नहीं व्यर्थ खोता। नहीं तो मैं तहां आकर फिर फलित पढता हूं। परोपकाराय सतां विभूतयः,मुझको आपकी दया से इतना फल अवश्य मिलना चाहिये कि मेरी शंका दूर होजांय।यदि आप फलितको सच्चासिद्ध करनेकी प्रतिज्ञा करेंतो मैं आप की सेवा में उपस्थित होऊं और फिर दो चार वर्ष परिश्रम करूं। और यदि आप फलित को केवल अनुमान समझें, जैसा मैंने समझा है, तो अब परिश्रम करना वृथा है। इससे कोई फल नहीं है। नाडीबेध इत्यादि से कन्या का विवाह रोकना अच्छा नहीं है, आज कल बर नहीं मिलते॥

मेरा भ्रम मिटाने से आपको बडा भारी पुण्य होगा।

मैं पांच बर्ष से इसी दुबिधा में हूं। आशा है कि आप से महात्मा मेरा मानसिक कष्ट दूर करेंगे और मुझे बाधित करेंगे, इसका उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा। और भी शंका फलित में हैं पर इतनी ही बहुत हैं।

आपका कृपाकांक्षी

हाल अल्मोड़ा १७ मई १९०६। } जनार्दन जोशी डिपटी कलक्टर नैनीताल.

उत्तर ।

अनेक शुभाशिषः मेरा विश्वास फलित ज्योतिष में नहीं है। मैं इसे एक प्रकारका खेल समझता हूं। जैसे कि विश्वगुणादर्श में लिखा है कि ज्योतिषी लोग अपने बाग्जाल से लोगों का धन व्यर्थ लूटा करते हैं * *

वनारस २२ मई १९०६ } सुधाकर दुबे

दूसरा अध्याय ।

जब मेरी अंग्रेजी की पुस्तक छप चुकी थी तो मैं एक वडे ज्योतिषी जी को उसका अर्थ सुना रहा था: वे सुन कर बोले कि आपने बहुत अच्छा किया जो फलित को झूठा सिद्ध किया अब आगे को मकान कम जला करेंगे। मैं भी फलितको झूठा ही समझता हूं एक प्रकार का ठगपना है और अब मैं इसे छोड़ दूंगा मैंने पूछा कि मकान क्यों कम जला करेंगे। वे बोले कि यहां ज्योतिषियों से जब बंध्या स्त्री पूछती हैं कि महाराज लड़का कैसे पैदा हो तो वे कहते हैं :-

जलै मोख। खुलै कोख॥

किसी के घर आग देदो तो लड़का होगा। बांझ स्त्री

इसप्रकार कई घरों में रात के समय आग देदेती हैं ॥ पंजाब में एक स्त्री ने ज्योतिषीजी के कहने से किसी का पहिलौटा लड़का मरवाया और उसके लोहू से आप स्नान किया। ज्योतिषी ने कहा था कि ऐसा करने से तेरे लड़का होगा और बच जायगा। यह कथा सब समाचार पत्रों में छपी थी और हाईकोट तक मुकदमा गया था ॥

ज्योतिषी लोग ऐसा उग्र उपाय क्यों बतलाते हैं ? यदि वे दो चार पैसे मंगल के नाम से दान करादेते और लड़का न होता तो वे झूठे सिद्ध होते। उन्होंने ऐसा उग्र उपाय बतलादिया जिसका करना महा कठिन हो और जिस के करने से मनुष्य मात्र कांपजाय और कभी न करै और ज्योतिषीजी झूठे सिद्ध न हों। वे क्या जानते हैं कि दो एक नरपशु ऐसे घोर अकरणीय काम को भी कर ही डालते हैं ॥ अब ज्योतिषियों को उचित है कि कहैं पारसपत्थर सिरहाने रखने से लड़का होगा, अथवा बैल का दूध पीने को बतलादें, इस से वे पाप से तो बचेंगे ॥

सूचना.

धन्य वे मनुष्य हैं जिन्हैं अपनी शक्ति का विश्वास और अपने ऊपर भरोसा है। स्वतंत्र वेही मनुष्य हैं. प्रसन्न वे ही हैं और उन्हीं के काम सिद्ध होते हैं, रामायण में लिखा है कि हनुमान्जी को जब सीता का पता न मिला और समुद्र के पार होना असम्भव जानपड़ा तो स्त्रियों की तरह रोने और सिर पटकने लगे। पर जब उन्हैं उनकी शक्ति का बिश्वास दिलाया गया तो कैसी वीरता उन्होंने दिखलाई समुद्र को लांघगये।

जिन मनुष्यों ने इस पुस्तक को ध्यान देकर पढा है और स्वामी रामानन्द् लक्ष्मीदास एन्ड को (And Co.) को अपना बैरी न समझा, : अथवा जिन के मन में १८ वर्ष की नई जवानी की उमंग उत्साह और उम्मेद् की तरंग न लहराई हो, जो यह न समझगये हों कि मनुष्य की शक्तिकी सीमा नहींहै हम चाहैं तो जापानियों से भी बढसक्ते हैं। जिन्हैं यह विश्वास न होगया हो कि ईश्वर नें मनुष्यमात्र एकही से रचे हैं। उसी बांसकी बांसरी, उसी बांसका लट्ठ। यह सब भेद् वा भिन्नता मनुष्यों ही की आलस्य और मूर्खताका फल है। जिन मनुष्यों के मन में उद्योगकी उमंग नहीं आई और पौरुष दिखाने को उनका लोहू न गरम होने लगा हो और बिजली का सा प्रभाव उन्हैं नहीं जानपड़ा और अपने ऊपर भरोसा न हुवा वे कृपा करके इस पुस्तक को फेरदैं, हम उनके हाथों के लिये सुन्दर हरी हरी बिल्लौर की चूड़ियां और मेहँदी, और आंखों के लिये काजल की डिबिया भेंजगे। जो यवन-ज्योतिष को सच्चा सिद्ध करै वह हमारे सामने आवै, हम प्रतिज्ञा करते हैं कि उसे दसहजार रुपया इनाम देंगे और पचासहजार रुपये श्रीमान् महाराजा बड़ौदा से दिलायेंगे॥

इस पुस्तक को कौमी नामर्दी और काहिली का इलाज कहना चाहिये।

सूचना नं० २

मुझे दौरे में रहने के कारण बहुतेरे प्रूफ देखने को नहीं मिले इसलिये कहीं२ अशुद्धता रहगई है। दूसरी आवृत्ति में ठीक होजायगी॥

